www.terapanthinfo.com

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 11 ■ 1-15 अप्रैल, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली--110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

इस अंक में

◆ अणुव्रत समाधान का पथ	*आचार्य तुलसी*	3
◆ अचौर्य है समस्या का समाधान	*आचार्य महाप्रज्ञ*	5
◆ गहरी बुनियाद चरित्र की	*देवेन्द्र कुमार 'हिरण'*	8
◆ संवेदनशील सुशासन	*सत्यनारायण सिंह*	9
◆ एक उपचार पद्धति भी है लेखन	*सीताराम गुप्ता*	11
◆ स्वस्थ जीवन और शाकाहार संतुलन	*मुनि किशनलाल*	13
◆ घरेलू हिंसा कानून	*नरेन्द्र देवांगन*	16
◆ लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास	*सुषमा जैन*	18
◆ पूर्वोत्तर भारत की यात्रा	*डॉ. महेन्द्र कर्णावट*	20
◆ अपरिग्रहः परमो धर्मः	*कुसुम जैन*	22
◆ दाल रोटी से विमुख राजनीति	*जसविंदर शर्मा*	23
◆ गर्व से कहो हम ढोंगी हैं	*स्वामी वाहिद काज़मी*	25
◆ मासूम बचपन को बचायें	*मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा*	27
◆ शोषक व्यवस्थाएं	*रजनीकांत शुक्ल*	28
◆ बापू की अनोखी शर्त	*डॉ. शुभंकर बनर्जी*	29
◆ एक अकेला दो से ग्यारह	*सत्यनारायण भटनागर*	30

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	7
◆ प्रेरणा	10
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	12
◆ कविता	24, 26
◆ पाठकों के स्वर	31
◆ अणुव्रत आंदोलन	32-40

अर्थ की चमक घटे, मनुष्य का मूल्य बढ़े

परिवार-समाज की इकाई है व्यक्ति। **अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथन *''व्यक्ति को बदले बिना समाज को नहीं बदला जा सकता और समाज की व्यवस्था को बदले बिना भ्रष्टाचार कम नहीं किया जा सकता''*** समाज विकास का आधार बिन्दु है। वर्तमान में जिन सामाजिक व्यवस्थाओं को खाद और पानी दिया जा रहा है उससे समाज में कदाचार बढ़ रहा है और व्यक्ति टूट रहा है।

बड़ा आदमी बनने की लालसा, फिजूलखर्ची, सुख-सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत करने की वृत्ति, दहेजप्रथा, महँगे शिक्षण संस्थानों में संतान को पढ़ाने की इच्छा जैसी बेमानी सामाजिक व्यवस्थाओं के चक्रव्यूह में उलझ कर आज व्यक्ति धन का गुलाम बन गया है। अमरबेल की तरह बढ़ते काले धन ने स्वस्थ सामाजिक मर्यादाओं पर प्रहार कर आडम्बर एवं प्रदर्शन को बढ़ाया है तो व्यक्ति को असंयमित भोग की तरफ भी प्रवृत्त किया है। बढ़ती भोग एवं व्यक्तिवादी प्रवृत्ति से परिवार टूट रहे हैं। परिणामस्वरूप पिता-पुत्र, भाई-भाई, भाई-बहिन, पति-पत्नी सभी के रिश्तों में खटास आई है। धन के नशे में भोग की मर्यादाएं भी टूट गईं और स्वच्छंदता की बाढ़ सी आ गई है। अर्थ को आधार मान व्यक्ति मनमाना व्यवहार कर रहा है परिजनों एवं समाज के साथ। बढ़ते काले धन ने सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओं को आडम्बर का जामा पहनाकर धर्म को केवल पैसों वालों के धर्म से विभूषित कर दिया है। जिस तरह से आज धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों पर फिजूलखर्ची हो रही है उसे देख आम आदमी दिग्भ्रमित हो रहा है। बड़ा बनने और बड़ा कहलाने के नाम पर खुले हाथों से सब कुछ हो रहा है और यही वह बिन्दु है जहाँ मानवीय रिश्ते बौने साबित हो रहे हैं ?

अर्थ का नशा हम पर इस कदर छाया है कि उसके सहारे व्यक्तियों को खरीद, दलबंदी के द्वारा सामाजिक व्यवस्थाओं को नकार कर हम प्रदर्शन और आडम्बर का नंगा नाच खेल रहे हैं। वैवाहिक अवसरों पर लेनदेन एवं दहेज की बढ़ती मात्रा, महँगे होटल का उपयोग और हजारों रुपयों की लागत की खाने की थाली का बढ़ता प्रचलन समाज में झूठे मानदंड और झूठी मान्यताओं को प्रतिष्ठापित कर रहे हैं। इन झूठे मानदंडों के बोझ तले समाज दबा है, अर्थ हावी हुआ है और मनुष्य-मनुष्य के बीच असमानता का ग्राफ तेजी से ऊपर उठा है। **अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के शब्दों में *''मनुष्य-मनुष्य में समानता की अनुभूति तीव्र नहीं होगी, तब तक धन के सामने मनुष्य का मूल्य बढ़ेगा नहीं। धनी लोगों को इसका अनुभव ही नहीं कि मनुष्य का कोई मूल्य है। धनी होकर जो कोई निर्धन हो जाता है, उसे इसका अनुभव होता है कि वास्तव में मनुष्य का कोई मूल्य है।''***

अर्थ की चमक घटे और मनुष्य का मूल्य बढ़े इस दिशा में तथाकथित अर्थसम्पन्न बड़े लोगों एवं सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारियों को साहस के साथ आगे बढ़ स्वस्थ सामाजिक मर्यादाओं का निर्धारण कर उनकी परिपालना में स्वयं को दृढ़इच्छा शक्ति के सहारे समर्पित करना होगा तभी स्वस्थ समाज संरचना का सपना आकार ले पायेगा। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित *'नया मोड़ आचार संहिता'* ने 1960 में समाज को नई दिशा दी, जिसके सकारात्मक परिणाम आज हम देख रहे हैं। आज पुनः आवश्यकता इस बात की है कि नया मोड़ आचार संहिता को युगानुकूल परिवर्तन के साथ प्रभावी बना समाज परिवर्तन के क्रम को हम सभी मिलकर गति दें। इस दिशा में 15 मार्च को श्रीडूंगरगढ़ में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण द्वारा प्रदत्त उद्‌बोधन को गुरू आज्ञा मान, बड़े आदमी दैनिक जीवन में संयम को स्थान देकर सामाजिक आचार संहिता की सर्वोच्चता को स्वीकारें यह अपेक्षित है।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

अणुव्रत समाधान का पथ

आचार्य तुलसी

> **मनुष्य जानता है कि हिंसा, असत्य, चौर्य आदि के कारण संसार दुःखी है। इस जानकारी के बाद भी वह उनसे विरक्त नहीं होता। लगता है वह इनको दुःख के निमित्त नहीं मान रहा है। कभी वह प्रशासन को दोषी ठहराता है, कभी बाजार की नीतियों पर दोषारोपण करता है और कभी अपने आसपास के परिवेश को बुरा बताता है। मूल को भूल कर निमित्तों को पकड़ने की इस मनोवृत्ति ने मनुष्य को मूढ़ बनाया है। जब तक मूढ़ता नहीं छूटेगी, दुःखों का अंत नहीं हो पायेगा।**

मनुष्य के सामने समस्याएं क्या हैं? रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा ये मनुष्य की न्यूनतम आवश्यकताएं हैं। इनकी पूर्ति के लिए अर्थ की अपेक्षा रहती है। अर्थ की उपलब्धि के दो स्रोत मुख्य हैं नौकरी और व्यवसाय सब लोग व्यवसायी बन सकते हैं। नौकरी सहज रूप से सुलभ नहीं होती। ऐसी स्थिति में मनुष्य क्या करे? उसे दिन-रात चिंता सताती है। चिंता उसका स्वास्थ्य चौपट कर देती है। अस्वास्थ्य और अभाव अहम समस्या बनकर खड़े हो जाते हैं। यह समस्या बहुत लोगों के सामने है। पर आज इससे भी बड़ी समस्या है आतंकवाद की। यह एक ऐसी समस्या है जो आगे उलझती जा रही है। इसे सुलझाने के सारे प्रयास असफल हो रहे हैं। कुछ लोगों की यह धारणा बन गयी है कि यह समस्या मनुष्य जाति की जिंदगी का अपरिहार्य हिस्सा बन गयी है। इसे सुलझाना संभव नहीं है।

हमारा अभिमत यह है कि संसार में कोई भी समस्या ऐसी नहीं हो सकती, जिसका कोई समाधान न हो। शर्त एक ही है कि समस्या से जुड़े हुए सभी पक्ष समाधान पाने के लिए तैयार हों। भारत में पंजाब, असम और कश्मीर में आतंकवाद ने अपने पग जमाये हैं, यह स्थूल दृष्टिकोण है। शायद ही ऐसा कोई प्रांत हो, जहाँ आतंकवाद की घुसपैठ न हो। आतंकवादियों के मंसूबे क्या हैं, मांगें क्या हैं? उन्हें स्वीकार किया जा सकता है या नहीं? ये प्रश्न राजनीति के रंग में रंगे हुए हैं। हमारी चिंता राजनैतिक दृष्टि से नहीं, मानवीय दृष्टिकोण से प्रेरित हैं। हमारी दृष्टि में इस समस्या का समाधान है अहिंसा। अहिंसा महाव्रत ही नहीं, अहिंसा अणुव्रत भी इसे सुलझा सकता है। काश! मनुष्य अहिंसा अणुव्रत को समझे और उसे जीवन व्यवहार के साथ जोड़े।

अविश्वास भी एक समस्या

दूसरी समस्या है अविश्वास की। आपसी विश्वास धुंधलाते जा रहे हैं। भाई, भाई का विश्वास नहीं करता। पुत्र पिता का विश्वास नहीं करता। पति पत्नी का विश्वास नहीं करता। दायाँ हाथ बाएँ हाथ का विश्वास नहीं करता। बहुत बार ऐसा हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं का विश्वास नहीं करता। विश्वास के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। सत्य महाव्रत विश्वास की बुनियाद है। सब लोग महाव्रती नहीं बन सकते। सत्य-अणुव्रत का कवच पहन लिया जाए तो अविश्वास के तीरों से सुरक्षा हो सकती है।

धोखाधड़ी मिटाने का उपाय

तीसरी समस्या है धोखाधड़ी की। मनुष्य को चिंता सताती रहती है कि वह ठगा जाएगा। संबंधों में धोखे का भय, व्यापार में धोखे का भय, बाजार में धोखे का भय, शादी-विवाह के प्रसंग में धोखे का भय। दवाई में मिलावट का भय, खाद्य-पदार्थों में मिलावट का भय, और तो और धर्मगुरुओं से भी धोखे का भय। चारों ओर धोखा ही धोखा। इसका समाधान है अचौर्य व्रत। प्रामाणिकता, ईमानदारी या कथनी-करनी की एकता का प्रतीक अचौर्य व्रत स्वीकृत हो जाए तो धोखाधड़ी का भय निर्मूल हो सकता है।

आबादी की समस्या

चौथी समस्या है आबादी की। परिवार-नियोजन का व्यापक प्रचार और गर्भ-निरोधक के कृत्रिम उपायों का प्रयोग। पर जनसंख्या नियंत्रित नहीं हो पायी है। एक ओर मुक्त सैक्स, दूसरी ओर भ्रूणहत्या, गर्भपात और जन्म के साथ ही अवांछित संतान की हत्या। किंतु आबादी द्रौपदी का चीर बनती जा रही है। जनसंख्या को नियंत्रित करने का अमोघ उपाय है ब्रह्मचर्य की साधना।

ब्रह्मचर्य महाव्रत का पालन सबके लिए शक्य नहीं हो सकता। पर अणुव्रत का लक्ष्य न हो तो समस्या का समाधान कैसे होगा? निरंतर अब्रह्मचर्य से निरंतर शक्ति का क्षय होता है। शक्तिहीन लोगों की संतान स्वस्थ और दीर्घायु कैसे हो सकती है? ब्रह्मचर्य की अधिक से अधिक साधना कर दुर्बलता से बचा जा सकता है।

चिंताओं के चक्रव्यूह में

पाँचवीं समस्या है लालसा की, अर्थ जीवनयापन का साधन है। किंतु उसे ही साध्य मानने वाले व्यक्ति सोते-जागते 'धन' के सपने देखते हैं। वे अपनी आकांक्षाओं को असीमित विस्तार देते हैं। फिर उनकी पूर्ति के लिए उचित-अनुचित सब तरीके काम में लेते हैं। एक इच्छा की पूर्ति अनेक नयी इच्छाओं को जन्म दे जाती हैं। लाभ से लोभ बढ़ता है आगम का यह सच प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। आर्थिक भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति कब क्या कर लेता है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

यौगलिक युग की जीवन-शैली कितनी सीधी और सरल थी। न खाने-पीने की चिंता, न मकान की चिंता। न बाल-बच्चों की चिंता, न शादी-विवाह की चिंता, न लोभ-लालसा और न संग्रह की मनोवृत्ति। निश्चिंत जीवन और लम्बा आयुष्य। इसका एकमात्र कारण अपरिग्रह का सिद्धांत है। जो लोग पूर्ण रूप से अपरिग्रही न बन सकें, वे परिग्रह की सीमा करके चिंताओं के चक्रव्यूह से बाहर निकल सकते हैं।

मूढ़ता बढ़ाती है दुःखों की परंपरा

मनुष्य के पास दो दृष्टियाँ होती हैं संक्षेप दृष्टि और विस्तार दृष्टि। संक्षेप दृष्टि से देखा जाए तो संसार में ये पाँच ही बुराइयाँ हैं जो दुःखों का सृजन करती हैं। विस्तार में जाएं तो इनके अनेक रूप हो सकते हैं। कुछ अंतर समय का रहता है। संचार साधनों के विकास से आज विश्व इतना छोटा हो गया है कि उसके किसी एक कोने में घटित घटना की जानकारी सबको मिल जाती है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि किसी भी राष्ट्र के लोग हों, उनकी मौलिक मनोवृत्तियों में अधिक अंतर नहीं होता।

मनुष्य जानता है कि हिंसा, असत्य, चौर्य आदि के कारण संसार दुःखी है। इस जानकारी के बाद भी वह उनसे विरक्त नहीं होता। लगता है वह इनको दुःख के निमित्त नहीं मान रहा है। कभी वह प्रशासन को दोषी ठहराता है, कभी बाजार की नीतियों पर दोषारोपण करता है और कभी अपने आसपास के परिवेश को बुरा बताता है। मूल को भूल कर निमित्तों को पकड़ने की इस मनोवृत्ति ने मनुष्य को मूढ़ बनाया है। जब तक मूढ़ता नहीं छूटेगी, दुःखों का अंत नहीं हो पायेगा।

समाधान का राजपथ : अणुव्रत

जो लोग साधु जीवन स्वीकार करते हैं, उनके लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पाँच महाव्रत अनिवार्य हैं। साधु बनने वाली समस्या के मूल पर प्रहार करता है। इस स्थिति का अनुभव करना हो तो सात दिन का प्रयोग करके देखा जाए। सात दिनों में जो आनंद मिलेगा, वह जीवन भर के आनंद की साक्षी दे सकता है। साधु बनने के बाद भी कोई व्यक्ति अपनी वृत्तियों को नियंत्रित न कर पाये, उसके लिए आनंद की प्राप्ति मुश्किल है।

संसार में हर्ष और विषाद का युगल साथ-साथ रहता है। घर में किसी का जन्म होता है तो हर्ष बढ़ता है। मृत्यु विषाद का संदेश लेकर आती है। साधु बनने के बाद जन्म के प्रसंग में खुशी नहीं होती और मृत्यु के प्रसंग में विषाद नहीं होता। इसी प्रकार जितनी अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियाँ हैं, उनमें संतुलन नहीं टूटता। यह त्याग का प्रभाव है, व्रतों का प्रभाव है। जब तक देश में साधु रहेंगे, वे त्याग की भावना को अस्त नहीं होने देंगे। देशवासियों का यह दायित्व है कि वे साधुओं के त्यागमय जीवन से प्रेरणा लेकर महाव्रत नहीं तो अणुव्रत अवश्य स्वीकार करें। इससे वे स्वयं आनंद का अनुभव करेंगे और देश की समस्याओं के समाधान में सक्रिय भूमिका निभा पायेंगे।

शिष्टाचार बन रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाइये

अणुव्रत आंदोलन

अचौर्य है समस्या का समाधान

आचार्य महाप्रज्ञ

हिन्दुस्तान में भक्ति योग प्रचलित है, भक्त लोग बहुत हैं। धर्म भी खूब चलता है, धार्मिक लोग भी खूब हैं। जहाँ भक्ति है, धार्मिकता है, वहाँ बहुत बढ़िया समाज होना चाहिए। स्वस्थ समाज होना चाहिए, पर आश्चर्य यह है कि भक्ति और धार्मिकता के होने पर भी समाज अच्छा नहीं है, समाज स्वस्थ नहीं है। प्रतिदिन भ्रष्टाचार और घोटालों से समाचार पत्र भरे रहते हैं और करने वाले भी बड़े-बड़े लोग जो ख्यातनामा बड़े-बड़े पदों पर बैठे हैं वो करते हैं तब फिर सोचना पड़ता है कि भक्ति और धर्म की निष्पत्ति क्या आ रही है? अहिंसा का विकास नहीं है, जो भक्ति के साथ होना चाहिए। नैतिकता का विकास नहीं है, जो स्वस्थ समाज के लिए जरूरी है।

हम अहिंसा और नैतिकता को दो रूपों में समझने का प्रयत्न करें। असत्य भाषण और चोरी ये दोनों हिंसा के प्रकट रूप हैं। झूठ बोलना और चोरी करना ये दोनों ही हिंसा है और ये दोनों अनैतिकता से जुड़े हुए हैं। जहाँ असत्य भाषण है वहाँ नैतिकता नहीं रह सकती, ईमानदारी नहीं रह सकती। जहां चोरी है वहाँ भी नैतिकता नहीं रह सकती। नैतिक मूल्यों का विकास तब हो सकता है जब सत्य के प्रति निष्ठा हो और अचौर्य के प्रति निष्ठा हो। दूसरे के अधिकार की वस्तु लेने का संकल्प न हो। इस वस्तु पर मेरा अधिकार नहीं है, दूसरे का अधिकार है। दूसरे का अधिकार मुझे नहीं लेना है, यह अहिंसा नैतिकता है, अचौर्य है। इस चेतना के जागने पर अहिंसा का विकास हो सकता है, समाज स्वस्थ रह सकता है, अच्छा हो सकता है अन्यथा बड़ा कठिन काम है।

हिन्दुस्तान में व्यापार में भी बहुत झूठ बोला जाता है। वस्तु दो रुपये की है और ग्राहक भाव पूछता है, तब दो रुपये की चीज दो सौ तक चली जाती है। झूठ बोलने की आदत हो गई, अन्यथा इतनी प्रामाणिकता होनी चाहिए कि जितना भाव हो उतना प्रथम बार में ही बता दिया जाए। भावों का उतार-चढ़ाव बहुत अधिक होता है। उसकी कोई सीमा नहीं होती। वस्तु का एक भाव निश्चित होने पर न अधिक करेंगे, न कम करेंगे। पाश्चात्य देशों में एक भाव रहता है। वहाँ भावों की तुलाई-मुलाई की आवश्यकता नहीं होती, वस्तु पर जो कीमत लिखा हुआ है, वही लेना-देना पड़ता है।

हम लोग सुनते हैं कि विदेशों में आज भी प्रामाणिकता है। बड़ा हाउस है, जनरल स्टोर हैं, सभी वस्तुएं हैं। एक आदमी काउंटर पर बैठा है। ग्राहक भीतर जाता है अपने आप वस्तु उठाता है। अपने आप मूल्य रख देता है, वापस चला जाता है। ग्राहक को यह नहीं बताना होता कि मैंने अमुक वस्तु खरीदी है और न दुकानदार पूछता कि तुमने दाम दिए या नहीं दिये। फिर भी कोई गड़बड़ी नहीं होती, इसका नाम है प्रामाणिकता, नैतिकता और सचाई। भारत की स्थिति भिन्न है। अगर ऐसा यहाँ हो जाए तो दूसरे दिन स्टोर खाली मिलेगा। व्यवस्थाओं में बड़ा अंतर है। हम चिंतन करें कि धर्म को हम किस रूप में स्वीकार कर रहे हैं। जहाँ प्रामाणिकता नहीं, नैतिकता नहीं, ईमानदारी नहीं, वहाँ अहिंसा नहीं हो सकती और व्यवहार भी अच्छा नहीं चल सकता।

एक भारतीय विदेश में किसी के घर पर ठहरा हुआ था। वह व्यक्ति दूध की सप्लाई करता था। एक दिन उसकी लड़की बहुत उदास हो गई। भारतीय ने पूछ लिया बहन आज इतनी उदास क्यों हो?

विदेशी महिला ने कहा आज मेरी गायों ने बीस किलो दूध कम दिया है।

भारतीय इसमें कौन-सी समस्या है, सैकड़ों-सैकड़ों किलो दूध बाहर जा रहा है। बीस किलो कम है तो बीस किलो पानी मिला दो तो पूरा हो जाएगा।

विदेशी महिला कमरे में गई और अपने पिता को कहा दूध में पानी मिला दो। उसका पिता गुस्से में आ गया और कहा 'बुरी सलाह देने वाले को घर से निकाल दो।'

अब तुलना करें क्या स्थिति है। दूध में पानी मिलाना तो खास बात ही नहीं है। दूध में पानी मिलाना तो मिलता मेल है। किन्तु आजकल दूध में रासायनिक वस्तुएं मिलाई जाती हैं और खेत में काम आने वाली यूरिया तक भी मिला दी जाती है, फिर वही दूध आदमी को पिलाया जाता है। यह बड़े शहरों में खूब धड़ल्ले से चलता है। हम कल्पना करें कि प्रामाणिकता के बिना, नैतिकता के बिना ईमानदारी के बिना धर्म कैसे चल सकता है, अहिंसा कैसे चल सकती है। आचार्य ने लिखा 'वह आदमी सच्चा है जो किसी की अदत्त वस्तु नहीं लेता। 'परजनमनः पीड़ा' दूसरे की वस्तु को लेने से पीड़ा पहुँचती है। जहाँ झूठा माप-तौल होता है क्या वह अदत्त नहीं है, चोरी नहीं है? वह हिंसा भी नहीं है, चोरी भी है और झूठ भी है। वह झूठा तोल-माप करता है, कोई भोला आदमी आ जाता है फिर उसके सामने गणना

भी बदल जाती है, तराजू भी बदल जाता है। यह दूसरे के मन को पीड़ा पहुँचाने वाली बात है। किसी का प्राण लिया जाए तो कष्ट होता है पर किसी की वस्तु चोरी की जाए, धन लिया जाए तो प्राण से भी ज्यादा कष्ट होता है।

डाकू आए और बोले सेठजी! तिजोरी की सारी चाबियां रख दो, धन रख दो या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ।

वृद्ध बोला मैंने धन तो बुढ़ापे के लिए इकट्ठा किया है, मारना है तो भले ही मार दो।

इतना मोह होता है धन के साथ। इस स्थिति में कोई व्यक्ति अपने अदत्त वस्तु लेता है, बिना दी हुई वस्तु लेता है तो क्या वह चोरी नहीं है? वह भी चोरी है, झूठ तोल-माप करना भी चोरी है, झूठा वादा करना भी चोरी है और झूठा आश्वासन दिए जाते हैं वह भी एक तरह से चोरी है।

कोई व्यक्ति चुनाव लड़ रहा था। उसने कहा मुझे जिता दो, तुम्हारे गांव में पानी आ जाएगा, आश्वासन दे दिया। लोगों ने वोट दिया और जीत गया। फिर दूसरे चुनाव का मौका आया। फिर बोला मुझे वोट दो पानी आ जाएगा। लोगों ने कहा पहले भी पानी नहीं आया? उसने कहा पांच वर्षों में नल लगे हैं, अगले पांच वर्षों में पानी आ जाएगा। यह झूठा आश्वासन देना भी चोरी है, ठगाई भी चोरी है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर सत्यनिष्ठा हो कि वह झूठ नहीं बोलेगा और किसी के हक की वस्तु नहीं लेगा। हक है किसी दूसरे का और वह स्वयं लेता है तो वह भी चोरी है, हिंसा है, अपना अधिकार नहीं है। जो मेरा अपना है, जिस पर मेरा अधिकार है, उतना लेना तो ठीक है, दूसरे के हिस्से का लेना ठीक नहीं है। दो व्यक्ति थे। दोनों के लिए एक किलो दूध लाया गया। उसे अकेला व्यक्ति ही पी जाए, तो यह भी चोरी है, अदत्त है।

नौकर विश्वासी था, पर चोरी की वृत्ति थी। एक दिन मालिक घर से बाहर गया और बोला-तीन किलो दूध आया हुआ है, ध्यान रखना बिल्ली, कुत्ता न आ जाए। घर में बिल्ली पाली हुई थी। मालिक ने दो घंटे बाद आकर देखा पात्र खाली है, दूध ही नहीं। आते ही पूछा-दूध कहाँ गया? बोला-सर! बिल्ली पी गई। तीन किलो दूध बिल्ली पी गई। मालिक ने कहा-तराजू लाओ, बिल्ली को तोलो, बिल्ली का सारा वजन ही तीन किलो था। यह है असत्य भाषण। स्वयं पी गया और आरोप कर दिया बिल्ली पर। गलती स्वयं करता है, आरोप दूसरे पर लगा देता है। यह दूसरे के मन को पीड़ा पहुँचाने वाली बात है। हिंसा का मतलब है दूसरे के मन को पीड़ा देना। दूसरे को पीड़ा झूठ बोलकर दी जाती है, वह भी हिंसा है। दूसरे की वस्तु का हरण करके मन को पीड़ा देना भी हिंसा है।

हम फिर से विचार करें कि हमारा धर्म कैसा होना चाहिए? धर्म का मूल आधार है सत्यनिष्ठा। महावीर की वाणी है 'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि' हे पुरुष! तुम सत्य को जानो। सत्यनिष्ठा पैदा हो जाए, ईमानदारी आ जाए तो हिन्दुस्तान का कायाकल्प भी हो सकता है प्रामाणिक व्यवहार से राष्ट्र की समस्याएं गरीबी, बेरोजगारी आदि का समाधान हो सकता है।

एक राजा ने अपने मंत्री से कहा मंत्री राजस्व कम आ रहा है, उपाय करो।

मंत्री महाराज! इसका उत्तर आज नहीं, एक सप्ताह बाद दूंगा।

कुछ दिनों बाद मंत्री आया और बोला-महाराज! आज मैं आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा हूँ। राज्यसभा के सब सदस्यों को एक पंक्ति में बिठा दिया। मंत्री बोला महाराज! आप देखें, जो अंतिम पंक्ति में व्यक्ति बैठा है, उसे एक किलो बर्फ दी जा रही है। बर्फ आपके पास आएगी, किन्तु सीधी नहीं आएगी, पहला व्यक्ति लाकर नहीं देगा। वह अपने पास वाले को देगा फिर दूसरा तीसरे को देगा, तीसरा चौथे को देगा, ऐसे सैकड़ों व्यक्तियों के हाथ से होते-होते वह एक किलो बर्फ आपके पास आएगी।

मंत्री के कथन के अनुसार व्यवस्था हो गई। बर्फ आ गई और काम शुरू हुआ। राजा तक पहुँचते-पहुँचते एक किलो बर्फ का छोटा सा टुकड़ा रह गया।

राजा मंत्री! तुम कह रहे थे। एक किलो बर्फ है और यह तो छोटा सा टुकड़ा है।

मंत्री महाराज! यह कितने हाथों से गुजर कर आपके पास आई है, पिघलते-पिघलते दो-चार तोला रह गई।

मंत्री आपके राजस्व का हाल भी यही है। आप कहते हैं राजस्व कम आ रहा है। इसका

साधना वही व्यक्ति कर सकता है जिसका मन निर्मल होता है। मन जब निर्मल होता है कोई भी बुराई नहीं आती। आप जानते हैं, पानी है, पानी में गंदगी डालो, उस पर गंदगी डालो, छूएगी और नीचे चली जाएगी, क्योंकि वह जम गया। हम मन को भी ऐसा जमाएं कि मन एक प्रकार की शिला बन जाए।

कारण है कि पहली पंक्ति में, जो अंतिम व्यक्ति बैठा है, वहाँ से राजस्व शुरू होता है। इतने हाथों से आते-आते एक किलो बर्फ दो-चार तोला रह जाती है वैसे ही राजस्व भी बहुत कम रह जाता है।

यह सारा अनैतिक व्यवहार का उदाहरण है। धार्मिक आदमी को भी चिंतन करना है, भक्त लोगों को भी चिंतन करना है, अपरिग्रह में रहने वालों को चिंतन करना है कि क्या हमारा व्यवहार धर्म के अनुकूल हो रहा है? क्या हमारा व्यवहार अहिंसा के अनुकुल हो रहा है। क्या हमारा व्यवहार सचाई के अनुकूल है।

हमें चिन्तन करना चाहिए कि जब तक जीवन में सचाई, ईमानदारी, प्रामाणिकता और नैतिकता नहीं आएगी, तब तक धर्म भी आपसे डरता रहेगा। वो सोचेगा कि कहाँ जा रहा हूँ, कहीं मेरी दुर्दशा न हो जाए, वह पास में भी नहीं आएगा। धर्म को लाने के लिए मन को बहुत पवित्र बनाना होगा। किसी बड़े आदमी को आप निमंत्रित करते हैं, किसी मंत्री को घर पर बुलाते हैं और घर गंदगी से भरा हुआ है, आप बुला नहीं सकते। पहले घर की साफ-सफाई करते हैं, स्वच्छ करते हैं, और फिर किसी बड़े मेहमान को बुलाते हैं। धर्म तो बहुत बड़ा मेहमान है और मन एकदम मलिन है, उसमें आप धर्म को बिठाना चाहते हैं वह नहीं आएगा। आ जाएगा तो एक क्षण में चला जाएगा। स्थान की स्वच्छता एवं पवित्रता के अभाव में वह नहीं रहेगा।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा 'धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई' धर्म कहाँ ठहरता है? शुद्ध आत्मा में धर्म ठहरता है, अशुद्ध आत्मा में धर्म नहीं ठहरता। अगर धर्म करना है, धर्म को ठहराना है तो मन को निर्मल बनाओ, वह पानी से निर्मल नहीं होगा, साबुन-तेल से नहीं होगा। वह निर्मल होगा सत्य से, अचौर्य से और अहिंसा से। मैत्री की भावना के द्वारा मन को निर्मल किया जा सकता है। प्रामाणिकता और नैतिकता के द्वारा मन को निर्मल किया जा सकता है। जब मन निर्मल हो गया, हृदय निर्मल हो गया, पवित्र हो गया तो धर्म का अवतरण अपने आप हो जाएगा।

हमारे देश में बहुत बड़े-बड़े संत हुए हैं, उन्होंने गहरी साधना की है। साधना वही व्यक्ति कर सकता है जिसका मन निर्मल होता है। मन जब निर्मल होता है कोई भी बुराई नहीं आती। आप जानते हैं, पानी है, पानी में गंदगी डालो, उस पर गंदगी डालो, छूएगी और नीचे चली जाएगी, क्योंकि वह जम गया। हम मन को भी ऐसा जमाएं कि मन एक प्रकार की शिला बन जाए। उसके लिए आवश्यक है कि ध्यान का अभ्यास करें और मन को एकाग्र करने का अभ्यास भी करें जिससे हमारा मन तरल न रहे, वह बर्फ की शिला बन जाए और हर स्थिति में वह पवित्र रहे। ऐसा प्रयास वांछनीय है। मैं मानता हूँ कि ध्यान के द्वारा आप एक अपूर्व शांति का और आनंद का जीवन में अनुभव कर सकेंगे।

राष्ट्र चिन्तन

◆ देश की महान महिला नेत्रियों सरोजनी नायडू, ऐनी बेसेंट, विजय लक्ष्मी पंडित इत्यादि की आहुतियों को महिला आरक्षण विधेयक एक विनम्रः श्रद्धांजलि है।

डॉ. मनमोहन सिंह
प्रधानमंत्री

◆ महिला आरक्षण विधेयक को लेकर तानाशाही रवैया अपनाने वाली कांग्रेस नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार के लिए विनाशकारी कदम साबित होगा।

मुलायम सिंह यादव
सपा प्रमुख

◆ पूर्ण सर्वानुमति के अभाव में महिला आरक्षण विधेयक को पारित कराने के लिए आगे बढ़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं है।

वीरप्पा मोइली
कानून मंत्री

◆ कीमतों में बढ़ोतरी के कारण मैं जनमानस की वेदना को समझती हूं। रेलवे के संसाधनों की तंग स्थिति के बावजूद खाद्यान्नों और मिट्टी तेल की भाड़ा दरों में 100 रुपये प्रति माल डिब्बा कटौती का प्रस्ताव महंगाई पर चिंता जताने की एक छोटी-सी चेष्टा है।

ममता बनर्जी
रेल मंत्री

◆ पैट्रोलियम पदार्थों में मूल्यवृद्धि वापस लेने के बढ़ते दबाव के बीच केन्द्र सरकार ने सांसदों और घटक दलों का भरोसा जीतने की कोशिश की है। सरकार ने उत्पाद शुल्क में पूर्व में दी गयी छूट को आंशिक रूप से वापस लिया है। 8.5 फीसदी की विकास दर हासिल करने के लिए ऐसे फैसले लेना जरूरी है। पैट्रोलियम पदार्थों की कीमतें वापस लेने पर सरकार को 26 हजार करोड़ का नुकसान होगा।

प्रणव मुखर्जी
वित्त मंत्री

गहरी बुनियाद चरित्र की

देवेन्द्र कुमार 'हिरण'

भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने एक प्रसंग पर कहा हमें अपने देश का मकान बनाना है। तो उसकी बुनियाद गहरी होनी चाहिए। बुनियाद अगर रेत की होगी तो पानी आते ही रेत बह जायेगी और मकान भी ढह जायेगा। गहरी बुनियाद चरित्र की होती है।

व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान है उसका अपना जीवन। और उसकी सबसे बड़ी सम्पदा है उसका अपना चरित्र। चरित्र ही वह निधि है जो सब रिक्तताओं को भरकर व्यक्ति को परिपूर्ण बना देती है। चरित्र ही एक ऐसा तत्त्व है जो किसी भी धर्म, वर्ग, जाति आदि के लिए विवादास्पद नहीं है। व्यक्ति के मूल्यांकन की कसौटी, उसकी आकृति वेशभूषा नहीं वरन् चरित्र है।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने कहा किसी भी प्रवृत्ति, कार्यक्रम, संस्था, समाज अथवा राष्ट्र का संचालन करने वाला व्यक्ति होता है। उस व्यक्ति का चरित्र निर्माण न हो तो अच्छी से अच्छी व्यवस्था भी लड़खड़ा जाती है। व्यक्ति के चरित्र निर्माण का प्रयत्न बुनियादी सच्चाई है। अणुव्रत इस सच्चाई को सामने रखकर चल रहा है। अणुव्रत का मुख्य घोष है **"सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।"**

व्यक्ति-व्यक्ति के सुधार से समाज का सुधार संभव है। समाज सुधार की यात्रा राष्ट्र सुधार की दिशा में आगे बढ़ती है। समाज और राष्ट्र के निर्माण का सपना पूरी तरह व्यक्ति के निर्माण पर टिका हुआ है। व्यक्ति का चरित्र निर्माण अणुव्रत दर्शन का मूल आधार है।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा है। यहाँ व्यक्ति का अंकन उसके चरित्र के आधार पर ही किया जाता है। यहाँ कितने अच्छे-अच्छे व्यक्ति हुए, यह आगे बढ़कर बोलने वाले नहीं वरन् आचरण करने वाले हुए हैं। उनका जीवन आदर्श जीवन रहा है।

महामात्य चाणक्य का एक प्रसंग है। वे एक साधारण-सी झोपड़ीं में रहते थे। उन्होंने राहत कार्य की दृष्टि से घोषणा करवाई। दुष्काल से प्रभावित लोगों के पास गर्म कपड़े नहीं हैं। सामने सर्दी का मौसम है। उनको सर्दी से बचाना है। सब लोग अपने-अपने घरों से कम्बल लाकर देवें। घोषणा की देरी थी महामात्य के झोपड़े में कम्बलों का ढेर लग गया। चाणक्य अपने झोपड़े में बैठा था। सामने नई-नई कम्बलों का ढेर लगा हुआ था। चाणक्य ने एक फटा पुराना कम्बल ओढ रखा था। रात के समय वहाँ कोई चोर घुस आया। चाणक्य के झोपड़ें में नई-नई कम्बलों की बात सुनकर उसका मन ललचा गया। चोर झोपड़े में छुपकर खड़ा था व चाणक्य के सोने की प्रतिक्षा कर रहा था। उधर एक विदेशी व्यक्ति चाणक्य से मिलने के लिए आया। चाणक्य को फटे पुराने कम्बल में लिपटे देख उसने पूछा महामात्य। आपके सामने अच्छे-अच्छे कम्बलों का ढेर लगा है फिर आपने यह जीर्ण-शीर्ण कम्बल क्यों ओढ़ रखा है। चाणक्य बोला आप जिन कम्बलों की ओर संकेत कर रहे हैं वे सब जनता के हैं। जनता की चीज जनता के ही काम आयेगी। यह मेरे लिये नहीं है। विदेशी व्यक्ति यह बात सुन आश्चर्य में खो गया। यह राष्ट्रीय चरित्र का अनुपम उदाहरण है।

आज हमारे देश की ओर दृष्टिपात कर देखें तो लगेगा कि प्रत्येक घर, परिवार व समाज में चरित्र निष्ठा का अभाव है। व्यापार जगत अनैतिकता के सहारे फल-फूल रहा है। राजनीति, भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुयी है। न्याय लक्ष्मी के हाथ में बिक रहा है। प्रशासन से चरित्र एवं ईमानदारी की अपेक्षा करना बेमानी है। चरित्र के सभी खंभों को मिलावट, रिश्वत, हिंसा, झूठ, व्यसन, जातियता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रियता, अप्रामाणिकता एवं अनैतिक आचरण ने हिला दिया है। आज अपेक्षा है स्वस्थ चरित्र निर्माण की।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय राष्ट्र के लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान किया, सुख-सुविधाओं को त्यागा। परिवार का मोह विस्मृत किया। स्वार्थ व्यक्ति को ठोकर लगायी और एक लक्ष्य के साथ अपने आपको समर्पित किया। उसी का परिणाम आज यही है कि लोगों में पारस्परिक विश्वास घट रहा है। मैत्री क्षीण हो रही है। कलह, संघर्ष और उपद्रवों की बाढ़ सी है। सर्वत्र धोखा, विश्वासघात, छल-प्रपंच, झूठ आदि बुराइयों का घुन लगा हुआ है। बाड़ ही खेत को समाप्त करने में लगी है। चरित्र का सर्वत्र दुरभिक्ष है।

अपेक्षा है देश का नेतृ वर्ग चाणक्य के जीवन से प्रेरणा ले। उनका यह नैतिक दायित्व है कि वे अपने आदर्श चरित्र से देश को नई दिशा दें। जनता की चारित्रिकता बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि नेतृ वर्ग का चरित्र उज्जवल रहे। साथ ही देश, समाज व राष्ट्र के प्रति उनका क्या दायित्व व कर्त्तव्य है। देश के महापुरुषों के जीवन से सीखने का प्रयास करें। तभी पं. नेहरू की वह पंक्ति साकार रूप लेगी कि गहरी बुनियाद चरित्र की होती है।

संरक्षक : अणुव्रत समिति, गंगापुर

संवेदनशील सुशासन

सत्यनारायण सिंह

अब समय आ गया है, जब हम आंकलन करें कि हमारे विकास की दशा और दिशा क्या है? जो रास्ता हमने अपनाया और लक्ष्य निर्धारित किए वे कितने खरे व कितने खोटे हैं? तथाकथित जनप्रतिनिधि, नौकरशाह व वर्तमान शासन प्रशासन व्यवस्था जनता की इच्छाओं, आशाओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कार्य कर रहे हैं अथवा बेपरवाह होकर अपने तात्कालिक, निजी, राजनीतिक व दलीय लाभ हेतु संसाधन व्यर्थ व्यय कर रहे हैं? भारत के संविधान में सभी को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक न्याय का वचन दिया है। राजनीतिक न्याय के पश्चात अब आर्थिक व सामाजिक न्याय की यात्रा प्रारंभ करनी होगी।

आज भी निरक्षरता, भूख, सामाजिक भेदभाव और निर्धनता प्रमुख समस्याएं हैं। हमारी अर्थव्यवस्था की शानदार उपलब्धियों के बावजूद शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, रोजगार आदि पर विशेष जोर देना है। हमें संकीर्ण मनोवृत्ति को छोड़कर, कार्यशैली व खामियों को दूर कर सरकारी तंत्र को जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप बनाना है। 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के अवसर पर प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था "भारत की सेवा का अर्थ है, लाखों दुखी लोगों की सेवा करना। इसका अर्थ है निर्धनता, अज्ञानता, रोगों और अवसर की असमानता को दूर करना। हमारी महात्माकांक्षा प्रत्येक व्यक्ति की आंखों से आंसु पोछ रही है, यह हमारे सामर्थ्य से परे हो सकता है, परन्तु जब तक आंसू और कष्ट हैं हमारा काम खत्म नहीं होगा।"

सरकार का कार्य मात्र घोषणायें करना, सब्जबाग दिखाना, नगरीय सौंदर्यकरण के नाम पर फिजूलखर्ची करना, सांस्कृतिक धरोहर व विरासत के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई की राशि, बगैर संवेदनशील व जवाबदेही, नाली में पानी बहाने की नहीं है, और न ही यह छूट दी जा सकती है। प्राकृतिक संसाधनों का आराम के लिए अत्यधिक दोहन निंदनीय है। अब विकास के नाम पर विनाश की छूट नहीं दी जा सकती।

बढ़ती बेरोजगारी, कुपोषण, जमीनों से विस्थापन, विषमता, निरक्षता, बीमारी को भुलाकर, करोड़ों-अरबों का भ्रष्टाचार कर राजस्थान की गत भ्रष्ट सरकार ने जनता को खुशनुमा अहसास कराने का प्रयास किया। गरीब जनता का पैसा अपने ऐशो-आराम, शानो-शौकत, सुख-सुविधा और सौंदर्यकरण के नाम पर लूटा, खर्च किया। यह इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि हमारी सरकार जवाबदेह, संवेदनशील, कल्याणकारी नहीं है। हमारे जन प्रतिनिधियों ने निजी धार्मिक यात्राएं कीं और प्रचार यह किया कि प्रांत की जनता की खुशहाली की प्रार्थना की मन्नत मांगी। जबकि वास्तविकता यह है कि अपना राज्य बचाने व शानो-शौकत के लिए यात्राएं हुई और स्वयं की खुशहाली की कामना की। कभी प्रशासन को समतामूलक, जन सहभागी व कल्याणकारी नहीं बनाया। नई-नई योजनायें, कार्यक्रम स्वयं की शोभा बढ़ाने के लिए बनी। सरलता, सहजता व सादगी मिटा दी गयी। बढ़ती जनसंख्या का रोना तो बहुत रोया गया है परन्तु राजनीतिक कारणों से कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं की गयी है।

आज भी देश की 73 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। फिर भी वहाँ बुनियादी सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। बढ़ती महंगाई और गरीबी ने ऐसे हालात पैदा कर दिये हैं कि कुशल व अर्धकुशल गांव छोड़ने को मजबूर हैं। कृषि उत्पादों का लाभ उन्हें दोषपूर्ण विपणन प्रणाली के कारण नहीं मिल पाता। औसत पैदावार नहीं बढ़ी है। उत्पादन व्यय बढ़ा है। वह अपनी उपज का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकता। सरकारी नीतियाँ बिचौलियों व दलालों के हित में बन रही हैं। हम चाहें कितना ही कहें कि विश्वव्यवस्था में देश की धाक बढ़ी है परन्तु गरीब की आशंकायें और चिंतायें बढ़ती जाती हैं।

छोटे स्तर की तानाशाही, उसका नकारात्मक पहलू, अकुशलता, बहाने बनाने वाली व असंवेदनशीलता से हताशा व्याप्त हो रही है। कार्यपालिका, विधायिका, नौकरशाही और न्याय पालिका सभी हद दर्जे की गैर जिम्मेदारी, व्यक्तिगत आराम व स्वार्थ से कार्य कर रहे हैं। कानूनों की सुचारू क्रियान्विति नहीं होती और इसीलिए जनसहभागिता नहीं मिलती। निष्पादन में व्यापक कमी, सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता असंवेदनशीलता सर्वत्र दिखायी पड़ती है। जन समस्याओं के निराकरण व निवारण नहीं होने से लोगों में हताशा व

हिंसा बढ़ रही है। बार-बार के प्रशासनिक सुधार आयोग, लॉ कमीशन की रिपोर्ट, पंचायत राज निकायों की स्थापना व विकेन्द्रीयकरण, संविधान संशोधन निष्प्रभावी हो रहे हैं। निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी इच्छानुसार अधिकाधिक राशि, भत्ते, आराम, सुविधाएं ले रहे हैं और अपने उपहासपूर्ण व भ्रष्ट तथा गैर जिम्मेदारी असंवेदनशील व्यवहार से जनता की नजरों में गिरते जा रहे हैं। राजनीतिकों, बेईमानो, चोर-उच्चकों का अंतिम धन्धा समझा जाने लगा है।

समतावादी उपदेश, समग्र विकास, नवाचार, सुशासन की बातों में अब आम जनता को विश्वास नहीं रहा। मैगासेसे अवार्ड विजेता प्रसिद्ध समाज सेविका को जब चुनाव लड़ने का आग्रह किया तो स्पष्ट उत्तर मिला कि वे चुनाव में 500 वोटों से ज्यादा नहीं ला सकती। जनसमस्याओं के सम्बन्धित प्रदर्शनों में प्रभावित लोगों को एकत्रित कर सकती हैं। उनकी निष्ठा में कमी नहीं है परन्तु बार-बार बनने वाले मंच व मोर्चों व अखबारी प्रचार से आम लोगों में पहचान व विश्वास नहीं बनता। कैसी विडम्बना है कि घोटाला करने वाली पत्नी सरपंच व जांच करने व सामाजिक लेखांकन करने वाला उसका पति। इस प्रकार के नाटकों से नफरत हो चुकी है लोगों को। ''कानून के शासन'' को सुधारों के एजेन्डे में शामिल करना होगा।

पक्षपात रहित, वंशवाद से दूर, संवेदनशील स्वच्छ सुशासन प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। जनता चुने हुए प्रतिनिधि विधायक, सांसद मंत्रियों, वेतन व सुविधा पाने वाले नौकरशाहों को अब राजा के रूप में नहीं जवाबदेह सेवक के रूप में देखना चाहती है। आज निर्वाचन तक गली में बैठे कुत्ते को काकाजी, फूफाजी, मामाजी कहकर हाथ जोड़ने वाले उम्मीदवार चुने जाने के पश्चात राजा बनकर उनकी छाती पर मूंग दलते हैं, जनता को अब यह सहन नहीं होता। स्कूल, अस्पताल, पानी, बिजली (पुलिस व राजस्व प्रशासन की बात छोड़िये) सफाई की सेवायें नागरिकों के प्रभाव से बाहर हैं। लोक सेवक अब लोगों के प्रति जवाबदेह नहीं हैं, वे अपने आपको मालिक समझते हैं। आमजन की पहुँच ही नहीं होती। सुरक्षा घेरे से दुत्कार सहनी पड़ती है। हिंसात्मक, आंदोलनात्मक तरीका अपनाने के पहले प्रस्तुत आवेदन तो रद्दी की टोकरी की शोभा बढ़ाते हैं। बिना मांगें कुछ प्राप्त ही नहीं किया जा सकता जबकि प्रशासन व जनसेवक व लोकसेवकों का कर्त्तव्य है कि नागरिकों की आवश्यकताओं, कठिनाइयों व समस्याओं का एहसास करें, समझे व स्वयं हल करें। पद का भेदभाव छोड़कर कानून का स्वच्छ शासन ही लोकतंत्र की सफलता सुनिश्चित कर सकता है।

आज भ्रष्टाचार के कारण सभी परेशान हैं। स्वयं प्रधानमंत्री स्पष्ट रूप से स्वीकार कर चुके हैं। नरेगा जैसी मजदूरी प्रदान करने वाली योजना में भ्रष्टाचार, खुली कालाबाजारी व जमाखोरी, स्वयं विभागों द्वारा पनपाये जाने वाली दलाली से कार्यशील व्यवस्था नहीं बनी रह सकती। घातक परिणामों से बचने के लिए बगैर हिचकिचाहट सत्ता का दुरुपयोग रोककर, जनता का विश्वास अर्जित करना होगा।

4/45, सूर्य पथ जवाहरनगर, जयपुर 302004 (राजस्थान)

प्रेरणा

घमंड न करें

पुराने समय की बात है, किसी जंगल में एक ऋषि तपस्या कर रहा था, उसने अपने तपोबल से कई सिद्धियां प्राप्त कर ली थीं। उसे अपने तपोबल पर बहुत घमण्ड था। एक दिन एक बगुले ने ऋषि के ऊपर बींट कर दी, इस पर ऋषि को बहुत क्रोध आया। उसने बगुले को भस्म होने का श्राप दे दिया। बगुला वहीं भस्म हो गया। अब तो ऋषि को अपनी साधना पर और अधिक घमण्ड हो गया। समय बीतता गया। एक बार वह किसी नगर में भ्रमण कर रहा था। उसने भिक्षा मांगने के लिए एक द्वार खटखटाया। बहुत देर तक कोई उत्तर न मिलने पर ऋषि को क्रोध आ गया, तभी अंदर से एक सुंदर सुशील गुणवती युवती आती हुई दिखाई दी। ऋषि ने क्रोध में उस युवती की ओर देखते हुए कहा ''इतना विलंब क्यों? मैं तुझे श्राप देता हूँ कि तू भस्म हो जा।'' युवती मुस्कराई और बोली ऋषि मैं बगुला नहीं हूँ, जो भस्म हो जायेगा।

ऋषि को आश्चर्य हुआ, उसने पूछा तुम्हें यह सब कैसे मालूम! युवती बोली दूर जंगल में नदी किनारे झोंपड़ी में एक युवक रहता है, इस प्रश्न का उत्तर वही देंगे। उत्तर सुनकर ऋषि युवक के पास पहुँचा, उसने देखा कि झोंपड़े में एक बधिक बैठा है। उसने ऋषि को प्रणाम किया और बताया कि वह युवती मेरी पत्नी है। वह अपने पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए, मेरे बूढ़े मां-बाप की सेवा करती है। मैं जीवन-यापन के लिए शिकार करता हूँ इसलिए मैं अपने कार्य तथा अपनी पत्नी से संतुष्ट हूँ। जो लोग संतुष्ट होते हैं। जो स्त्री अपने पति को परमेश्वर मानती है और अपने सास-ससुर की मन से सेवा करती है। उस पर श्राप असर नहीं करता। उत्तर सुनकर ऋषि का घमंड चूर-चूर हो गया।

◆ **राजकुमार**
डी-17/बी, ब्रिज विहार,
पोस्ट : चंद्रनगर, (गाजियाबाद-उ.प्र.)

एक उपचार पद्धति भी है लेखन

सीताराम गुप्ता

जिस प्रकार गायन-वादन, नृत्य अभिनय, चित्रकला, मूर्तिकला तथा अन्य ललित कलाओं और लोक कलाओं के अभ्यास से एकाग्रता का विकास होता है उसी तरह लेखन से भी एकाग्रता तथा ध्यान के लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। इस दृष्टि से लेखन एक उपचार पद्धति या थैरेपी से कम नहीं है।

लेखन क्या है?

लेखन से तात्पर्य मौलिक सृजन से है। लेखन दरअसल हमारे मन में समाए हुए विचारों की लिखित अभिव्यक्ति ही तो है। हमारे मन में अनेक प्रकार के विचार समाए होते हैं। कुछ विचार अच्छे तो कुछ बुरे। कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक। कभी हम आशावादी होते हैं तो कभी निराशावादी। इन परस्पर विरोधी विचारों में संघर्ष चलता रहता है और ये घनीभूत होकर मन पर बोझ बन जाते हैं। यदि इस बोझ को हल्का नहीं करेंगे तो विभिन्न प्रकार के तनावों का शिकार हो जाएँगे। लेखन के माध्यम से मन में बोझ बने विचारों को प्रकट कर हम मुक्त हो जाते हैं। लेखन अभिव्यक्ति के माध्यम के साथ-साथ तनाव मुक्ति का साधन भी है।

लेखन एक उपचार पद्धति कैसे है?

लेखन क्योंकि तनावमुक्ति का माध्यम है अतः यह रोगों से भी रक्षा करता है। जब हम लंबे समय तक तनावग्रस्त रहते हैं तो उससे अनेक साइकोसोमेटिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। तनावमुक्त रहकर हम इन मनोदैहिक व्याधियों से मुक्ति पा लेते हैं। लेखन स्वयं में एक उपचार पद्धति है। लेखन के दौरान हम अत्यंत शांत-स्थिर अवस्था में हाते हैं जो एक प्रकार से ध्यान की अवस्था ही है। ऐसी अवस्था में हमें मेडिटेशन के लाभ स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं और मेडिटेशन तो स्वयं एक उपचारक तकनीक या पद्धति है।

क्या लेखन को नियंत्रित करके उपचार में मदद ली जा सकती है?

जैसे मलिन जल के स्थिर हो जाने पर जल धीरे-धीरे स्वच्छ हो जाता है उसी प्रकार शांत स्थिर चित्त भी धीरे-धीरे प्रसन्न हो जाता है और यहाँ मनुष्य अपने मूल स्वरूप में लौट आता है। मनुष्य का मूल स्वरूप या स्वभाव है आनंद। यहाँ यदि हमें लगता है कि हमारे मन में विकारों का संग्रह हो गया है तो लेखन द्वारा न केवल उन्हें बाहर निकाला जा सकता है अपितु सकारात्मक लेखन द्वारा विकारों को संस्कारों में परिवर्तित किया जा सकता है। कैसे? समस्याओं या विकारों का उपचार क्या है? विकारों का रूपांतरण करके हम न केवल सकारात्मक लेखन करते हैं अपितु इन सकारात्मक विचारों या सुझावों का संस्कार के रूप में हमारे मन में रूपांतरण भी हो जाता है जो हमारे रूपांतरण और उन्नति का सबसे अच्छा मार्ग और उपाय है। यहाँ लेखन द्वारा सकारात्मक विचारों का पुनः रूपांतरण हो जाता है।

क्या लेखन द्वारा दूसरों के उपचार में मदद ली जा सकती है?

किसी व्यक्ति की दमित भावनाओं अथवा उसके मन में दबे हुए विचारों को अच्छी प्रकार समझने के लिए लेखन की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। कोई रोगी या दुखी व्यक्ति जब अपने मनोभावों को काग़ज़ पर उतारता है तो कुछ तो इस प्रयास में ही वह मुक्त अनुभव करता है और उसके मनोभावों का विश्लेषण कर चिकित्सक या मनोचिकित्सक भी उसे उचित परामर्श दे सकता है। जो व्यक्ति अपने मनोभावों को व्यक्त नहीं कर सकता या करना नहीं जानता वह सबसे बड़ा रोगी है और उसका निदान और उपचार दोनों ही मुश्किल हैं।

मनोभावों की अभिव्यक्ति तो मौखिक रूप से भी की जा सकती है फिर लिखित अभिव्यक्ति पर ही ज़ोर क्यों?

लेखन मौखिक अभिव्यक्ति से अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि लिखने में

मौलिक लेखन के अलावा पुस्तक का नाट्यांतरण हो अथवा लिप्यंतरण या भाषांतरण हो कार्य के साथ-साथ आपका उपचार करने में भी सक्षम हैं। इससे न केवल लिखने वाले की एकाग्रता का विकास होता है अपितु सर्जनात्मकता का आनंद भी मिलता है। इससे आपके तनाव और चिंता के स्तर में कमी आती है जिससे आपकी रोगावरोधक क्षमता विकसित होकर आपको स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होती है।

व्यक्ति को पर्याप्त चिंतन का समय मिलता है। इस समय व्यक्ति आत्म-निरीक्षण का प्रयास करता है और इससे अच्छी तो कोई उपचार पद्धति हो ही नहीं सकती। आत्मनिरीक्षण या आत्मावलोकन के उपरांत व्यक्ति स्वयं को बिल्कुल यथार्थ स्थिति में प्रस्तुत करता है अतः निदान और उपचार दोनों सरलता से किये जा सकते हैं।

क्या हर व्यक्ति एक लेखक की तरह स्वयं को सही-सही अभिव्यक्त कर सकता है?

हर व्यक्ति एक अच्छा लेखक नहीं हो सकता लेकिन प्रयास करने पर और पर्याप्त अभ्यास के बाद हर व्यक्ति स्वयं को व्यक्त करने में सक्षम हो जाता है। कई बार जीवन में ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं जिन्हें हम दूसरों को बता नहीं पाते। स्थान और पात्र बदल कर यदि हम उस घटना को लेखन यथा कहानी, लघुकथा आदि का रूप दे दें तो निश्चित रूप से उस घटना के दुष्प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं।

लेखन के किन-किन रूपों या विधाओं से उपचार में मदद मिलती है?

उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र (शब्दचित्र या व्यक्तिचित्र), जीवनी, आत्मकथा, लघुकथा अथवा अन्य कोई भी विधा क्यों न हो यदि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आप लेखन से जुड़े हैं तो हर प्रकार का लेखन आपको उपचार के लाभ देगा ही। मौलिक लेखन के अलावा पुस्तक का नाट्यांतरण हो अथवा लिप्यंतरण या भाषांतरण हो कार्य के साथ-साथ आपका उपचार करने में भी सक्षम हैं। इससे न केवल लिखने वाले की एकाग्रता का विकास होता है अपितु सर्जनात्मकता का आनंद भी मिलता है। इससे आपके तनाव और चिंता के स्तर में कमी आती है जिससे आपकी रोगावरोधक क्षमता विकसित होकर आपको स्वस्थ बनाए रखने में सहायक होती है।

कई व्यक्ति रात को सोने से पूर्व ज़रूरी पत्रादि लिखते हैं और कुछ डायरी इत्यादि लिखते हैं। डायरी लिखने का अर्थ है दिनभर की या पिछली घटनाओं का चिंतन और विश्लेषण प्रस्तुत करना। तकनीकी भाषा में इसे सिंहावलोकन कह सकते हैं। यह मौखिक हो या लिखित इसमें ध्यान के तत्त्व समाहित होते हैं। ध्यान व्यक्ति को आराम देता हे, उसे स्वस्थ करता है, तनाव को कम करता है। सारे दिन के काम के बाद यदि नींद आने में बाधा आ रही हो तो सोने से पूर्व इस विधि अर्थात् सिंहावलोकन से उपचार किया जा सकता है। ये सब लेखन के ही विविध रूप हैं। इन विभिन्न विधियों द्वारा स्वयं को तनावमुक्त कर उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु प्राप्त करें।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- देश में आत्महत्या करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। सर्वोच्च संस्थानों में कार्यरत या अध्ययनरत व्यक्ति असफल रहने पर अवसाद के शिकार हो जाते हैं और अवसाद का यह घुन उन्हें आत्महत्या की लपेट में ले लेता है।
  - 129 लोग भारत में हर रोज कर लेते हैं आत्महत्या।
  - 30 वर्ष से कम उम्र वालों में जान देने की प्रवृत्ति ज्यादा।
  - 30 से 40 आयु वर्ग के लोगों की संख्या 119 है।
  - 94 लोग 45 वर्ष से ज्यादा उम्र के रोज देते हैं जान।
  - 16 हजार से अधिक युवाओं ने 2008 के दौरान जहर खाया।
  - 15 हजार ने फांसी लगा जान दी।

  राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो रिपोर्ट

- मध्य प्रदेश के जिला मुख्यालय दमोह में खसरे का टीका लगाए जाने से चार बच्चों की मौत हो गयी। मौत के लिए स्वास्थ्य विभाग के अमले को जिम्मेदार माना गया है। डॉक्टर सहित तीन स्वास्थ्य कर्मियों पर गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया गया है। सरकार ने इस घटना की जांच के लिए डॉक्टर की अध्यक्षता में एक दल दमोह भेजा था। दल के अध्यक्ष डॉ. ने बताया कि खसरे के टीके के लिए जो घोल तैयार किया गया था, वह दूषित हो गया था। बताया गया कि आमतौर पर घोल चार घंटे तक खराब नहीं होता।

- एक अफवाह ने देर रात उत्तर बिहार और उत्तर प्रदेश के सीमाई इलाके की हजारों महिलाओं के पैर रंगवा दिए। बहुत सी जगहों पर महिलाओं के साथ पुरुषों ने भी पैर रंगवाए। शुरुआत एक कॉल से हुई और इससे कॉल की संख्या में हर सैकंड जबर्दस्त इजाफा होता गया। ऐसी हर कॉल में सब लगभग वही बात कह रहे थे कि पैर हाथ धोकर रंग लो, अन्यथा अनहोनी होने वाली है।

स्वस्थ जीवन और शाकाहार संतुलन

मुनि किशनलाल

जीवन के लिए आहार जरूरी है। उसके बिना प्राणी जिन्दा नहीं रह सकता। भोजन कैसा हो? उसे प्राप्त कैसे किया जाये? ये विमर्शनीय बिन्दु है। जीवो जीवस्य भोजनम्। जीव, जीव का भोजन है। बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है। इस संसार में गलागल मची हुई है। जिसकी लाठी उसकी भैंस। ताकतवार सदैव कमजोर को खाता है। शक्तिशाली ही अपनी हुकुमत चलाता है। एक कवि ने सुन्दर लिखा है

''सत्ता जिनके हाथ में वे क्या नहीं कर सकते।

आकाश के तारे तोड़कर जमीन पर ला सकते।।''

ताकतवर इन्सान क्या नहीं कर सकता? कितना ही ताकतवर क्यों न हो पर भूख तो उसे भी सताती है। जब भूख लगती है तो उस क्षुधा की ज्वाला को शान्त करना ही पड़ता है। यह ज्वाला सर्वभक्षी है जो आ जाये उसे भस्म कर देती है। मानव जाति ज्यो ज्यों सुसंस्कृत हुई, उसके भोजन में भी परिवर्तन आने लगा। नर भक्षी से पशु भक्षी बना। पशुओं में पालतु और उपयोगी जानवरों को मारना निषेध हुआ। शाकाहार का प्रयोग बढ़ा।

स्वास्थ्य के लिए शाकाहार

किसी प्राणी की हत्या बिना आवेश, क्रोध, क्रूरता के हो नहीं सकती। आवेश और क्रोध से वृत्तियां खराब होती हैं वृत्तियों के खराब होने से परस्पर पारिवारिक और सामाजिक समस्याएं पैदा होती हैं। मांस आहार की बजाए वनस्पति का आहार अधिक सात्विक और स्वास्थ्य वर्धक है। आचार्यों ने इस बात पर ध्यान दिया। मांसाहारी, शाकाहारी भी हैं। शाकाहार तो व्यक्ति छोड़ नहीं सकता है। मांसाहार और शाकाहार दोनों में से यदि एक का चुनाव करना हो तो स्वास्थ्य, वृत्ति और संस्कारों की दृष्टि से शाकाहार ही उपयोगी है।

पशुओं का शिकार करने वाले अथवा अन्य प्राणियों की हत्या करने वाले व्यक्ति में स्वअल्प आवेश भी अनर्थ गढ देता है। मांसाहारी प्राणियों को, जहाँ बूचड़खानों में कत्ल किया जाता देख लें, उनकी पीड़ा और दयनीय स्थिति तो उनका पत्थर दिल भी पिघल सकता है। मांसहार करने वाले वहाँ की स्थिति का पूरा जायजा ले लें, तो वे मांसाहार शायद ही कर पाये। क्रूरतम दृश्य को देखकर व्यक्ति सदा-सदा के लिए इस कृत्य से दूर हो सकता है।

मांसाहार का निषेध क्यों?

मांस आहार का निषेध भगवान् महावीर ने क्यों किया जबकि भगवान महावीर क्षत्रिय परिवार से जुड़े हुए थे? उनको इसकी कोई परवाह नहीं, जिस सत्य को जाना, अनुभव किया, उसके अनुसार आचरण किया। जब उन्हें 'आयतुला पयासु' की अनुभूति हुई। समस्त प्राणियों में आत्मानुभूति का बोध प्रगट हुआ। वे अनायास ही करूणा से भर गये उन्होंने घोषणा की 'सव्वे पाणा णहंतत्वा' सभी प्राणी अहनतव्य है किसी को मारो मत, पीड़ित मत करो। भगवान् महावीर को ''प्राणी मित्र'' बना दिया। दूसरे के प्राण हरने या वध करने का हक किसने आपको दिया? मांस आहार नहीं करने का निषेध ही नहीं वरन् उन्होंने अहिंसा अणुव्रत के अन्तर्गत व्रत दिलवाया। साधु-साध्वियों के लिए। अहिंसा महाव्रत में हिंसा का मनसा,वाचा,कर्मणा पूर्ण निषेध है। श्रावक एवं श्राविकाओं ने भी अणुव्रत स्वीकार किया। उस युग में लाखों-लाखों लोगों ने व्रतों को स्वीकार कर हिंसा एवं मांस आहार का परित्याग किया। मांस आहार करने का एक सशक्त आन्दोलन बन गया।

मांसाहार रोगों का घर

आधुनिक शरीर शास्त्री, आहार शास्त्री, स्वास्थ्य शास्त्री पर्यावरण वैज्ञानिक इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं कि मांस आहार से शारीरिक, मानसिक विकृतियां और पर्यावरण के दूषित होने की संभावना है। मांसाहार उत्तेजक है, उससे परस्पर मारकाट, लड़ाई, झगड़े अधिक होते हैं। मांसाहारी सहनशील कम होते हैं। मांसपेशियों में कड़ापन आने से, उनका लचीलापन गायब हो जाता है। मांसाहारियों को हृदयाघात, ब्रेन हेमरेज आदि बीमारियां अधिक होती हैं। इसके अतिरिक्त मृत प्राणियों को मारते समय उनमें भय पैदा होता है तथा प्राणियों में स्वयं अपनी व्याधियां भी होती हैं, जिससे मांसाहारी नाना बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। मांसाहार के लिए जिन प्राणियों को ग्रहण किया जाता है, उनके भी अपने संस्कार होते

हैं। वे संस्कार भी मांसाहारी व्यक्तियों में संक्रान्त क्यों नहीं होंगे? फलतः वे ऐसे मांसाहरी पशुओं के संस्कार से संक्रान्त हो जाते हैं पशुवत् आचरण करने लगते हैं।

इसलिए मांस आहार का निषेध तीर्थंकरों ने किया है। वर्तमान युग में सारे विश्व में शाकाहार का आन्दोलन चलने लगा है। विभिन्न शोधों से यह निष्कर्ष निकला है कि मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार श्रेष्ठ है। खेल, शक्ति, विचार, भावना और बौद्धिक क्षमता के विकास में शाकाहार को ही श्रेष्ठतम माना है।

आहार विजय से आत्मजयी

आचार्य कुन्द कुन्द फरमाते हैं जो आसन विजय, आहार विजय, निद्रा विजय नहीं जानता वह जिनशासन को नहीं जानता है। आहर विजय के बिना व्यक्ति साधना कर ही नहीं सकता। आहार विजय से संकल्प की दृढ़ता आती है। संकल्पशील व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है। आहार का लोलुपी व्यक्ति साधना में सफल नहीं हो सकता। आहार शरीर को चलाने के लिए जरूरी है। लेकिन आहार के गुलाम न बने। व्यक्ति भोजन को भी साधना का अंग बना सकता है। सम्राट श्रेणिक ने महावीर से पूछा ''आपके शासन में शिष्य समुदाय में उत्कृष्ट क्रिया-साधना करने वाला कौन है?'' उन्होंने कहा धन्ना अणगार जो बैले बैले दो दिन उपवास तप करता है, पारणे में बाहर फैकने जैसा रूक्ष भोजन को समभाव से जागरूकता से ग्रहण करता है, वह अनासक्त मुनि है, सर्व श्रेष्ठ साधना करने वाला है। यद्यपि भगवान महावीर शासन में मास-मास, चार-चार मास, छः मास तप करने वाले मुनि थे परन्तु, उनका नाम नहीं लिया और धन्ने अणगार का नाम लिया। सम्राट श्रेणिक अभिभूत थे। भगवान की वाणी से उन्होंने धन्ने अणगार को वन्दना कर उनकी कही हुई बात का उल्लेख किया। फिर भी उनके मन में अहंकार के भाव नहीं आये। समभाव से अपनी साधना में लीन रहे। आहार और अनाहार दोनों स्थितियों में अपने आपको जागरूक रखना साधना का अंग है। ऐसे ही होता है आहर विजय।

भोजन और रोग

स्थानांग सूत्र में रोग के 9 कारणों की ओर संकेत किया है

1. अतिभोजन जो व्यक्ति अति भोजन करता है यानि ठूंस ठूंस कर खाता है वह बीमार पड़ता है।

2. अहितकर भोजी जो शरीर, मन और प्राण के अनुकूल नहीं, वैसा भोजन जिह्वा के स्वादवश करता है। वह शरीर के लिए अहितकर, एवं मन और भावों के लिए भी अहितकर है

3. अध्यशन-बार बार भोजन करना। समय-असमय भोजन करना।

4. भोजन की प्रतिकूलता प्रतिकूल भोजन करना। जैसे खरबूजे के साथ दूध, दाल के साथ दही आदि।

5. उच्चार प्रस्रव का निरोध उच्चार-प्रस्रव को रोकने से रोग पैदा होता है।

6. अतिनिन्द्रा सीमा से अधिक नींद का आसेवन से रोग पैदा होता है।

7. अतिजागरण सीमा से अधिक जागने से रोग पैदा होता है।

8. यात्रा अधिक यात्रा से व्यक्ति अस्वस्थ होता है।

9. काम विकार वासना में डूबे रहने से रोग पैदा होते हैं।

प्रथम चार कारण भोजन के हैं। भोजन का विवेक आवश्यक है। अविवेकी ही ऐसी समस्या पैदा करते है। वे स्वयं तो दुःखी होते ही हैं साथ में पारिवार जन को भी दुःखी बनाते हैं। शेष पांच कारणों में शरीर को संतुलित व्यवस्था नहीं देने का परिणाम से व्यक्ति रोग आक्रान्त हो जाता है। उच्चार प्रस्रव शरीर की आवश्यकता है। आहार आवश्यक है तो निहार भी उतना ही जरूरी है। नींद-जागरण में अति नहीं, अधिक यात्रा भी शरीर को बीमार करने में और स्वाध्याय ध्यान में बाधक है। वासनाओं पर संयम रखकर ही शक्ति का सद्पयोग कर सकते है। अतएव शैली का अस्त-व्यस्त होना रोगों का प्रादुर्भाव उत्पन्न करता है।

शाकाहार कैसे अपनाएं?

किसी भी श्रेष्ठ बात को जन-जन तक पहुँचाना है तो एक ही उपाय है कि उसमें गुण, महत्ता, और व्यवस्था के द्वारा समाज में उसे प्रतिष्ठित करना। प्रतिष्ठित करने के लिए उसको समाज के सम्मुख प्रस्तुति देनी होगी। आज मीडिया शक्तिशाली हो गया है और जनता तक उसकी पहुँच सरल हो गई है। मीडिया के माध्यम से उसके गुण महत्ता दर्शन जनता तक पहुँचाया जाये। एक युग था ग्राम-ग्राम सत्संग के माध्यम से संतजन कार्य करते थे। आज भी वे कार्य कर रहे हैं, किन्तु मीडिया के माध्यम से जो कार्य पांच वर्ष में नहीं होता था वह पांच दिन में पूरे समाज में हलचल पैदा कर देता है। विदेशों में भी शाकाहार के प्रति आज आकर्षण बढ़ रहा है। शाकाहार का महत्त्व जनता को सहज उपलब्ध हो उसका सघन प्रयास हो यह शाकाहार आन्दोलन के मुखियाजन को ध्यान देना होगा।

शिक्षा क्षेत्र में पाठ्यपुस्तकों आदि के माध्यम से शाकाहार का महत्त्व समझाया जाये तो सहज ही करोड़ों करोड़ों लोगों में इसका संदेश पहुँचेगा ऐसा विश्वास है। अण्डे की एजेंसियां प्रचार-प्रसार में कितनी सजगता से लगी हुई हैं, ऐसे ही शाकाहार के प्रेमीजन को भी प्रचार-प्रसार का कार्य करना होगा। निःसंदेह व्यक्ति, जनता, समाज और विश्व के नागरिकों सभी का शाकाहार में ही हित है।

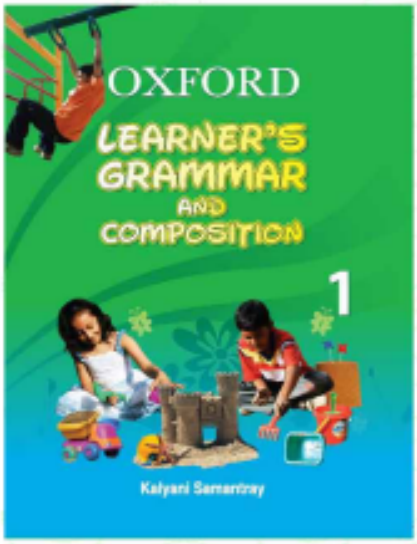

Learner's Grammar and Composition aims to fulfil the needs of young learners of English as a second language by helping them to understand the nuances of English grammar.

It helps learners to see the direct relationship between language forms and the use of English in various life situations.

OXFORD

LEARNER'S GRAMMAR AND COMPOSITION

The series is well-graded, proceeding step-by-step to each level in order to cover a comprehensive structured syllabus. Care has been taken to use authentic materials, such as stories, events, songs and rhymes, optimally.

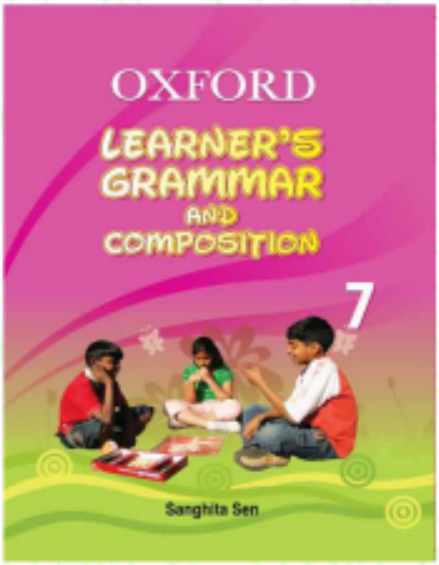

Course Components
Books 1 to 8

Head Office
YMCA Library Building, 1, Jai Singh Road, New Delhi—110001
Ph: 011 43600300 Fax: 011 23364014-0897
Email: edumktg.in@oup.com

OXFORD
UNIVERSITY PRESS

घरेलू हिंसा कानून

नरेन्द्र देवांगन

सावधान, अगर आप अपनी पत्नी से मजाक-मजाक में भी कुछ ऐसा कहने वाले हैं जिसका वह बुरा मान सकती है तो मत कहें। सरकार के 'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण विधेयक 2005' के चलते आपकी पत्नी किसी भी बात पर कानून का सहारा लेकर आपको परेशान कर सकती है। यह कानून हर उस औरत पर लागू होता है, जो किसी घर के दायरे में आती होगी। यह कानून देश के हर हिस्से और धर्म की औरतों पर लागू होता है। इस कानून के तहत पत्नी को प्रताड़ित करने पर 20 हजार रुपए तक का जुर्माना हो सकता है। यह गैर जमानती अपराध माना गया है। इस कानून में अपराध को देखकर पति को जेल भी भेजा जा सकता है। कानून में पीड़ित महिलाओं की मदद के लिए एक संरक्षण अधिकारी और गैर सरकारी संगठन की नियुक्ति हुई है। यह परेशान महिला की मेडिकल जांच, कानूनी सहायता, सुरक्षा और उसके रहने का इंतजाम देखते हैं।

एक तरह से देखा जाए तो इन कानून में ऐसा कुछ नहीं है जो पहले से ही कानून की किताब में मौजूद न रहा हो। यह कानून पति-पत्नी के बीच रिश्तों में कई तरह की मुश्किलें खड़ी कर सकता है। इस कानून के तहत हिंसा को 5 भागों में बांटा गया है

शारीरिक हिंसाः मारपीट, थप्पड़, ठोकर मारना, दांत से काटना, लात मारना, मुक्का मारना, धक्का देना, धकेलना या अन्य किसी तरीके से शारीरिक तकलीफ देना शारीरिक हिंसा में आता है।

लैंगिक हिंसाः इसमें जबरदस्ती यौन संबंध बनाना, अश्लील साहित्य या कोई अन्य अश्लील तस्वीरें या साहित्य देखने को मजबूर करना, दुर्व्यवहार करना, अपमानित करना, नीचा दिखाने के लिए कोई ऐसा काम करना जो औरत के सम्मान को किसी भी रूप में चोट पहुँचाने वाला है।

मौखिक और भावनात्मक हिंसाः इसमें औरत का मजाक उड़ाना, गालियां देना, चरित्र और आचरण पर दोषारोपण करना, लड़का न होने के लिए बेइज्जत करना, बच्चा न होने पर ताना देना, दहेज के सवाल पर अपमानित करना, स्कूल-कॉलेज या किसी अन्य पढ़ने-लिखने की जगह पर जाने से रोकना, नौकरी करने से रोकना, औरत के साथ रहने वाले किसी बच्चे या बच्ची को घर से जाने से रोकना, किसी आदमी विशेष से मिलने से रोकना, इच्छा के खिलाफ शादी को मजबूर करना, आत्महत्या की धमकी देना या फिर कोई दूसरा अभावनात्मक व्यवहार करना शामिल है।

आर्थिक हिंसाः औरत या औरत की संतानों का भरण-पोषण करने के लिए पैसा न देना, औरत या उसकी संतानों को खाना, कपड़ा और दवाएं देने से मना करना, जिस घर में महिला रह रही हो उसे निकालने पर, घर से किसी हिस्से का इस्तेमाल करने से रोकना, रोजगार करने से रोकना, औरत के वेतन या मानदेय को हड़पना, रोजमर्रा के घरेलू सामानों का प्रयोग करने से रोकना, अगर किराए के मकान में रह रही हो तो उसका किराया न देने पर, औरत की सूचना और सहमति के बगैर उसके किसी सामान को बेचने या उनको बंधक रखना, औरत के पैसों को खर्च कर देना और बिजली आदि का बिल न जमा करने पर इस कानून के तहत मुकदमा लिखाया जा सकता है।

दहेज से जुड़ा उत्पीड़नः दहेज के लिए किसी भी तरह की मांग करना दहेज से जुड़ा अन्य उत्पीड़न माना जाएगा।

कानून का दिखावाः औरतों के हितों को सुरक्षित रखने, औरतों को सम्मान देने के नाम पर पहली बार इस तरह के कानून को नहीं बनाया गया है। इससे पहले दहेज कानून और कार्यस्थलों पर काम करने के कानून बनाए जा चुके हैं।

अगर सफल औरतों की बात करें तो इस तरह की औरतों की संख्या बहुत अधिक है जो अपने घर-परिवार के साथ रह रही हैं। इसके विपरीत अगर औरत घर वालों से दूर रहती है तो उसको तमाम तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस तरह की कानूनी लड़ाई लड़ने में उनका समय और पैसा दोनों खर्च होते हैं, जिसका पछतावा बाद में औरतों को होता है।

समाज में महिलाओं की दशा में सुधार तब तक संभव नहीं है जब तक हम उसके प्रति संवेदनशील नहीं हो जाते हैं। महिला अधिकारों के लिए होहल्ला मचाने वाले लोग उसी नेता की तरह हैं जो जनता की दशा नहीं सुधारना चाहते। अगर आदमी और औरत के बीच रिश्ते मधुर बनाने हैं तो उनके बीच आपसी सहमति बढ़ानी होगी। समाज में औरतों की दशा में दिनोंदिन तरक्की हो रही है।

अब घूंघट में रहने की विवशता नहीं रह गई है। खेतों में काम करने वाली मजदूरिनों से लेकर फैक्ट्री और

ऑफिस में औरतें कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। हमारा समाज परिवार की एक धुरी पर चल रहा है। इसको बचाने के लिए आदमी और औरत का एक होकर चलना बहुत जरूरी होता है।

इस तरह कानून के सहारे रिश्तों को चलाने की कोशिश कभी सफल नहीं हुई है। जिन औरतों ने अपने पतियों के खिलाफ तलाक लेने का मामला दाखिल किया है उनका तलाक लेना आसान नहीं रह गया है। इस तरह के कानूनों की तरफदारी करते समय हम अक्सर विदेशों का उदाहरण देते हैं। उस समय हम यह भूल जाते हैं कि विदेशों में मुकदमों का निपटारा समय पर हो जाता है। हमारे देश में तलाक का एक मुकदमा निबटने में 10 से 15 साल तक का समय लग जाता है।

इस उम्र के बाद क्या कोई औरत अपना घर दोबारा बसा सकती है, हमारे देश में यह सोचने वाली बात है जबकि विदेशों में यह सब आसानी से होता रहता है। विदेशों में जिस आसानी के साथ पुलिस मुकदमों को लिख लेती है अपने देश में ऐसा नहीं है। हमारे समाज की ज्यादातर औरतें अकेले थाने में मुकदमा लिखाने नहीं जा सकती हैं। बिना कुछ पैसा लिए पुलिस साधारण आदमी की रिपोर्ट कभी नहीं लिखती। महिलाओं के मामलों को आसानी से लिखाने के लिए महिला थानों की व्यवस्था कहीं-कहीं पर की गई है। इन थानों में महिला पुलिस कर्मियों के द्वारा ही महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हमारे समाज में मुकदमा लिखाने का मतलब समय और पैसे की बरबादी के अलावा कुछ नहीं है।

लुभावने सपनेः जब घरेलू हिंसा कानून 2005 लागू किया गया तब तात्कालीन केन्द्रीय महिला व बाल विकास मंत्री ने कहा था कि यह कानून सामाजिक आंदोलन की एक कड़ी है। इस कानून के जरिए औरतों को जागरूक बनाना है, उनको जिंदा रहने की राह दिखाना है। उनका मानना था कि इस कानून के बन जाने से औरतों का बहुत भला हो जाएगा। यह बात कहते समय वह शायद दूसरे कानूनों का हश्र भूल गईं। दहेज कानून, कार्यस्थलों पर काम करने का कानून, मादा भ्रूण हत्या कानून और बलात्कार कानून का किस हद तक दुरुपयोग होता है।

दरअसल यही हमारे देश में सबसे बड़ी परेशानी वाली बात है। हम रोज-रोज नए-नए कानून बनाकर जनता के बीच वाहवाही लूटने की कोशिश करते हैं। जिन कानूनों से नेताओं के जीवन और कामों पर प्रभाव पड़ता है उसको खत्म भी कर दिया जाता है। जिन कानूनों को खराब मानकर खत्म किया जाता है उनको बनाने वालों से यह नहीं पूछा जाता कि इस तरह का कानून क्यों बनाया, जिससे जनता को कोई फायदा ही नहीं हुआ। सरकार का अपनी मशीनरी पर किसी तरह का कोई नियंत्रण नहीं रह गया है। कानून बनाकर औरत और मर्द के रिश्तों को सुधारा नहीं जा सकता है।

नरेन्द्र फोटो कॉपी
पोस्ट : खरोरा 493225
जिला : रायपुर (छत्तीसगढ़)

स्वस्थ समाज संरचना की दिशा में
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी द्वारा
उद्घोषित
'नया मोड़' आचार संहिता को पुनः स्वीकारें

- वैवाहिक एवं सामाजिक अवसरों पर आयोजित भोज में 21 तथा अल्पाहार में 11 से अधिक व्यंजन नहीं हों।
- समारोह घर-आंगन अथवा सामाजिक स्थलों पर दिन में ही आयोजित हो।
- दहेज की मांग अथवा ठहराव नहीं हो।
- आडम्बर एवं प्रदर्शन पर प्रतिबंध हो।
- समारोह में उत्तेजक-मादक-नशीले पदार्थों का उपयोग वर्जित हो।
- पृथ्वी को बचाने के क्रम में आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहे।
- उत्तेजक एवं भौंडे नाच-गानों का आयोजन नहीं हो।
- धार्मिक आयोजनों में भी सादगी बरती जाए।

अर्थ की चमक घटे, मनुष्य का मूल्य बढ़े

लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास

सुषमा जैन

आखिर भारतीयों पर एक के बाद एक लगातार हो रहे हिंसक और जान लेवा हमले क्या आस्ट्रेलिया के उस दावे की धज्जियां नहीं उड़ाते जिसके तहत वह आज भी अपने देश को भारतीयों के लिए पूरी तरह सुरक्षित बता रहा है? क्या एक पखवाड़े के भीतर सात बार घटित हिंसक और वीभत्स वारदातें यह प्रमाण देने के लिए काफी नहीं है कि उसका बहुसंस्कृतिवाद महज एक दिखावा और भारतीयों की सुरक्षा का दावा सिर्फ एक नाटक है। उसकी नीति प्रारंभ से ही नस्लभेदी रही है और अब भी वह उसी रास्ते पर चलकर पाक साफ बने रहना चाहता है। आस्ट्रेलिया सरकार के तमाम आश्वासनों के बावजूद एक वर्ष में 1400 से अधिक छात्रों के साथ बदसलूकी, लूटपाट और हमले हो चुके हैं। हाल ही में लुधियाना के नितिन गर्ग और नाभा के रणजोत सिंह को वहाँ मौत के घाट उतार दिया गया, भारतीय मूल के साथ-साथ भारतीय प्रतीकों को भी निर्लज्जता से निशाना बनाने की कौशिश में मेलबर्न के लिनबूक इलाके में स्थित गुरुद्वारे पर पेट्रोल बम फेंककर आग लगा दी गयी। भारतीय टैक्सी चालकों के साथ मारपीट तथा लूटपाट तो जैसे रोज की घटनाएं हो चुकी हैं, 22 जनवरी को ब्रिसबेन में फोनबूथ पर फोन करते समय एक भारतीय को बुरी तरह मारा-पीटा गया, उसका पर्स तक लूट लिया।

ऐसी घटनाएं वहाँ न मालूम कितने भारतीयों के साथ हो रही होंगी जो पुलिस के असहयोगात्मक और तानाशाही रवैये से क्षुब्ध होकर रिपोर्ट कराने का साहस न जुटा पाने के कारण सिसक-सिसककर जी रहे होंगे। परन्तु कितने दुःख और शर्म की बात है कि हमारी सरकार अभी तक आस्ट्रेलिया से दो टूक बात कर विरोध जताने का साहस नहीं जुटा पाई है। क्या सरकार का यह दायित्व नहीं था कि वह आस्ट्रेलिया को इन हमलों की जिम्मेदारी लेते हुए कानून का राज स्थापित करने को बाध्य करती? क्या भारत सरकार द्वारा यह जानकारी जुटाने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए था कि भारतीयों पर हो रहे हमलों पर आस्ट्रेलिया या सरकार ने अब तक क्या कार्रवाई की है? जिस भारतीय विदेश मंत्री एस.एम. कृष्णा पर इन सारे मामलों का उत्तरदायित्व है, जब वे ही गैर जिम्मेदार ब्यान देकर आस्ट्रेलिया के दुस्साहस को बढ़ा रहे हों तब कैसे हो सकेगी भारतीयों के जान माल की सुरक्षा? पहले उन्होंने कहा कि ''भारतीय छात्र सोच समझ कर आस्ट्रेलिया पढ़ने जायें''? बाद में यह कहकर सभी को स्तब्ध कर दिया कि ''आस्ट्रेलिया में हो रहे हमलों को मीडिया ज्यादा तूल दे रहा है।'' इनके दोनों ही बयान आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री केविन रड, विदेश मंत्री स्टीफन स्मिथ तथा इमिग्रेशन मंत्री क्रिस इवान्स के उन दावों को पुष्ट करते हैं जिसके तहत वे इंसानियत को शर्मसार कर देने वाले हमलों को नस्लवाद न मानकर सिर्फ लूटपाट और छुटपुट अपराधों की श्रेणी में ही रखकर अपनी जिम्मेवारी से पल्ला झाड़ रहे हैं।

यदि आस्ट्रेलिया की बात मान भी ली जाये कि ये नस्ली हमले नहीं हैं तो फिर उससे पूछा जाना चाहिए कि आखिर वहाँ भारतीयों पर ही यह आफत क्यों टूट रही है? दो गोरों के बीच झगड़े पर तो तुरन्त पुलिस हरकत में आ जाती है, परन्तु पीड़ित भारतीय की एफ.आई.आर. दर्ज करना तो दूर उसकी कोई सुनवाई तक नहीं की जाती क्यों? असलियत तो यह है कि आस्ट्रेलिया सिर्फ यही चाहता है कि वहाँ विभिन्न शिक्षण संस्थानों में पढ़ रहे लगभग 97000 भारतीय छात्रों से मोटी-मोटी फीस वसूल कर अपनी अर्थव्यवस्था मजबूत करता रहे, उत्पादन के लिए सस्ती मजदूरी मिलती रहे, भारतीय लोग अपने ज्ञान, कौशल, विज्ञान तथा उद्यमशीलता से उसे विकसित करते रहें तथा बदले में वहाँ के नागरिकों का कोपभाजन भी बनते रहे और उफ तक भी न करें। आस्ट्रेलिया में दहशत का ऐसा माहौल पैदा हो चुका है कि अनेक छात्र रात में घर से निकलने तक से डरने लगे हैं। ब्रिसबेन में ही हमले का शिकार हुए टैक्सी ड्राईवर संदीप गोयल का यह कहना कि ''मुझे नहीं लगता कि मैं यहाँ ज्यादा दिन रह पाऊंगा'' और उसका स्वदेश लौटने का विचार इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वहाँ भारतीय सुरक्षित नहीं हैं तथा गोरे भी यही चाहते हैं कि भारतीय वहाँ अपना दीर्घकालीन ठिकाना न बना पाएं। विद्यार्थी तो चलो लौट सकते हैं परन्तु उन व्यापारियों का क्या होगा जो वहाँ अपना व्यापार जमा कर भविष्य के लिए योजनाएं बना चुके हैं।

भारतीय छात्रों पर हमलों के बाद अब वहाँ योजनाबद्ध तरीकों से भारतीय व्यापारियों पर भी नस्लीय हमले होने लगे हैं। मेलबोर्न, सिडनी एवं कई अन्य शहरों में भारतीय दुकानदारों के प्रति अभद्र नस्लीय छींटाकशी, गाली-गलौच और तोड़फोड़ की घटनाएं तक प्रकाश में आई हैं। इन निर्दोष व्यापारियों पर दोहरी मार पड़ रही है। एक ओर तो जहाँ इन्हें सरेआम बेइज्जत कर लूटा जा रहा है, वहीं छात्रों पर हमले के एक वर्ष के दौरान उनकी कमाई आधी भी नहीं रह गई है। इन दुकानदारों का यही कहना है कि नितिन गर्ग की हत्या के बाद से तो छात्रों ने अंधेरा होने के बाद घर से निकलना ही बन्द कर दिया है।

एक ओर आस्ट्रेलिया में भारतीयों की जान पर बन रही है, उनका घर से निकलना तक दूभर हो गया है, वही दूसरी ओर हमारी सरकार के मंत्रिगण अपने दायित्वों को ताक पर रखकर अनर्गल बयानबाजी में लगे हैं। इसी वजह से चीन हमारी सीमाओं का अतिक्रमण करने का दुस्साहस कर रहा है, पाकिस्तान से लगातार आतंकी घुसपैठ जारी है और बांग्लादेश लगातार अपने नागरिकों को इधर धकेल उन्हें भारत का नागरिक बता रहा है। सत्ताशीर्ष पर बैठे लोगों को तो जैसे बयानबाजी के अलावा कुछ काम ही नहीं रह गया है। अमेरिकावादी शशि थरूर रोज नया बयान देकर बखेड़ा खड़ा कर देते हैं, तो शरद पवार अपने बयानों से जमाखोरों के हितैषी बन महंगाई को न केवल जीवित रखे हुए हैं, बल्कि उसे पुष्ट कर दीर्घजीविता का आशीर्वाद भी दे रहे हैं। इन्हीं शरद पवार के गृह नगर महाराष्ट्र में हिन्दीभाषी टैक्सी चालकों के भी जान के लाले पड़ने वाले हैं।

पिछले दिनों बुलाई गई केन्द्रीय मंत्रि परिषद की बैठक में उपस्थित 33 राज्य मंत्रियों में से करीब एक दर्जन का यही कहना था कि वे मात्र शो पीस बनकर रह गये हैं क्योंकि वरिष्ठ मंत्री उन्हें कोई काम ही नहीं देते और उन्हें यह तक नहीं पता चलता कि उनके मंत्रालय में क्या हो रहा है। कैसी विडम्बना है कि एक ओर तो वरिष्ठ मंत्री स्वयं को असहनीय बोझा तले दबा प्रदर्शित करते हैं तो दूसरी ओर अपने सहयोगी मंत्रियों की उपेक्षा कर सब कुछ अकेले ही हड़प जाना चाहते हैं। लगता है आज के राजनीतिज्ञों में सैद्धांतिक प्रतिबद्धता, वैचारिक शुचिता तथा लोकतांत्रिक मूल्य बिल्कुल समाप्त हो चुके और उसका स्थान सिर्फ संकीर्ण स्वार्थों ने ले लिया है।

लगता नहीं कि हमने अपने देश का 60 वां गणतंत्र मना लिया है। इन साठ सालों में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जिससे आम आदमी के जीवन में कुछ निखार आता। लगातार उपेक्षा और राजनीतिज्ञों के चारित्रिक पतन के कारण भारतीय न अपने देश में सुरक्षित हैं न विदेश में। देश में किसी को लू लील जाती है तो कोई भीषण शीत-लहर का शिकार हो जाता है। जब पेट में रोटी नहीं होगी तो ठंड और लू तो अपना असर दिखाएगी ही। अब भी समय है राजनीतिज्ञों को इतनी शर्म तो आनी ही चाहिए कि भले ही देश ठीक से न संभाल पा रहे हों, कम से कम भारत की छवि को विदेशों के आगे तो धूमिल न होने दें। कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि भारतीय विदेशों में सुरक्षित रह सकें और भारत विदेशों के आगे सम्मान से खड़ा हो सके। यही गणतंत्र का सच्चा सम्मान होगा।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्राकार
न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग
वीरनगर, सहारनपुर (उ.प्र.) 247001

लगता नहीं कि हमने अपने देश का 60 वां गणतंत्र मना लिया है। इन साठ सालों में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जिससे आम आदमी के जीवन में कुछ निखार आता। लगातार उपेक्षा और राजनीतिज्ञों के चारित्रिक पतन के कारण भारतीय न अपने देश में सुरक्षित हैं न विदेश में। देश में किसी को लू लील जाती है तो कोई भीषण शीत-लहर का शिकार हो जाता है। जब पेट में रोटी नहीं होगी तो ठंड और लू तो अपना असर दिखाएगी ही। अब भी समय है राजनीतिज्ञों को इतनी शर्म तो आनी ही चाहिए कि भले ही देश ठीक से न संभाल पा रहे हों, कम से कम भारत की छवि को विदेशों के आगे तो धूमिल न होने दें।

यात्रा वृत्त

पूर्वोत्तर भारत की यात्रा

डॉ. महेन्द्र कर्णावट

भारतधरा के पूर्वी भाग में अणुव्रत आंदोलन की अवगति लेने एवं गति देने की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत की अणुव्रत सम्पर्क यात्रा राजधानी नई दिल्ली से प्रारंभ हो पुनः होली पर्व पर पहली मार्च को नई दिल्ली पहुँच सम्पन्न होती है। लगभग तीस वर्षों के बाद अणुव्रत का केन्द्रीय प्रतिनिधि मंडल अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम.रांका के नेतृत्व में असम, मिजोरम एवं पं. बंगाल की संक्षिप्त यात्रा पर 19 फरवरी की प्रातःवेला में दिल्ली से प्रस्थान करता है, स्वतंत्रता सेनानी एवं अणुव्रत सेवी डॉ. बी.एन. पांडेय, अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोल्छा, सर्वोदयी अणुव्रती कार्यकर्ता संगमलाल शुक्ल, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा की महत्त्वपूर्ण सहभागिता में। सम्पत सामसुखा एक दिन पहले ही राजधानी एक्सप्रेस से गुवाहाटी के लिए निकल पड़ते हैं इन उद्‌गारों के साथ मैं आप सभी का स्वागत करने को गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर उपस्थित रहूँगा।

19 फरवरी को प्रातः चार बजे उठ यात्रा की तैयारी में संलग्न होता हूँ। निर्मल भाई को नींद से उठा तैयार होने को कहता हूँ। हम दोनों तैयार हो ठीक साढ़े पाँच बजे अणुव्रत भवन से नीचे उतरते हैं और पांडेयजी गोल्छाजी की प्रतीक्षा में सड़क किनारे खड़े हो जाते हैं। लगभग छह बजे दोनों अलग-अलग गाड़ियों में आते हैं जिसमें सवार हो हम सभी नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचते हैं। निर्धारित समय प्रातः 6.40 पर नार्थ-ईस्ट एक्सप्रेस प्लेटफार्म छोड़ निकल पड़ती है 1879 कि.मी. का सफर तय करने। लगभग 38 घंटों की इस थकाने वाली रेलयात्रा में भारत दर्शन (दिल्ली उ.प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम) का अवसर मिलता है। यात्रा में विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, पहनावों से हमारा साक्षात्कार होता है तो उन नगरों के दर्शन भी करता हूँ जहाँ से स्वाधीनता संग्राम और स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा गया। अलीगढ़, इटावा, कानपुर, इलाहाबाद, नैनी जेल, मिर्जापुर, मुगलसराय, चौराचौरी, पटना, कटिहार, सिलीगुड़ी, कोकराझार इत्यादि। ऐतिहासिक स्थलों के साथ जीवनदायिनी पवित्र यमुना एवं ब्रह्मपुत्र नदियों के दर्शन कर महान भारत के इतिहास की स्मृतियाँ मानस पटल पर तैर जाती है।

अणुव्रत आंदोलन के अतीत, वर्तमान और भविष्य की रेखाएँ वार्ताओं के दौरान बनती है और अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का चित्र आँखों के सामने उभर आता है। स्वतंत्रता सेनानी पांडेयजी 'बाबा' की उम्र 86 वर्ष हो चली है पर आज भी युवा हैं। झोला और सूटकेस अपने हाथों से उठा डिब्बे में रखते हैं, कई स्टेशन पर उतर कर खाने के लिए कुछ लाते हैं और कहते हैं यह खाइये यहाँ का प्रसिद्ध व्यंजन है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कुछ प्रसंगों को याद करते हुए मार्गवर्ती एक-एक गाँव-नगर से मुझे परिचित कराते हैं बाबा।

बाबा की प्रबल इच्छाशक्ति, उत्साह, कर्मठता एवं याददास्त मुझे कुछ करने की प्रेरणा देती है। वे कहते हैं अणुव्रत को खड़ा करने के लिए पहले कार्यकर्ताओं को खड़ा करना होगा। हमारे पास सेठ और मुनीम हैं कार्यकर्ता नहीं। डॉ. साहब इसी रेल में चार सौ से अधिक सर्वोदयी कार्यकर्ता फटेहाल यात्रा कर रहे हैं सर्वोदय सम्मेलन में उपस्थिति देने के लिए। समाज को बदलने की क्षमता इन्हीं कार्यकर्ताओं के हाथों में है, सेठ-मुनीमों के हाथों में नहीं। इस सच्चाई को न सिर्फ हमें वरन् अणुव्रत अनुशास्ता को भी समझना होगा। चर्चा करते हुए बाबा कहते हैं अब एक कप चाय हो जाये। लगता है चाय पी बाबा स्वयं को तरोताजा एवं स्फूर्तिदायी महसूस करते हैं। चाय उनके लिये पेट्रोल के समान है जिसे पी वे पुनः यादों-बातों में खो जाते हैं।

बाबूभाई वार्ता को आगे बढ़ाते हुए कहते हैं हम लोग निरंतर अणुव्रत की संगठन यात्रा करेंगे तभी कार्यकर्ता निकलेंगे। निर्मलभाई कहते हैं हर महीने यात्रा पर जाओगे तो घर वाले दीक्षा दिला देंगे। अणुव्रत को चलाने के लिए साठ वर्षों के बाद भी आज हमें अर्थ माँगना पड़ रहा है यह दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं कहता हूँ संस्थाओं को जीवित रखने के लिए तथा कार्यकर्ताओं के स्वाभिमान के लिए यह आवश्यक है कि हम जनता के बीच जायें। रेल और घड़ी के कांटे द्रुतगति से आगे बढ़ते हैं। मध्याह्न में पांडेयजी के घर से आये भोजन ने हमारी यात्रा के स्वाद को द्विगुणित किया। बिहारी जायकेदार नमकीन, मिठाई और सब्जियाँ। बाबा की बहुओं, बिटिया एवं जीवन संगिनी ने यात्रा की लम्बी अवधि को

देख वे व्यंजन भी साथ में भेजे जो दो-चार दिनों तक चल सकते हैं।

अणुव्रती कार्यकर्ता संगमलाल शुक्ल चित्रकूट वासी हैं और ज्योतिष शास्त्र के विशेषज्ञ भी। ज्योतिष के मूल तत्त्व को समझाते हुए वे मेरा, निर्मल एवं बाबूभाई का हाथ देख पूरा विश्लेषण करते हैं। शुक्लजी गोभक्त हैं। सर्वोदयी एवं अणुव्रत विचारधारा में पूरा विश्वास है। चारों तरफ घूमते रहते हैं। उनके चाहने वाले भी बहुत हैं। हर आधा घंटे में उनका मोबाइल बजता है और कब पहुँच रहे हैं? यह प्रश्न किया जाता है।

लम्बी वार्ताओं और नींद के झोकों के बीच संध्यावेला में गाड़ी ठहरती है इलाहाबाद रेलवे स्टेशन पर। इलाहाबाद जहाँ पूरे भारत की नजर आज भी टिकती है। माँ गंगा की पवित्र गोद में समा जाने को पूरा देश उमड़ पड़ता है इलाहाबाद में। यही वह जगह है जहाँ से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम संचालित हुआ और उसकी अमिट यादों को अपने जेहन में समेटे आनंद भवन हमें आज भी बुला रहा है। मैं और बाबा इतिहास की यादों में खो जाते हैं कि बाबूभाई बोलते हैं हेमंत टिफिन लेकर आ रहा है। गोल्छाजी का भतीजा हेमंत व्यावहारिक, सेवाभावी, सुंस्कृत युवक हैं, आते ही सभी को प्रणाम करता है और हमारे हाथों में टिफिन एवं अन्य पैकेट थमा देता है। हेमंत साथ में तीन बड़े पार्सल भी लाया है जिन्हें हमें ले जाना है। रेल में सुरक्षाकर्मियों, चायवालों, माँगने वालों, फेरीवालों का आवागमन निरंतर जारी रहता है। इस अनचाही भीड़ को देख नहीं लगता कि यह आरक्षित वातानुकूलित डिब्बा है। डिब्बा भी बहुत पुराना एवं स्वच्छता का अभाव है। एक सीट पर सुरक्षाकर्मी आकर सो जाता है। खर्राटे लेते पुलिस को देख मुझे विष्णु प्रभाकर की यह लघुकथा याद आ जाती है

प्रथम श्रेणी के डिब्बे के सी कक्ष के द्वार खोलकर युवती ने देखा कि एक बर्थ पर पुलिस-कांस्टेबल लेटा हुआ है, दूसरी पर एक बच्ची के साथ वयोवृद्ध भद्र पुरुष अधलेटे-से कुछ पढ़ रहे हैं। उसने उन भद्र पुरुष के पास जाकर कहा, कृपया जरा ठीक से बैठिए। इस बर्थ पर तीन व्यक्ति बैठक सकते हैं।

भद्र पुरुष ने पुस्तक से दृष्टि उठाकर युवती की ओर देखा और फिर पूछा, '... .. और उस बर्थ पर कितने बैठ सकते हैं?' सहज भाव से युवती बोली, व्यवस्था का कोई राजदार नहीं होता।

इलाहाबाद से आये सुस्वाद भोजन को लेने के बाद नींद की गोद में एक-एक कर हम सभी समा जाते हैं। सुबह नींद टूटती है तो बिहार पीछे छूट जाता है और आमार सोनार बांग्ला देश की भीनी-भीनी महक आती है। 20 फरवरी का दिन मेरे जीवन का स्मरणीय दिवस है। इसी दिन मैं एवं कल्पनाजी परिणय सूत्र में बँधे। आज 34वां वर्ष है। एक-एक कर समय तेजी से आगे बढ़ गया और छोड़ गया यादें, जिनके सहारे हम भविष्य की तस्वीर बनाते हैं। पुरानी यादें एवं सुनहरे सपनों से मुक्त हो मैं कल्पनाजी से दूरभाष पर बात करता हूँ। मेरा फोन सुन वो प्रसन्न हो कहती हैं चलो आज का दिन आपको याद तो रहा। कुछ समय बाद तेरापंथ युवक परिषद की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों के बधाई संदेश फूलों के गुच्छे लिये मोबाइल पर आते हैं। भाई प्रदीप संचेती, निर्मल जैन, बसंत पटावरी, प्रफुल्ल बेताला के आत्मीयता भरे शुभकामना संदेश सुन एवं पढ़ रोमांचित हो उठता हूँ। नई पीढ़ी का अपना अंदाज है फूलों की महक भेजने का।

न्यू जलपाईगुड़ी से चीन निर्मित सामान बेचने वालों की भरमार लग जाती है। बैठे-बैठे शरीर टूटने लग गया है पर यात्रा तो करनी ही है। 20 फरवरी को रात्रि आठ बजे जीवनदायिनी ब्रह्मपुत्र नदी के पहली बार दर्शन कर धन्यता का अनुभव करता हुआ माँ कामाख्या को प्रणाम करता हूँ। ठीक आठ बजकर तीन मिनट पर गुवाहाटी प्लेटफार्म पर कदम रख भारत माँ की पूर्वोतर सीमा को हम प्रणाम करते हैं। पुराने असम ने दो युद्धों की याद को जेहन में छिपा रखा है। माँ कामाख्या देवी के चरणों में शीश नवा हम गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर कदम रखते हैं। सामने सम्पत सामसुखा, निर्मल सामसुखा एवं सुबोध कोठारी खड़े हैं हमारी अगवानी को। सुबोध भाई को देख उनके पिताश्री जयचंदलालजी कोठारी की यादें मन मस्तिष्क में ताजा हो उठती हैं जो अणुव्रत के आधार स्तंभ एवं तत्त्वज्ञ श्रावक थे। जिनके सामने मेरा बचपन गुजरा था। संक्षिप्त चर्चा के उपरांत हम सभी तेरापंथ भवन गुवाहाटी पहुँचे। मुख्य द्वार पर सभा अध्यक्ष अभयराजजी डागा एवं मंत्री सुनीलजी सेठिया ने हमारा भावभरा स्वागत किया। सभा भवन में प्रवासित समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा के दर्शन कर हम कमरों की तरफ चले। भाई अभयराज डागा एवं सुनील सेठिया ने हमारे आवास एवं आतिथ्य का पूरा ध्यान रखा। प्रतिदिन हमारे साथ बैठ भोजन करते और हमें कोई दिक्कत न हो इसका पूरा-पूरा ध्यान रखते।

थकान होने के उपरांत भी मुझे नींद नहीं आई। विचारों का गुबार मन में उमड़ता-घुमड़ता रहा। नई जगह है। मैं परिचित भी नहीं हूँ, कैसे और किसके माध्यम से यात्रा के उद्देश्य पूरे होंगे ? फिर विचार आता है बाबूभाई और सम्पतजी इस क्षेत्र से परिचित हैं, उनकी पहिचान है। यही एकमात्र आस है जिसके सहारे संभवतः हम अपने लक्ष्य को पा लें। मुझे विचारों की उधेड़बुन में देख पांडेयजी कहते हैं बेकार ही परेशान हो रहे हैं। आपके साथ आचार्य तुलसी हैं, आचार्य महाप्रज्ञ हैं। हम तुलसीजी के काम को ही आगे बढ़ाने के लिये आये हैं। वे ही मार्ग निकालेंगे। अब आराम करिए डॉ. सा. सुबह सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेने के लिये समय पर पहुँचना है।

क्रमशः

अपरिग्रहः परमो धर्मः

कुसुम जैन

'अपरिग्रहः परमो धर्मः' यह जैन दर्शन का सशक्त स्वर है। सामान्यतः अहिंसा को परम धर्म कहा जाता है। पर तन्वतः अपरिग्रह के परिवेश में ही अहिंसा फलित हो सकती है। जहाँ परिग्रह है, वहाँ हिंसा का होना जरूरी है। इस दृष्टि से अहिंसा से भी उत्कृष्ट तत्त्व अपरिग्रह को मानना चाहिए।

सामाजिक विषमता का मूल है मनुष्य की असीमित आकांक्षा। आकांक्षाओं की सीमा करने के लिए भगवान महावीर ने सामाजिक संदर्भ में बारह व्रतों की परिकल्पना की। उन्होंने श्रावक के लिए कुछ विशेषण दिए जैसे अल्पेच्छ, अल्पारंभ, अल्प-परिग्रह। बारह व्रतों में श्रावक के इन्हीं विशेषणों की सार्थकता है। इनमें परिग्रह, भोग-परिभोग, यातायात आदि की सीमा करने का दिशा-निर्देश है। इस संदर्भ में विशेष प्रयोग की अपेक्षा है। यदि किसी उद्योग में छोटे-बड़े हर व्यक्ति सहभागी रहें, कोई मालिक या मजदूर न रहे तो आर्थिक और सामाजिक विषमता को दूर करने की दिशा में एक नयी क्रांति घटित हो जाए।

व्यक्ति जिस वृत्ति से चारों ओर से गृहीत हो जाता है उसे परिग्रह कहते हैं। परिग्रह के दो रूप हैं आंतरिक और बाह्य। आंतरिक परिग्रह आसक्ति या मूर्च्छा का नाम है। बाह्य परिग्रह का सम्बन्ध पदार्थ जगत से है। देह-धारणा की जब तक अपेक्षा है व्यक्ति पदार्थ जगत से निरपेक्ष नहीं हो सकता। जीवन-यात्रा में पड़ाव की प्रत्येक शृंखला वस्तु-निकट से अनुबंधित है। वस्तु स्वयं में परिग्रह या अपरिग्रह कुछ नहीं है। परिग्राहक की मनोवृत्ति परिग्रह और अपरिग्रह का विश्लेषण करती है।

गृहीत या अगृहीत वस्तु के प्रति जो आंतरिक लगाव है, आसक्ति है, मूर्च्छा है वह परिग्रह है। परिभोग्य वस्तु के प्रति अनासक्त मनोभावना वस्तु को परिग्रह की परिधि से बाहर रखती है, क्योंकि वह व्यक्ति को आत्म विस्तृत नहीं बनाता। आसक्त और अनासक्त व्यक्ति के भोग-परिभोग में बहुत अंतर है। दृश्य रूप से एक ही कर्म में प्रवृत्त दो व्यक्तियों में एकरूपता का दर्शन होता है किन्तु भीतर जो कर्म घटित होता है वह सर्वथा भिन्न होता है। बाह्य और भीतर का यह भेद आंखों से गम्य नहीं होता, इसके लिए बहुत गहरे में प्रवेश करना होता है।

वस्तु के उपभोग और संग्रह की बात तब उठती है जब उसकी प्राप्ति हो। अर्थ प्राप्ति में अनैतिक और अप्रामाणिक तरीकों को काम में लेने वाला व्यक्ति अपरिग्रह की भावना को जीवनगत नहीं कर सकता। जुआ, सट्टा आदि व्यवसाय, दुर्व्यसन के रूप में मान्य हैं। अपने छोटे से अर्जन की भी यथार्थता है। अपनी दिन भर की अर्जित पूंजी छह टकों में से एक टके का विसर्जन करने वाला व्यक्ति किसी समय हुआ था। वर्तमान में तो अपनी आय का एक प्रतिशत के विसर्जन की बात भी व्यक्ति को चौंका देती है, ऐसी स्थिति में अपरिग्रह के संस्कार कैसे बनेंगे?

परिग्रह के मार्ग पर अथक दौड़ नैतिक मूल्यों की प्रत्यक्ष अवहेलना है। अनीति से अर्जित अर्थ की सुरक्षा के लिए भी अनीति का आश्रय लेना पड़ता है। एक भूल हजार दुश्चिन्ताओं का निमित्त बनती है, वैसी ही एक अनीति हजार अनीतियों को जन्म देती है। अनैतिकता किसी एक मार्ग से नहीं आती, उसके आने के जितने द्वार हैं, वहाँ अपने विवेक को पहरुआ बनाकर खड़ा करने से ही अनैतिक वृत्तियों की घुसपैठ में अवरोध आ सकता है।

बी–5/263, यमुना विहार,
दिल्ली–110053

अणुव्रत आंदोलन या उसके जैसे दूसरे नैतिक आंदोलन नैतिक शिक्षण देने व सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के काम में तेजी लाएं।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

गरीबी हटाओ व रोजगार बढ़ाओ पर खरबों रुपए फूंकने के बाद आज आम आदमी की मुख्य चिंता देश के प्रति कुछ कर गुजरने की नहीं बल्कि रात होने से पहले दो किलो आटा और पाव भर दाल का जुगाड़ करने की है। थोड़ी में मौज मनाना और दाल रोटी खाकर प्रभु के गुण गाना अब उसके लिए सपने की बात रह गई है।

दाल रोटी से विमुख राजनीति

जसविंदर शर्मा

यह भी दुनिया का आठवां आश्चर्य है कि रोजमर्रा की वस्तुएं तो दिन-प्रतिदिन महंगी होती जा रही हैं और भोगविलास की चीजें जिन्हें कुछ साल पहले खरीदने के लिए आम आदमी को दस बार सोचना पड़ता था उनकी कीमतों में लगातार कमी आती जा रही है। एक तरफ जहाँ आटा, चीनी, चाय, दाल व चावल महंगे होते जा रहे हैं और मोबाइल, कार, कम्प्यूटर व टी.वी. सस्ते होते जा रहे हैं।

अपना एक चचेरा भाई लगा-लगाया काम धंधा छोड़कर एक डेरे के संत के चरणों में लोटपोट रहने लगा। वहीं की एक सुंदर कन्या से उसने शादी का जुगाड़ बिठा लिया। एक दिन एक मशहूर मंदिर की सीढ़ियों के बाहर मिल गया, बोला, 'भाया, आजकल दाल-रोटी का लंगर लगाता हूँ। सारे खर्च करके भी महीने में पचास हजार का मुनाफा हो जाता है।'

मुझे हैरानी हुई। मैंने इस सच्चे सौदे की तफसील पूछी तो वह अर्थपूर्ण मुस्कराकर बोला, 'ये लंगर मैं धार्मिक स्थानों पर लगाता हूँ। यहाँ लंगर खाने वाले भिखारी तो कम ही होते हैं मगर श्रद्धालु बहुत अधिक होते हैं। पांच रुपए की दाल-रोटी खाएंगे मगर दान कर पर्ची ग्यारह रुपए से कम नहीं कटवाएंगे। बस ऐसे ही प्रभु की दया से हर रोज हजारों का मुनाफा हो जाता है।'

सारे भारत में दाल-रोटी ही आम आदमी की मुख्य खुराक है। यहाँ हर मुद्दे पर खून-खच्चर होता है मगर किसी राज्य के मुख्यमंत्री या केन्द्र के किसी वित्त मंत्री के भाषण में दाल-रोटी का ब्यान नहीं मिलता। एक बार वित्त मंत्री ने मोबाइल कॉल सस्ते करने की जरूरत समझाते हुए यह बेसिर पैर की दलील दी थी कि इसका प्रयोग भारत के अस्सी करोड़ लोग करते हैं परन्तु उन्होंने रोटी, चावल या चीनी सस्ती करने की बात नहीं की जिसका प्रयोग सारे लोग करते हैं।

रोटी को इन्सान की पहली जरूरत इसलिये बताया जाता है क्योंकि भूखे पेट तो चांद भी रोटी नजर आता है। सारा दर्शन, धर्म और संसार मिथ्या नजर आता है अगर घर की रसोई के पीपे में राशन का जुगाड़ न हो। सच कहा गया है, 'भूखे भजन न होई गोपाला, ये ले अपनी कंठी माला।' पंजाबी में एक कहावत है, 'पेट न डाली रोटियां तो सारी बातें खोटियां।' हरेक कारोबार का पर्यायवाची शब्द रोजी-रोटी ही है।

रोटी की सबसे नजदीकी हमजोली है दाल। दाल ही वह नायाब चीज है कम से कम जिसके साथ मिलकर रोटी गरीब-गुरबे के गले के नीचे उतरकर उसकी आंखें खोलती है और जिसके बाद आम आदमी फिर से नून, तेल व लकड़ी की अन्तहीन लड़ाई में लग जाता है। परमाणु डील, जी-8, कोपहेगन सम्मेलन या ओलम्पिक खेलों से आम आदमी का दूर-दूर का भी नाता नहीं है। उसे तो तीन वक्त रोटी मिल जाए, तन पर जैसा-कैसा कपड़ा हो या सिर पर छप्पर या खुला आसमान हो तो वह मस्त होकर धरती के विलासी राजा और आसमान के दयालु प्रभु के गुण गाता थकता नहीं है।

यह कड़वी सच्चाई है कि हमारे देश की एक तिहाई जनता को इज्जत की दाल रोटी नसीब नहीं होती। चिकन सस्ता है मगर दाल की कीमतें आसमान को छू रही हैं। हैरत है कि कल ये लोग अपने हिस्से के मक्खन, मेवा या पीजा मांगने लगे तो सरकार किस कंदरा में जाकर छिपेगी। गरीबी हटाओ व रोजगार बढ़ाओ पर खरबों रुपए फूंकने के बाद आज आम आदमी की मुख्य चिंता देश के प्रति कुछ कर गुजरने की नहीं बल्कि रात होने से पहले दो किलो आटा और पाव भर दाल का जुगाड़ करने की है। थोड़ी में मौज मनाना और दाल रोटी खाकर प्रभु के गुण गाना अब उसके लिए सपने की बात रह गई है।

5/2डी, रेल विहार, मंसा देवी, पंचकुला–134109 (हरियाणा)

आम नज़र से हट कर

डॉ. भगवतीलाल व्यास

खामियां मुझमें हैं
खामियां तुममें हैं
खामियां उनमें हैं
यानी जहाँ आदमी होंगे
वहाँ खामियां होंगी
वैसे खामियां
किसमें नहीं होती?

■

आंखें जो तुम्हें मिली हैं
आंखें जो मुझे मिली हैं
क्या इसलिए नहीं मिली कि
हम उजला सवेरा देखें
खिलते हुए कमल देखें
गाय के पास खड़ा
बछड़ा देखें
उसकी आंखों की
वह चमक देखें
जो अपने कंधे पर
जुआ रखे जाने से पहले
कितने रंग देख
लेना चाहता है
तुम्हारी और मेरी
इस दुनिया के?
इस बछड़े के सपनों को
छीनने वाले
हम कौन होते हैं?

■

ज़िन्दगी का
कितना बड़ा हिस्सा
गुज़र जाता है
सिर्फ धुआं देखते
कितने शब्द खर्च कर देते हैं हम
बेतरतीब आवाजों की
कड़वाहट के लिए।
हम अपने सामने वाली
कुर्सी पर बैठे
वक्त के सिर पर सींग तो
देख लेते हैं
पर दोस्ती के लिए आतुर
बढ़ा हुआ हाथ
नहीं देख पाते उसका।

■

वक्त का चेहरा
बेडौल हो सकता है
पर हर बेडौल चीज
डरावनी नहीं होती
अगर हम यह बात
जान लें
तो यही वक्त
हमें बदला हुआ लगेगा
हालांकि वहाँ
बदला हुआ
कुछ भी नहीं होगा।

■

हम क्यों भूल जाते हैं
कि अगर हम चीजों को
आम नज़र से हट कर
देखने का अभ्यास करें तो
चीजें भले ही न बदलें
मगर हमारी
ज़िन्दगी बदल सकती है

■■

35, खारोल कॉलोनी, फतहपुरा
उदयपुर (राजस्थान) 313004

गर्व से कहो हम ढोंगी हैं

स्वामी वाहिद काज़मी

आजकल एक तमाशा बड़े शौक से लोक लुभावन अंदाज़ में, हम आप सभी की दृष्टि से नित्य ही गुज़रता है। दोपहिया, तीन पहिया, चौपहिया वाहनों के माथे पर राम जाने किन-किन बाबाओं, महाराजों, देवियों, माताओं, इष्ट देवों के जयकारे अंकित रहते हैं। कभी-कभी उनकी छवि भी अंकित की नज़र आ जाती है। एक बार मुझे एक ऐसी कार भी नज़र आई जिस पर अंकित था 'या ख्वाजा'। इस प्रकार के अंकन का आखिर यही मतलब है न कि हम बड़े धर्मप्रेमी है। धार्मिक हैं। ईश-प्रेमी हैं। इनसे हमारा प्रगाढ़ सम्बन्ध है। किन्तु बुरा न लगे तो पूछ लूं कि इस प्रकार से, जिसे वास्तव में धर्म कहें, ईश्वर कहें, उससे कोई गहरा-उथला संबंध प्रकट होता है या महज़ दिखावा? प्रदर्शन? ढोंग?

सही अर्थों में किसी तपस्वी, यति, साधक को भी इस प्रकार का प्रचार करते नहीं देखा। कोई अपने या अपने वाहन के माथे पर नहीं लिखता 'मेरे पिताजी की जय', 'हमारी अम्माजान की जय', 'मेरी भाभी रक्षा करें', 'मेरे भाई की कृपा' इत्यादि। क्योंकि पता है, प्रचार क्या करना। काहे का जयकारा। वे हमारे अपने सगे परिजन हैं। उनसे हमारा क्या सम्बन्ध, कौन-सा रिश्ता-नाता है। प्रेम की डोर से बंधे हैं। धर्म से, प्रेम से हमारा कोई सरोकार नहीं इसलिए प्रचार करना है। हद तो यह है कि हमने सच्चे कर्मकांडों को भी तमाशा बना दिया है।

अगर हमें वास्तव में किसी से प्रेम हो तो प्रेमपात्र के स्मरण, नाम रटन, मिलन आदि की लालसा निरंतर रहती ही है। फिर कर्त्तव्य, नसीहत, समझावन, उपदेश की कोई आवश्यकता व सत्ता नहीं रह जाती। प्रेमिका से, प्रेयसी से, प्रेमी से वास्तव में प्रेम के कारण उसी की चर्चा भली लगती है। गुण-कथन सुहाते हैं। अंत में उसी की छवि रहती है। सोते-जागते, उठते-बैठते, उसकी तरफ ध्यान (लौ, लगन, सुध) लगा रहता है। ईश्वर से, धर्म से, ज़रा भी प्रेम नहीं इसलिए उसे याद करने की नसीहतें दी जाती हैं। प्रेमिका से, प्रेमी से प्रेम के कारण नाना प्रकार की बाधाएं, कठिनाइयां, समस्याएं आ सकती हैं फिर भी हमारा मन उसकी ओर उन्मुख नहीं होता। तो मंदिर सजाने पड़ते हैं। मस्जिदें खड़ी करनी पड़ती हैं। गिरजों, गुरुद्वारों का ठाठ बनाना पड़ता है। लाउड-स्पीकरों से चिल्लाना पड़ता है। घंटे-घड़ियाल बजाने पड़ते हैं। भैया आओ, भजन करो। पूजा करो। कीर्तन करो। कथा सुनो। जमाअत बनाकर घर-घर गुहार लगानी पड़ती हैं नमाज़ पढ़ो। इबादत करो। स्वर्ग के, जन्नत के प्रलोभन देने पड़ते हैं। जागरण के, शोभा यात्राओं के समारोह करने पड़ते हैं। प्रेयसी बेवफाई भी करे तब भी प्रेमीजन, प्रेमीमन, उसी को सिजदे करता है। प्रेमिका, प्रेमी बदसूरत हो तो भी अति सुंदर लगता है! ईश्वर हम पर जाने कितनी सम्पदा मुफ्त लुटाता है, पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता तो प्रेम ही जड़ है, मूल है, मुहब्बत ही आधार है। सरोकार है! बाबा फरीद शकरगंज की तालीम थी कि अगर प्रेम नहीं है तो खुदा के बारे में कुछ भी नहीं समझा जा सकता। महाप्रभु चैतन्य को कोड़े पड़ते हैं, फूल जैसे लगते हैं। मीरा को ज़हर नज़र नहीं आता। सांप नहीं सुझाई पड़ता। राबिआ बसरी खुदा से प्रेम के कारण नबी से प्रेम की जगह भी अपने भीतर नहीं पातीं। शैतान से घृणा कैसे हो! तात्पर्य यह कि प्रेम ही प्रमुख है। प्रधान है। प्रथम है। प्रेम हो तो सब कुछ अपने आप हो जाता है। लौकिक, सांसारिक प्रेम करने वाला प्रेमी या प्रेयसी भी यह प्रचार नहीं करती 'काले सूट वाले की जय', 'लाल दुपट्टे वाली की जय', 'नीली जींस पीले टॉप वाली की जय।' 'ग्रे सलवार-सूटवाली की जय', 'गुलाबी साड़ी वाली की जय।' और सो और सार्वजनिक तौर पर नाम भी नहीं लिया जाता! जानते हैं उसी से सरोकार है। उसी का दारोमदार है। प्रचार क्या करना!

थोड़ी देर के लिए इसे दरगुज़र कीजिए कि वास्तव में ईश्वर है कि नहीं! चलिए कल्पना ही सही। सपना ही सही। विचार ही सही। किन्तु किसी न किसी सर्वशक्तिमान सत्ता को तो मानिएगा। बस यदि उससे प्रेम हो तो सब कुछ अपने आप होने लगता है। सारा संसार, अखिल ब्रह्माण्ड उसी की रचना है। तमाम प्राणी व जीवधारी उसी की संतानें हैं। ऐसा विश्वास संसार और उसके वासियों को नष्ट करने के इरादे से मिसाइलों व एटम बमों का निर्माण होने देगा क्या? बंदों को सताने, दुख देने, करुणा, दया, आत्मीयता, संवेदनशीलता अपने आप बहने लगेगी। इस प्रकार प्रेमपूर्ण व्यक्ति सांसारिक, सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक अर्थात प्रत्येक दृष्टि से एक नेक, एक अच्छा इन्सान होने के रास्ते पर चल सकता है। वास्तव में प्रेम हो तो फिर अलग से किसी कर्मकांड, इबादत, भक्ति, पूजन-अर्चन आदि का ढोंग करना, प्रपंच अपनाना व्यर्थ हो जाएगा। सचमुच निष्ठापूर्वक जो करें अच्छी बात है। प्रदर्शन नहीं। दिखावा नहीं।

जहाँ तक प्रेम की बात है तो छोड़ें

ईश्वर को, अल्लाह को, गॉड को। उसके स्थान पर देश को रख लें। ज्ञान, विद्या, इल्म, हुनर, कला को रख लें। नैतिकता तथा मानवता को रख लें (जैसे भगवान बुद्ध और भगवान महावीर ने ईश्वर का नाम भी नहीं लिया, पर सदाचरण पर, अहिंसा पर ज़ोर देकर मनुष्य को श्रेष्ठता का व्यावहारिक और प्रामाणिकता का पाठ पढ़ा कर एक बेहतरीन इन्सान बनाने का रसायन प्रदान कर दिया। मगर हम वास्तव में किसी लौकिक-अलौकिक सत्ता, गुण या व्यक्ति के प्रेम में पड़ते हैं, न धर्म में। प्रेम और धर्म दोनों का महज़ दिखावा करने के लिए नाना प्रकार के तमाशे, स्वांग, आडम्बर, प्रपंच, प्रदर्शन करते हैं। अतः गर्व से कहो हम ढोंगी हैं।

10 राज होटल, पुल चमेली,
अम्बाला छावनी 133001 (हरियाणा)

नियम संख्या 8 के अनुसार

अणुव्रत पाक्षिक का स्वत्वाधिकार संबंधी विवरण

1. प्रकाशन स्थल	:	210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली–110002
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम	:	राजीव जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	बुकमैन प्रिंटर्स ए–121, विकास मार्ग शकरपुर, दिल्ली–110092
4. प्रकाशक का नाम	:	विजयराज सुराणा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002
5. संपादक का नाम	:	डॉ. महेन्द्र कर्णावट
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	करुणा क्लिनिक राजसमंद–313326 (राजस्थान)
6. स्वत्वाधिकार	:	अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली–110002

मैं विजयराज सुराणा घोषित करता हूँ कि मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य हैं।

01–04–2010 **विजयराज सुराणा**
(प्रकाशक)

उस पार

डॉ. मदन डांगी

यह जीवन की नौका
नदी के उस पार जाने को
कब से बेकरार है।
इस किनारे रुदन ही रुदन
उस किनारे पर
उन्मुक्त हंसी की फंवार है।

वहाँ न कोई विधि-विधान
न मान्यताओं परम्पराओं
का चक्कर है
जैसे चाहो अपने ढंग से रहो
हर आदमी हर पल
सब जगह स्वतंत्र है।

अपने पराये का मोह व भेद
केवल इस पार ही
हमेशा विद्यमान है
वहाँ की हर चीज है अपनी
यद्यपि न कोई
जान है न कोई पहचान है।

इस किनारे पर लगता है डर
उस पार तक
जाने का पहुँचने का
डगमगाते हैं पैर सिर्फ
जब सीखा नहीं
उसूल चलने का।

यदि चलकर हिम्मत से
पहुँच गये लगन से
लौटना नहीं चाहोगे
देख कर परम शान्ति
सुख का अपार सागर
दूसरों को बुलाओगे।

आमेट (राजसमंद–राजस्थान)

मासूम बचपन को बचायें

मंजू मंगलप्रभात लोढ़ा

हमारा जीवन अनेक प्रार्थनाओं के बाद का परिणाम है। जीवन को अच्छी तरह, शांति और संतुष्टि से जीना ही इसकी सफलता का द्योतक है। आजकल सुबह का अखबार पढ़ते ही लगता है, जीवन कितना मूल्यहीन और सस्ता हो गया है। बच्चों में लगातार बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति हमें किस अंधेरी खाई की तरफ ले जा रही है? क्या परीक्षा का नतीजा या चंद चीजें न पाने का दुःख जिंदगी से बड़ा हो गया है? क्या मृत्यु जीवन का पर्याय बन गई है?

आखिरकार यह किस तरह का दबाव है, यह कैसा तनाव है, इस पर हम सभी को गहराई से विचार करना होगा।

आजकल बड़े-बड़े ... बातें हो रही हैं। गगनचुं... साज-सज्जा से नि... विमान, चांद औ... की होड़। लेकि... संस्कारों का ... हैं। ... बच्चों ... लिए ... का, ... उनकी ... नहीं है। ...

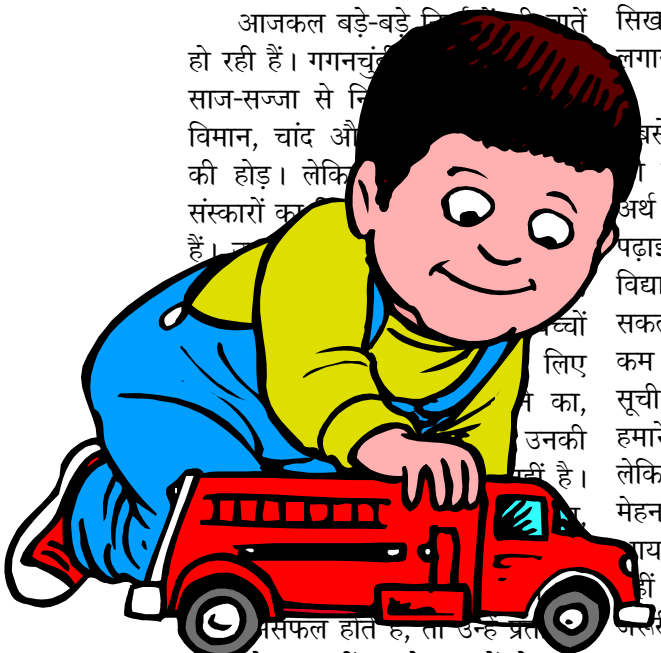

... असफल होते हैं, तो उन्हें प्रता... करने से हम नहीं चूकते। दूसरों के साथ उसकी तुलना करते हैं, बात-बात पर उन्हें ताना देते हैं और यह मासूम हतोत्साहित हो जाते हैं, और इन एक से छुटकारा पाने का उन्हें एक ही हल नजर आता है ''आत्महत्या'', जीवन पर मौत की विजय का रास्ता। उन्हें जिंदगी किस ढंग से गुजारनी चाहिए, वह हम सिखा नहीं पाते, और मौत को गले लगाने के वह सौ साधन जानते हैं।

कुछ दिन पहले मैंने दुनिया के सबसे सफल लोगों में अग्रणी बिल गेट्स की कही एक बात पढ़ी थी। जिसका अर्थ कुछ इस तरह से है ''स्कूल की पढ़ाई में हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थी, जीवन की दौड़ में पिछड़ सकता है, वही विद्यालय की पढ़ाई में कम अंक प्राप्त छात्र सफल लोगों की सूची में अपना स्थान बना सकता है।'' हमारे बाप-दादा कम पढ़े-लिखे थे, लेकिन उन्होंने अपने व्यावहारिक ज्ञान, मेहनत, लगन निष्ठा से सफलता के नये आयामों को छुआ। इसका यह अर्थ नहीं कि हम पढ़ें नहीं। पढ़ना बहुत जरूरी है, (मगर, केवल किताबी कीड़े बनकर नहीं रहें) पढ़ाई के मर्म को समझें, जानें, गुणें। ज्ञान का सागर तो अथाह है। जितना प्राप्त करो कम है। पढ़ें सिर्फ नौकरी के लिये नहीं, प्रतियोगिता के लिए नहीं। बल्कि विद्या के लिये, ज्ञान प्राप्ति के लिए।

इसके लिये हमें विद्यालयों के व्यावहारिक ज्ञान का, आनंद का, उमंग का, खुशी का केन्द्र बनाना होगा। जापान के (तोमेये) जैसे स्कूल बनाने होंगे। जहाँ बच्चे स्कूल से घर वापस नहीं आना चाहते। क्योंकि वहाँ पढ़ाई उनके लिये बोझ नहीं, तनाव नहीं, दबाव नहीं। शिक्षाविद् सोसाकु कोबायासी द्वारा रेल के पुराने डिब्बों पर संचालित इस स्कूल में शिक्षा प्राप्त छात्रा तेत्सुको कुरोयानगी ने 'तोत्तोचान' पुस्तक में अपने संस्मरणों में लिखा है, ''मेरा पक्का विश्वास है कि अगर तोमेयो जैसे ढेरों स्कूल होते तो चारों ओर व्याप्त हिंसा कम होती और इतने बच्चे स्कूलों से पलायन न करते। तोमेये में स्कूली घंटे खत्म होने के बाद भी कोई बच्चा घर लौटना नहीं चाहता था और हर सुबह सबको स्कूल पहुँचने की उतावली रहती थी। ऐसा था हमारा स्कूल'' (योगेश चंद्र बहुगुणा द्वारा 'नवनीत' में लिखित लेख से साभार) अन्यथा परीक्षाएं होती हैं और बच्चे किताबों को बोझ की तरह उतार फेंकते हैं। संभवतः इसलिये गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर ने स्कूलों को

'कारागृह' और महान शिक्षक गिजु आर्ड ने उन्हें 'वधस्थल' की संज्ञा दी है।

मेरी अभिभावकों से यही विनती है कि अपने बच्चों को चोरासी लाख योनियों में से प्राप्त इस अमूल्य जीवन का सच्चा महत्त्व समझायें। बच्चों को सिर्फ नौकरियों की दौड़ में शामिल न कर, उन्हें छोटे-छोटे गृह उद्योगों के लिये प्रेरित करें। सरकारी तंत्र भी इसमें अपना भरपूर सहयोग दे। उनके अंदर छिपी वास्तविक प्रतिभा को पहचान कर, उसे विकसित करें, उन्हें अपना मनपसंद व्यवसाय, मार्ग चुनने में मदद करें। फिल्म 'तारे जमीन पर' के उस शिक्षक को याद करें जिसने बच्चे की सही प्रतिभा को पहचान कर उसे मार्गदर्शित कर, जीने का एक नया मकसद दिया, एक नई राह दिखाई।

माता-पिता, शिक्षक, सरकार सभी अपनी जिम्मेदारियों को समझें ताकि बचपन को बेमौत मरने से बचाया जा सके। मासूम बचपन को खिलने से पहले मुरझाना न पड़े। आत्महत्या तभी कोई करता है, जब वह मन से एकदम हार जाता है, तो अंतिम विकल्प उसके पास यही रह जाता है, क्योंकि संघर्षों से मुकाबला करने की शिक्षा हम उन्हें नहीं दे पाते हैं। बच्चों याद रखो ''जीवन बहुत अनमोल है, मन के जीते जीत और मन के हारे हार। अपने मन की, अपनी सोच को मजबूत बनाओ, भीतर का प्रकाश जलाओ जो जिंदगी जीने के कई कई दरवाजे खोल देता है। यह प्रकाश पुंज अंधेरे को भगायेगा, इन किरणों के सामने स्याह अंधेरा स्वयं घट जायेगा ओर एक नया सवेरा तुम्हारे द्वार पर स्वयं दस्तक देगा।''

'छूकर के पाषाणों को जो भगवान बना लेते हैं,

विधि के निष्ठुर अभिशापों को जो वरदान बना लेते हैं।

वही वीर है, जो विपत्ति में नव उल्लास लिये चलते हैं,

सांस-सांस में नवजीवन का नया इतिहास लिये चलते हैं।

शोषक व्यवस्थाएं

रजनीकांत शुक्ल

एक बार एक व्यक्ति शहर से गांव में गया। उसे किसी कारणवश तेल की जरूरत महसूस हुई तो वह गांव के तेल विक्रेता के पास पहुँचा। पुराने समय की बात है तेल विक्रेता अपने बैल को चलाता हुआ बड़े मजे से कोल्हू से तेल निकाल रहा था। ग्राहक आया देखकर तेल विक्रेता बैल को कोल्हू के इर्द-गिर्द घूमता छोड़कर तेल तौलने आ गया। ग्राहक को विस्मय हुआ कि तेल विक्रेता के बैल के पीछे से आ जाने पर भी बैल का कोल्हू के आसपास घूमना रुका नहीं। उसने तेल विक्रेता से पूछा भैया, ये बैल तुम्हारे यहाँ आने पर भी रुका क्यों नहीं?

तेल विक्रेता ने मुस्कराते हुए कहा मैंने उसकी आंखों पर पट्टी जो बांध रखी है। उसे कैसे पता चलेगा कि मैं उसे नहीं देख रहा हूँ। ग्राहक ने फिर जिज्ञासा प्रकट की कि मान लो कि बैल ये समझ जाए कि तुम मुझसे बातें कर रहे हो उधर नहीं देख रहे। तेल विक्रेता ने गर्व से सिर हिलाते हुए कहा तुमने क्या मुझे इतना मूर्ख समझा है। बैल के गले में बंधी हुई घंटी को नहीं देख रहे हो जो बैल के चलने पर लगातार हिलती और आवाज करती है जिससे मुझे उसे देखे बिना भी चलते रहने का पता लगता रहता है।

ग्राहक ने हैरान होकर एक बार फिर पूछा वाह आपकी व्यवस्था तो बहुत अच्छी है लेकिन मेरे भाई, एक बात तो बताओ? मान लो बैल एक जगह पर रुक जाए और नियमित अंतराल पर गर्दन हिलाता हुआ घंटी बजाता रहे जैसे कि वह चल रहा हो तब तुम्हें कैसे पता चलेगा कि बैल नहीं चल रहा है!

अब तेल विक्रेता के कान खड़े हो गए। वह हड़बड़ाता हुआ बोला भैया, तुम इस गांव में नए आए मालूम होते हो क्योंकि अभी तक मेरी ये सारी व्यवस्थाएं चाक-चौबन्द चल रही है अगर गलती से भी ये बातें कहीं मेरे इस बैल के कान में पड़ गईं तो मेरा ये सारा धंधा चौपट हो जाएगा। आप जल्दी से अपना तेल लो और रास्ता नापो।

एफ. 380 एफ.,
सेक्टर–12, विजयनगर
गाजियाबाद 201009 (उ.प्र.)

बापू की अनोखी शर्त

■ डॉ. शुभंकर बनर्जी ■

महात्मा गांधी ने साबरमती आश्रम का स्थान जान-बूझ सबसे पिछड़े क्षेत्र से चुना, ताकि इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर वहां कार्य किया जाए। सत्य और अहिंसा के आधार पर उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की नींव ऐसी रखी कि पूरे विश्व में उनकी और उनके आश्रम की खूब चर्चा होने लगी। जिस तरह रजनीगंधा का एक फूल ही सारी रात पूरे क्षेत्र को सुगंधित कर देता है उसी तरह से साबरमती आश्रम का नाम चारों और फैलने लगा। विशेषतौर पर सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा आदि मानवीयता आधारित उनकी संकल्पना की ख्याति पूरे विश्व में फैल गयी।

एक ईसाई धर्म प्रचारक फादर ने जब उनकी ख्याति सुनी तो सोचा क्यों न साबरमती आश्रम जाकर गांधीजी के दर्शन तथा कामकाज का अनुभव पास से प्राप्त किया जाए? अतः वहाँ जाने से पहले तथा अनुमति लेने के लिए उन्होंने गांधीजी को पत्र लिखा। जिसका मुख्य आशय इस प्रकार था, ''आपने अहिंसा, प्रेम तथा करुणा आदि सिद्धांत के आधार पर स्वतंत्रता का आंदोलन चलाया, उससे हमें काफी प्रेरणा मिली है। अतः हम आपके आश्रम आना चाहते हैं ताकि हमें पास से आपके कामकाज के ढंग का अनुभव प्राप्त हो सके। हम आपसे यह वायदा करते हैं कि आश्रम में आकर हम प्रभु ईशु के धर्म से सम्बन्धित कोई चर्चा नहीं करेंगे तथा ईसाई धर्म का प्रचार भी नहीं करेंगे। यदि आप स्वीकृति दें तो आपकी अनुमति प्राप्त कर हम आश्रम आने का कार्यक्रम बना सकते हैं।''

गांधी ने तत्काल उस ईसाई धर्म प्रचारक को अपना उत्तर कुछ इस तरह दिया, ''आपने आश्रम में आने का कार्यक्रम बनाया जिसके लिए आपका धन्यवाद एवं सादर स्वागत है। परंतु आश्रम आने से पहले मेरी भी एक शर्त का पालन आपको करना है। आप मुझे वचन दीजिए कि आप और आपके दल के विद्वान हमें इस बात का ज्ञान अवश्य देंगे कि महात्मा यीशु प्रभु ने मूलतः क्या उपदेश ईसाई धर्म के विषय में दिया है। हमें उनकी दी गयी शिक्षा से वंचित मत कीजिए, बस यही मेरी सामान्य सी शर्त है।''

उनका पत्रोत्तर पाकर फादर महोदय आश्चर्यचकित हो गये और गद्‌गद् होकर तत्काल साबरमती जाने का कार्यक्रम बनाया। उन्होंने लिखा, ''महात्माजी! हमें आपकी शर्त सहर्ष स्वीकार है। यदि पूरी दुनिया में विचारों तथा सिद्धांतों का आदान-प्रदान तथा विचार-विमर्श सभी इसी तरह आपका अनुयायी बन कर करते रहें तो विश्वशांति स्थापित अवश्य हो सकती है।''

साबरमती आश्रम आकर उन्होंने तथा उनके दल के सदस्यों ने गांधीजी के सत्य-अहिंसा के सिद्धांत का न केवल अनुभव प्राप्त किया बल्कि भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान का रसास्वादन भी किया। वेद-वेदांत, उपनिषदों तथा पुराणों के सारतत्व पर गांधीजी ने उनसे चर्चा की तथा प्रभु यीशु की शांति तथा करुणा के संदेशों को भी ग्रहण किया।

बापू का अहिंसात्मक आंदोलन महज अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई तक ही सीमित नहीं थी बल्कि मानवता तथा विश्व बंधुत्व की रक्षा का अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन भी था जिसके अंतर्गत प्रेम से वैश्विक समुदाय के हृदय पर जीत प्राप्त करना उनका मूल उद्देश्य था।

उक्त ईसाई धर्म प्रचारक फादर पर इस मुलाकात तथा वैचारिक आदान-प्रदान का गहरा प्रभाव पड़ा तथा प्रभु यीशु की वाणी के प्रचारक के तौर पर उन्होंने जब कभी भाषण या उपदेश दिया तो उन्होंने उपर्युक्त अनुभव के विषय में अवश्य बताया। उन्होंने आजीवन गांधीजी से प्राप्त भारतीय दर्शन के ज्ञान का सदुपयोग किया और वे महात्माजी के अहिंसात्मक आंदोलन के अंतर्राष्ट्रीय पक्ष को सदैव उजागर करते रहे।

अंततः यह कहना सर्वथा उचित होगा कि बापू का अहिंसात्मक आंदोलन महज अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी की लड़ाई तक ही सीमित नहीं था बल्कि मानवता तथा विश्व बंधुत्व की रक्षा का एक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन भी था। जिसके अंतर्गत प्रेम से वैश्विक समुदाय के हृदय पर जीत प्राप्त करना उनका मूल उद्देश्य था। इस तरह से विश्व शांति स्थापित करने के लिए उन्होंने अहिंसा के अग्रदूत की भूमिका निभाई थी।

श्री राधाकृष्ण निवास,
5, स्वर्ग आश्रम, वेस्ट मुखर्जी नगर,
दिल्ली –110009

एक अकेला दो से ग्यारह

सत्यनारायण भटनागर

चंपक वन में एक माध्यमिक पाठशाला है। इस पाठशाला की कक्षा आठ में आज वन के जानवर आनंद मना रहे थे। चिंटू खरगोश ने खबर दी कि आज मेडम श्यामा हिरणी अवंकाश पर है। इसलिए गणित की कक्षा नहीं होगी। चिंटू की खबर के बाद सभी अपने दोस्तों के साथ मस्ती करने लगे।

अभी थोड़ी देर हुई थी कि कक्षा के मॉनीटर बंटू बंदर ने खबर दी कि आज की कक्षा हाथी दादा लेंगे। वे आ रहे हैं, सब अपनी जगह पर शांति से बैठ जाएं। सब जल्दी-जल्दी बैठ गए।

हाथी दादा थोड़ी देर में ही आ गए। वे बैठ गए टेबल पर। बोले, ''बच्चों बोलो क्या पढ़ना चाहते हो?''

मॉनीटर बंटू बंदर खड़ा हुआ। बोला, ''सर कक्षा तो गणित की है फिर आप जो चाहे, पढ़ावे।''

हाथी दादा बोले, ''हम तुम्हें हिन्दी की कहावतें गणित में पढ़ाएंगे।''

वाइटी खरगोश, रामा हिरणी और भालू भैय्या अचरज से उसे देखने लगे। भाषा में गणित कैसा होगा।

हाथी दादा इसे समझ गए। बोले, ''हिन्दी भाषा में गणित है।'' अच्छा वाइटी खरगोश बोलो, ''तीन और दो कितने होते हैं?''

वाइटी खरगोश खड़ा हुआ। बोला ''सर तीन दो पाँच।''

हाथी दादा मुस्काए। बोले, ''ज्यादा तीन दो पाँच मत करो। बोलो क्या अर्थ हुआ है?''

सब हँस दिए। भोलू बोला, ''सर व्यर्थ के तर्क-वितर्क करने को मना किया है।''

हाथी दादा बोले, ''अच्छा बताओ नौ दो कितने होते हैं?''

मिकू रिकू सियार चिल्लाए ''ग्यारह।''

हाथी दादा हँस दिए, बोले ''तीन दो पाँच मत करो, नौ दो ग्यारह हो जाओ।''

सारी कक्षा हँस दी। हाथी दादा ब्लैक बोर्ड पर आ गए और लिखा छत्तीस। बच्चों से पूछा, ''बताओ छत्तीस का आंकड़ा किसे कहेंगे?''

मॉनीटर बंटू बंदर उठकर खड़ा हुआ। बोला, ''सर जब दो व्यक्ति एक-दूसरे के विपरीत होते हैं तो कहते हैं, इनमें छत्तीस का आंकड़ा है अर्थात् लड़ाई है।''

रामा हिरणी ने कहा, ''सर यह तो सरल है। हमारे संबंध तैंतीस के हों तो मित्र भाव हो सकता है।''

हाथी दादा बोले, ''बेटी श्यामा तुमने ठीक कहा, एक मत हो तो तैंतीस के अंक जैसे संबंध होते हैं। कोई भी अंक जब एक जैसे दो बार लिख दिए जाएं तो मित्र भाव उत्पन्न होता है। हममें आपस में मित्रभाव हो तो संगठन मजबूत होता है। एकता में बड़ा बल होता है। अच्छा बच्चों बताओ एक और एक कितने होते हैं?''

श्यामा हिरणी ने कहा, ''यह तो बहुत सरल है। दो होते हैं।''

हाथी दादा हँसने लगे, बोले ''हिन्दी में एक कहावत है, एक अकेला, दो ग्यारह'' इसका अर्थ समझो।

बंटू मॉनीटर ने कहा, ''सर एक पर एक हो तो ग्यारह हो जाते हैं दो नहीं होते। यही इस कहावत का अर्थ है।''

हाथी दादा बोले, ''बच्चों यह बिल्कुल ठीक है। हम अलग रहे तो एक और एक दो ही होते हैं पर यदि एक के साथ एक हो तो ग्यारह हो जाते हैं। संगठन में बड़ा बल है। मित्र भाव में रहने में शक्ति है।

हाथी दादा आगे बोले, ''बच्चों एकता की भावना सफलता की कुंजी है। देखो भाषा में भी गणित होता है ना! तो तुम सब अब मुहावरों में गणित के अंक खोजो बड़ा मजा आएगा। अगली बार फिर इस पर बात करेंगे।''

2, एम.आई.जी. देवरा देव नारायण नगर, रतलाम (म.प्र.) 457001

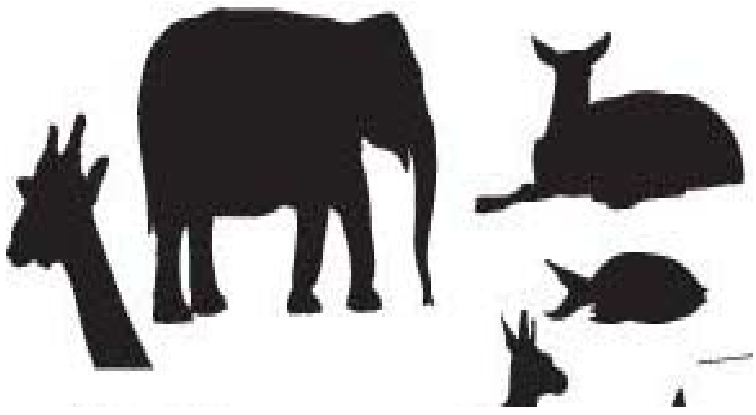

पाठकों के स्वर

● आचार्य महाप्रज्ञजी! सादर चरण स्पर्श। मैं महंत लक्ष्मीदास (काशी) स्थायी निवास बाढ (पटना-बिहार) है। मेरी वर्तमान आयु 95 वर्ष है। मैं अभी पूर्ण स्वस्थ हूँ और एक-डेढ़ किलोमीटर पैदल चल लेता हूँ। मैं अणुव्रत के विचारों से पिछले 10 वर्षों से प्रभावित हूँ। इस इलाके में अणुव्रत का काम प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' देख रहे हैं। वे कोई भेदभाव नहीं करते। समाज का हर व्यक्ति उनकी इज्जत करता है। अणुव्रत के प्रति रुझान और अहिंसा प्रशिक्षण के काम में बाढ़ क्षेत्र को नक्सली क्षेत्र होने से बचा लिया है। इन दिनों बाढ़ अहिंसा केन्द्र में सभी जाति के भाई-बहिन सीखने आते हैं। जिनमें मुसलमान भी काफी हैं। सभी को रोजगार के साथ-साथ शाकाहार, मेल-मिलाप एवं प्रेम से रहने तथा किसी से भेदभाव नहीं रखना सिखाया जाता है। रोज तीन सौ के आसपास लोग आचार्यश्री के नाम और अणुव्रत गीत से दिन का कार्य शुरू करते हैं।

आचार्यजी! इन दिनों अहिंसा केन्द्र में मेरी छोटी बहू सिलाई-पेन्टिंग, कसीदाकारी का प्रशिक्षण ले रही है। उसने एक महीने में इतना हुनर सीखा है। उसमें बहुत विनम्रता आयी है। उसकी बोली, वचन और सेवाभाव ऐसा बढ़ा है कि हमारा पूरा परिवार दंग रह गया है। परिवार के लोग तो इसे चमत्कार ही मानते हैं। बाढ़ के लोग इस केन्द्र को इंसान का कारखाना मानने लगे हैं। सचमुच यह आपकी प्रेरणा से हो रहा है। आप सचमुच भाग्यविधाता हैं।

मेरी आयु 95 वर्ष की है। मैं पासवान कुल का बालक हूँ। कबीरपंथ का सेवक हूँ। मुझे काशी में महन्ती मिली, जमीन सम्पत्ति सब मिल रही थी, किन्तु मैंने सबकुछ त्याग कर अपनी कमाई करके अपना जीवन निर्वाह और संत सेवा का रास्ता चुना। मेरी पत्नी, बच्चे सभी कबीर संप्रदाय के हैं। मेरी लम्बी आयु का राज है शाकाहार और नशामुक्त जीवन शैली। मैं कवि हूँ, कबीर साहेब पर तीन छोटी किताबें लिखी और छपी हैं। मेरे साहित्य जीवन को बढ़ावा देने वाले प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' हैं। इन्होंने मुझे लिखने और छपवाने की प्रेरणा दी। न केवल मुझे वरन् अनगिनत लोगों के प्रेरणा के स्रोत हैं सुमनजी। इन्होंने बाढ़ में महावीर और कबीर को एक करके बाढ़ की धरती को सद्गुरु महाप्रज्ञमय बना दिया है। साधुशरण सिंह सुमन जैसा गुरु का दिवाना मैंने नहीं देखा। मैंने उन पर एक गीत भी लिखा है। आज वे गांव-गांव, गली-गली में आपका संदेश लेकर जा रहे हैं। हे सदगुरु महाप्रज्ञजी! आपका आशीर्वाद ऐसे सैकड़ों-हजारों कार्यकर्ताओं को मिले। आपका हर केन्द्र फले फूले। गुरुदेव मैं इसी तरह एक सौ वर्ष जीना चाहता हूँ। महावीर और कबीर जी को फलते-फूलते देखना चाहता हूँ। महाप्रज्ञजी का केन्द्र गांव-गांव में चले यह कामना रखता हूँ। गुरुदेव! मैं स्वयं सुमनजी के साथ आज भी पिछले 15 वर्षों से हूँ। परन्तु अपनी बहू में बदलाव देखा तो आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूँ। क्योंकि सुमनजी कहते हैं मेरे तो महाप्रज्ञ रूपी राम ही एक सहारा हैं।

मैं आपके जीवन चरित्र पर लोकभाषा मगही में काव्य लिखना शुरू किया है। सुमनजी ने कहा कि आप लोक भाषा में गुरुदेव पर लिखिए। गुरुदेव महाप्रज्ञजी का काव्य आपको अमर कर देगा। क्योंकि उनका अहिंसा प्रशिक्षण का काम जहाँ-जहाँ होगा वहाँ अमन चैन आ जायेगा। मुझे आपके आशीर्वाद की आशा है। बार-बार बंदगी।

महंत लक्ष्मीदास (काशी)

● अणुव्रत पाक्षिक का 16-31 जनवरी 2010 का अंक पढ़ा। संपादकीय जनतंत्र की मर्यादा का सवाल जनतंत्र का तात्पर्य जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता का शासन आज के परिवेश में लागू नहीं होता है। व्यवस्था में गड़बड़ी व मर्यादा का उल्लंघन हो रहा है। राजनेताओं या जनप्रतिनिधियों को थोड़ी बहुत शर्म आती तो ऐसा नहीं करते। उन्होंने तो सारी हदें पार कर ली हैं। संपादक महोदय ने जनहित में खरी व सटीक बात लिखी है। उक्त सारी घटनाएं जनतंत्र के विपरीत हैं। ये जनता के सेवक नहीं हैं। ये रक्षक नहीं हैं भक्षक हैं। ये जनप्रतिनिधि राष्ट्र को किधर ले जा रहे हैं। यह भारत के नागरिकों के लिए सोचने का विषय है। इसके वास्तविक जिम्मेदार राजनैतिक दल व मतदाता हैं। जनता जिनको चुनना चाहती है राजनैतिक दल उनको टिकट नहीं देते और जनता जिनको चुनना नहीं चाहती राजनैतिक दल उनको ही दबाव व भ्रष्टाचार के बल पर टिकट देती है और इस तरह से चरित्र संपन्न व्यक्ति पीछे रह जाते हैं यथा प्रजा तथा राजा आचार्य तुलसी का आलेख आज के परिवेश में राजनीति में आने वालों का मापदंड होना चाहिए। जिससे जनतंत्र की रक्षा हो सके।

भैरूलाल नामा, बालोतरा

भ्रष्टाचार उन्मूलन पर महत्वपूर्ण संगोष्ठी

नई दिल्ली, 20 मार्च। अणुव्रत आंदोलन के केन्द्रीय स्थल अणुव्रत भवन नई दिल्ली में अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत लेखक मंच के अंतर्गत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के स्वस्थ एवं नैतिक लेखन से जुड़े वरिष्ठ साहित्यकारों एवं पत्रकारों की एक महत्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी में निम्न साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने भाग लिया

1. डॉ. श्यामसिंह 'शशि' (पद्मश्री)
2. श्री वीरेन्द्र प्रभाकर (पद्मश्री)
3. सुश्री वर्षादास
4. श्री रजनीकांत शुक्ल
5. श्री भगवानदास ऐजाज
6. श्री सुखबीर सिंह सैनी
7. श्री महंत तिवारी
8. श्री रमेश शर्मा
9. श्री बाबूलाल गोलछा
10. डॉ. बी.एन. पांडेय
11. श्री अलाउद्दीन शेख
12. श्री ऋषि ठाकुर
13. स्वामी जनार्दन देव
14. श्री रजनीश कुमार
15. श्री कृष्ण कुमार वर्मा
16. श्री आसिफ कमाल
17. श्री तपराज दत्त
18. श्री महेन्द्र शर्मा
19. भू-त्यागी
20. डॉ. हरिसिंह पाल
21. श्री लक्ष्मण राव
22. श्री एल.आर भारती
23. श्री सतेन्द्र भारद्वाज
24. श्री सत्यपाल धामा
25. श्रीमती पुष्पा निगम

संगोष्ठी का विषय था **''वक्त है शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार से लड़ने का''**। संगोष्ठी की अध्यक्षता गांधी संग्रहालय राजघाट की निदेशक सुश्री वर्षादास ने की।

संगोष्ठी में देश के वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह 'शशि' तथा चित्रकला संगम के मंत्री पद्मश्री वीरेन्द्र प्रभाकर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर डॉ. शशि ने अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित अणुव्रत पाक्षिक के **''भ्रष्टाचार-शिष्टाचार''** विशेषांक का लोकार्पण किया।

आकंठ भ्रष्टाचार में डूबते जा रहे समाज को जागरूक करने की दिशा में सभी साहित्यकारों का मत रहा कि भ्रष्टाचार को मिटाने की दिशा में सबसे पहले स्वयं को प्रतिज्ञाबद्ध होना पड़ेगा। क्योंकि **''हम खिलाते हैं इसलिए वो खाते हैं।''** अतः अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के कथन **''व्यक्ति सुधार से ही समाज सुधार संभव है''** को जीवन में उतारना होगा। उपस्थित साहित्यकारों ने अणुव्रत आचार संहिता को स्वीकारते हुए कहा **''हम न रिश्वत लेंगे और न ही देंगे।** जीवन के झूठे मानदंडों और झूठी मान्यताओं को त्यागना होगा। डॉ. शशि ने तो यहां तक कहा कि भ्रष्टाचारियों पर दंड की प्रक्रिया और सख्त की जानी चाहिए। महाराष्ट्र से पधारे अन्ना हजारे के सचिव अलाउद्दीन शेख और ऋषि ठाकुर ने भी अपने विचार रखे। साथ ही गांधी समाधि राजघाट के सचिव रजनीश कुमार, तरंग दर्शन के संपादक भू-त्यागी, आकशवाणी के डॉ. हरिसिंह पाल ने भी अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

86 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी डॉ. बी.एन. पाण्डेय ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया और अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का सफल संयोजन बाल साहित्यकार रजनीकांत शुक्ल ने किया। कार्यक्रम की आयोजना में बाबूलाल गोलछा, कृष्णकुमार वर्मा एवं अणुव्रत महासमिति कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

-एल.आर. भारती

भ्रष्टाचार मुक्ति अभियान

अणुव्रत पाक्षिक के भ्रष्टाचार-शिष्टाचार अंक का लोकार्पण

श्रीडूंगरगढ़ 15 मार्च। अणुव्रत स्थापना दिवस के संदर्भ में भ्रष्टाचार-शिष्टाचार संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा ऐसी चर्चा चल रही है जो असंभव सी है। भ्रष्टाचार को मिटाने की बात शेषनाग की मणि लाने के समान है। आज 'भ्रष्टाचार' शब्द को समाप्त कर इसके स्थान पर 'शिष्टाचार' शब्द का प्रयोग होना चाहिए। जब हमारी अपेक्षाएँ और आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं तो फिर भ्रष्टाचार तो अवश्यंभावी है। लाभ और लोभ ये दो मुख्य कारण हैं भ्रष्टाचार के। लाभ और लोभ के बीच जब तक चिन्तन रहेगा भ्रष्टाचार नहीं मिटेगा।

भ्रष्टाचार को मिटाने के सूत्रों की चर्चा करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा भ्रष्टाचार मिटाने के दो सूत्र हैं दंड शक्ति और स्वभाव परिवर्तन। भ्रष्टाचार मिटाने वाले ही जब भ्रष्टाचार में लिप्त हैं तो दंड कौन देगा ? स्वभाव परिवर्तन या चेतना का रूपांतरण का कार्य धर्माचार्यों का है। जब तक धार्मिक एवं सामाजिक नेतृत्व सफल नहीं होता भ्रष्टाचार नहीं मिट सकता। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए इसके मूल कारणों पर विचार करने के साथ ही सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव करना होगा तभी व्यक्ति बदल सकता है। आज समाज में बड़ा बनने की अदम्य लालसा, अर्थ कमाने की होड़, दहेज प्रथा, सामाजिक कुप्रथाएँ, महँगी शिक्षा का बोलबाला है। समाज की इन जर्जर व्यवस्थाओं को बदल कर ही स्वस्थ व्यक्ति और समाज का निर्माण संभव है। बड़े से बड़ा आदमी संयमित बने, वैवाहिक अवसरों पर प्रदर्शन-आडम्बर एवं फिजूलखर्ची नहीं करें तथा दो-पाँच हजार की थाली न परोसें तभी भ्रष्टाचार पर लगाम संभव है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने उद्‌बोधन में कहा वर्तमान अर्थनीति और अर्थशास्त्रीय अवधारणा से अमीर अधिक अमीर हो रहा है और गरीब अधिक गरीब हो रहा है। यदि इसमें सच्चाई है तो इस पर गंभीर चिंतन होना चाहिये और यह सच्चाई नहीं है तो निराकरण होना चाहिये। भ्रष्टाचार के विरुद्ध हमारा आंदोलन समीक्षापूर्वक और युक्तियुक्त हो। समस्या को पकड़े और उसके मूल पर चोट करे नया मोड़ आचार संहिता के द्वारा। इससे पचास प्रतिशत भ्रष्टाचार स्वतः ही समाप्त हो जायेगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने अपने उद्‌बोधन में कहा अणुव्रत स्थापना दिवस के संदर्भ में भ्रष्टाचार की चर्चा हो रही है। भ्रष्टाचार किसे कहा जाये? इसकी परिभाषा सुनिश्चित होनी चाहिये। अभाव, अज्ञान, आवेश और लोभ भ्रष्टाचार के मुख्य कारण है। व्यक्ति का अर्थ के प्रति आकर्षण होता है क्योंकि जीवन अर्थ पर निर्भर है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ चाहिये और यह आवश्यक भी है लेकिन ऐश्वर्य के लिये जैसे तैसे अर्थ प्राप्त करना गलत है। यदि व्यक्ति का त्याग-संयम भाव जाग जाता है तो भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकता है। हमारी अर्थ उपार्जन की दृष्टि गौण हो तथा सेवा भावना प्रमुख रहे तो भ्रष्टाचार को मिटाया जा सकता है।

अणुव्रत पाक्षिक के संपादक एवं अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अणुव्रत पाक्षिक का भ्रष्टाचार-शिष्टाचार विशेषांक श्रीचरणों में समर्पित करते हुए कहा मोटापा, प्रदूषण, नशा और भ्रष्टाचार इन चार महामारियों से हमारा देश ग्रसित है। मोटापे की बीमारी ने हमारी बाल पीढ़ी के स्वास्थ्य को लील लिया है, बढ़ते प्रदूषण से धरती माँ जल उठी है, नशे की बढ़ती प्रवृत्ति ने देश की युवा पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है तो सर्वव्यापी होते भ्रष्टाचार ने देश के विकासक्रम को अवरुद्ध कर दिया है। बिना लिये-दिये आज कोई काम नहीं होता है। जनतंत्र की रक्षा का भार जिन हाथों में है वे स्वयं खरीदे गये नमक का मूल्य नहीं अदा कर रहे हैं इसीलिये सरकारी कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी दोनों हाथों से जनता को लूट रहे हैं। समाज में बढ़ते प्रदर्शन-आडम्बर और झूठी शान-शौकत पर प्रतिबंध लगा कर हम भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अपने वक्तव्य में कह्न अणुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक भ्रष्टाचार के संदर्भ में है। भ्रष्टाचार के किस बिन्दु पर हम चोट करें यह पहले सुनिश्चित करें। अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित नया प्रचारात्मक साहित्य हमारे आंदोलनात्मक स्वरूप को निखार रहा है। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम.रांका, महामंत्री विजयराज सुराणा, उपमंत्री डॉ. बी. एन.पाण्डेय, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोल्छा, राज. प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने क्रमशः आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल एवं साध्वी राजीमती को अणुव्रत का भ्रष्टाचार-शिष्टाचार विशेषांक भेंट किया। अणुव्रत अनुशास्ता ने विशेषांक एवं अन्य साहित्य को लोकार्पित किया। अध्यक्ष निर्मल एम.रांका ने महासमिति की गतिविधियों की समीक्षा प्रस्तुत की। भ्रष्टाचार-शिष्टाचार संगोष्ठी का संयोजन अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने दिया।

एस. रघुनाथन को अणुव्रत पुरस्कार–2008

भ्रष्टाचार के विरोध में बुलंद हो अणुव्रत का स्वर : आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूँगरगढ़, 14 मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि अणुव्रत के जन्म दाता आचार्य तुलसी की जन्म शताब्दी सामने है। इन चार वर्षों में अणुव्रत के स्वर को इतना बुलंद करना है कि भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को स्वयं की गलती का अहसास हो जाये और वे लोग भ्रष्टाचार को छोड़ जीवन में नैतिकता को प्रमुखता देने लग जाएं। आचार्यश्री कस्बे के मालू भवन में जय तुलसी फाऊंडेशन के द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला प्रतिष्ठित अणुव्रत पुरस्कार समर्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। इस समारोह में दिल्ली सरकार के पूर्व मुख्य सचिव एस रघुनाथन को अणुव्रत पुरस्कार 2008 देकर जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध ट्रस्टी सुरेन्द्र कुमार दूगड़, पूर्व प्रबंध ट्रस्टी बनेचंद मालू विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी, पूर्व संयोजक मांगीलाल सेठिया, अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल रांका ने सम्मानित किया। एस. रघुनाथन को पुरस्कार स्वरुप 1 लाख 51 हजार रुपये सममूल्य का चैक, प्रशास्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत, जीवन विज्ञान और नैतिकता के क्षेत्र में एस. रघुनाथन द्वारा किये गये कार्यों की सराहना करते हुए कहा किसी व्यक्ति के बारे में कुछ कहना बहुत कठिन काम है। वस्तु के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। पर व्यक्ति चेनावान प्राणी है, उसमें बदलाव आते रहते हैं। इसलिए उसके बारे में कहना कठिन है। परन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके बारे में कह सकते हैं। उन कुछेक व्यक्तियों में एक नाम है एस. रघुनाथन का। इन्होने जीवन को निरंतर एक जैसा जीया और जीवन विज्ञान को राजकीय क्षेत्र में सर्वप्रथम जोड़ने का काम किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि रघुनाथन साधक व्यक्ति है। स्वयं प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करते हैं। इसीलिए दिल्ली की मुख्यमंत्री के इतने प्रिय बन गये। इसके पीछे केवल इनका बौद्धिक पक्ष ही नहीं है साधना का पक्ष भी है। उन्होंने सुधामही रघुनाथन द्वारा अपने साहित्य को व्यापक बनाने में योगदान देने की सराहना भी की।

आचार्यश्री ने कहा जो व्यक्ति जीवन में नैतिकता को प्रमुखता देता है। वह माने या न माने परन्तु जन्मजात वह अणुव्रती होता है। उन्होंने अणुव्रत से जुड़े कार्यकर्ताओं को अणुव्रत के कुशल प्रवक्ता तैयार करने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो भ्रष्टाचार के माहौल में अभ्रष्टाचार का कार्य करता है वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। एस. रघुनाथन ने अपने जीवन में नैतिकता को स्थान दिया। इनके जीवन में अणुव्रत का प्रभाव है वह प्रभाव औरों पर भी पड़े ऐसा प्रयास होना चाहिए। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि मनुष्य देखता है और सीखता है। आज मनुष्य क्या देख रहा है ? उपभोगतावादि संस्कृति हावी हो रही है और अमेरिकन जीवन शैली अपनाने को उत्सुक हो रहा है। अणुव्रत की चर्चा संयम और नैतिकता की चर्चा है। जब तक संयम की बात सार्थक नहीं होगी तब तक मनुष्य जाति पर मंडरा रहे खतरे का समाधान नहीं होगा। उन्होने कहा कि चयन समिति के सामने ऐसा व्यक्ति खोजना कठिन हो रहा था जो संयम के साथ जीता हो और पुरस्कार की अर्हता रखता हो। ऐसी स्थिति में एस.रघुनाथन जैसा व्यक्ति मिला जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि एस रघुनाथन के रग रग में अणुव्रत बोल रहा है। ऐसे हाथों में पुरस्कार पहुचंकर स्वयं पुरस्कार पुरस्कृत होता है। कार्यक्रम में विशेष तौर पर उपस्थित बीकानेर के सांसद अर्जुनलाल मेघवाल ने अणुव्रत के संस्कारों एवं आचार्य तुलसी से बचपन से ही जुड़े होने की चर्चा करते हुए कहा कि अणुव्रत जीवन को उन्नत बनाया है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने एस. रघुनाथन को अणुव्रत पुरस्कार दिये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। विकास परिषद् के पूर्व संयोजक मांगीलाल सेठिया ने रघुनाथन का परिचय प्रस्तुत किया। जय तुलसी फाऊंडेशन के प्रबंध न्यासी सुरेन्द्र कुमार दूगड़ ने स्वागत भाषण दिया। पूर्व प्रबंध न्यासी एवं प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। एस. रघुनाथन की धर्मपत्नि एवं जैन विश्व भारती की पूर्व कुलपति सुधामहि रघुनाथन ने आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य को अपने जीवन का निर्माण करने वाला बताया।

एस. रघुनाथन ने पुरस्कार स्वीकृति भाषण में आचार्य महाप्रज्ञ एवं जय तुलसी फाऊंडेशन का आभार जताते हुए अणुव्रत, जीवन विज्ञान से जुड़ने के घटनाक्रम पर प्रकाश डाला। विकास परिषद् के संयोजक लालचंद सिंघी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन विकास परिषद् के महामंत्री डालमचंद बैद ने किया। इस मौके पर आगंतुक अतिथियों का साहित्य के द्वारा सम्मान आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति की तरफ से बनेचंद मालू, लालचंद सिंघी, कन्हैयालाल छाजेड़, धनराज पुगलिया, विजयसिंह पारख, रिद्धकरण लूणिया, भीकमचंद पुगलिया, तुलसीराम चौरड़िया, भंवरलाल राखेचा, हेमराज श्यामसुखा, सुन्दरलाल सिंघी, विजयराज सेठिया, के.एल. जैन, पवन सेठिया व सुरेन्द्र चूरा आदि ने किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित एस.रघुनाथन को अणुव्रत प्रवक्ता का संबोधन प्रदान किया।

साम्प्रदायिक बंधनों से मुक्त धर्म है अणुव्रत : आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूँगरगढ़, 13 मार्च। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जब आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन शुरु किया और इसकी आचार संहिता जनता के सामने आई तो लोगों ने इसका बहुत स्वागत किया। इसका कारण था कि अणुव्रत के रुप में धर्म का नया रुप सामने आया था। यह सम्प्रदाय के बंधनों से पूर्वतया मुक्त धर्म है, इसीलिए सभी धर्मों में प्रतिनिधियों ने इसे स्वीकार किया और अपना धर्म माना। जहाँ व्यवहार और आचार शुद्धि की बात होती है वहाँ किसी प्रकार का प्रतिवाद नहीं होता है। उन्होंने दैनिक प्रवचन के दौरान अणुव्रत शिक्षक संसद की संगोष्ठि में संपूर्ण देश से भाग लेने पहुंचे शिक्षकों एवं संसद के कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आजादी की लड़ाई में वकिलों का महत्त्वपूर्ण योग रहा। अब अनैतिकता को नष्ट करने की दिशा में शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। जब अणुव्रत के कार्यकर्ता राजनीति, अपसर वर्ग और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को जनता के सामने उजागर करेंगे तो मीडिया और जनता भी अणुव्रत के साथ जुड़ जायेगी और सत्ता के मोह में बैठे लोगों को भी अहसास होगा कि अणुव्रत आन्दोलन किस तरह से 60 वर्षों के बाद भी सक्रियता लिए हुए मानव उत्थान का कार्य कर रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अमेरिका आदि देशों की महामंदी के कारण दयनीय दशा के कारणों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विकसित देशों में लोग खूब लोन लेते जाते हैं और खूब उपभोग करते हैं। इसी कारण वहाँ के बैंक दिवालिया घोषित हो गये और देश महामंदी की चपेट में आ गये। अणुव्रत के एक संदेश संयमः खलु जीवनम् का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अनावश्यक उपभोग मत करो, अनावश्यक प्रदर्शन मत करो, यह एक बात समझ आ जाये तो हिन्दूस्तान कोई भी आदमी दिवालिया नहीं होगा ओर देश भी कभी महामंदी की चपेट में नहीं आयेगा। पदार्थ कम और उपभोग ज्यादा यही स्थिति रही तो आने वाले समय में देश कठिनाईयों में पड़ सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत से जुड़े कार्यकर्ताओं को बड़ा लक्ष्य बनाकर व्यापक कार्य करने का इंगित किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि शिक्षक, विद्यार्थी वर्ग को अपने जीवन व्यवहार और वाणी से शिष्टता का प्रशिक्षण दें और जीवन में आने वाली परिस्थितियों को सहन करने का अभ्यास करवायें। उन्होंने शिक्षक के लिए मन में करुणा भाव रखना भी जरुरी बताया। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश राज्य संयोजक भजनलाल महोविया, महाराष्ट्र राज्य संयोजक एन.आर. ठोम्बरे, उत्तराचंल संयोजक नरेन्द्र कुमार राय, झारखंड राज्य संयोजक बी. एस. पाण्डेय, राजस्थान राज्य संयोजक गुलाब शर्मा, महाराष्ट्र राज्य संयोजक अरविंद जोहरापुरकर एन.सी.ई.आर.टी के पूर्व प्रोफेसर डॉ.डी. आर श्रीमाली ने अपने राज्यों में होने वाले कार्यो की अवगति दी। साध्वी अणिमाश्री ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन धर्मचंद जैन अन्जाना ने किया।

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा चल रही राष्ट्रीय संगोष्ठि में अणुव्रत आन्दोलन को समर्पित काव्य संध्या का अयोजन मुनि मोहजीतकुमार के सान्निध्य में किया गया। उपरले तेरापंथ भवन में चली इस काव्य संध्या में मुनि श्रेयांस कुमार, मुनि हिमांशु कुमार, मुनि महावीर कुमार ने काव्य पाठ कर हर्ष विभोर कर दिया। विहार के चर्चित गीतकार हेमन्त कुमार ने ''बंजारा है आदमी'' और ''व्याकुलता मन को कौन समझाये'' की प्रस्तुति पर श्रोताओं ने खूब दाद दी। मुम्बई की कवयित्री ललिता जोगड, सुनील नाहर, जबलपुर की श्रुतिकान्त दूबे ''विजन'' बोकारो के परमेश्वर भारती, धर्मचंद जैन ''अन्जाना' भगवानलाल बंशीलाल ने कविता पाठ कर काव्य संध्या को पखान चढ़ाया। मुनि मोहजीत कुमार ने राष्ट्र चेतना, पर्यावरण संरक्षण, अणुव्रत आन्दोलन विषयक मुक्तक, गीत, छायावादी कविताओं का पाठ कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे पूर्व अणुव्रत शिक्षक संसद के परामर्शक एवं साहित्यकार डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने सबका स्वागत किया। काव्य संध्या का संचालन प्रो. साधुशरण सुमन ने किया।

दक्षिण भारत में अणुव्रत की गूंज

कोयम्बटूर, 9 मार्च। अणुव्रत समिति कोयम्बटूर के तत्वावधान में 4 से 8 मार्च 2010 तक दक्षिणांचल में **''नैतिक पुस्तक मेला''** का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 30 पुस्तक विक्रेता एवं संस्थानों ने भाग लिया। दो मंजिलों पर विभाजित इस मेले में निम्न संस्थाओं ने भाग लिया 1. रामकृष्ण मिशन, 2. चिन्मया मिशन, 3. भारतीय विद्या भवन, 4. इसा योगा सेन्टर, 5. ब्रह्मकुमारी संस्थान, 6. हिगीन बोधममस, 7. अक्षर धाम, 8. जे कृष्ण मूर्ति फाउंडेशन, 9. मिन्डु, 10. अवनाशी लिंगम विश्वविद्यालय, 11. भारतीयार विश्वविद्यालय, 12. ओशो, 13. गीता प्रेस, 14. वेदान्तरी महर्षि आश्रम, 15. इस्लामिक फाउंडेशन, 16. अणुव्रत जीवन विज्ञान-प्रेक्षाध्यान 17. युवादृष्टि/जैन भारती/अणुव्रत महासमिति, 18. अब्दुल कलाम साहित्य के अलावा कुछ छोटे पुस्तक विक्रेता भी थे।

दिनांक 4 मार्च 2010 को क्षेत्र के विख्यात कृष्णराज वानव रायर, अध्यक्ष भारतीय विद्या भवन ने उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अवनाशी लिंगम के भूतपूर्व चांसलर ने की। विशेष अतिथि प्यारेलाल पीतलिया थे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गणेशन ने मेले पर प्रकाश डाला। प्रमुख अतिथि अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका थे। प्रो. डॉ. मार्कान्डसु ने अपने विचार रखे। उपस्थिति अच्छी रही। प्यारेलाल पीतलिया ने मेले हेतु 50.000 रु. दिये। संचालन मधु बांठिया, ज्योत्सना रांका व सुश्री पटेल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अणुव्रत समिति के मंत्री नरेन्द्र रांका ने किया। इसी क्रम में 7 मार्च को इरोड से समागत समणीजी के सान्निध्य में कपिल सिंघवी की अध्यक्षता में कार्यक्रम रखा गया। इसमें 75 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम की योजना में संपतकुमार, कोषाध्यक्ष प्रेमचंद सुराणा आदि का सहयोग रहा। 8 मार्च को समापन कार्यक्रम रखा गया। इसमें माला कातरेला, कामिनी, विनो अरण, गुलाब मेहता ने विचार रखे।

अणुव्रत प्रतिनिधि मंडल तेजपुर में

तेजपुर, 22 फरवरी। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट, संयुक्त सचिव बाबूलाल गोलछा तथा राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संपत शामसुखा संगठन यात्रा के क्रम में तेजपुर पधार साध्वी त्रिशलाकुमारी से मार्गदर्शन लिया। इस अवसर पर साध्वीश्री के सान्निध्य में अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन रखा गया। संगोष्ठी में उगमचंद बैद, पंकज धारीवाल, महावीर धारीवाल, किशनलाल बोथरा ने अणुव्रत गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष उगमचंद बैद, महिला मंडल की अध्यक्ष सुशीला दूगड़, ताराचंद बैद, रतनलाल डोसी एवं महावीर धारीवाल ने स्वागत किया। अमृत सांसद दिलीप दूगड़ ने मंच का संचालन किया। अतिथियों ने यात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर अणुव्रत आंदोलन को गति देने के क्रम में यहाँ **अणुव्रत समिति तेजपुर** का गठन किया गया। अध्यक्ष पद के लिए किशनलाल बोथरा को सर्वसम्मति से चुना गया।

साध्वी त्रिशलाकुमारी ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन मानव मात्र को महान देन है। अणुव्रत उपासना नहीं, जीवन को नैतिक बनाने की प्रयोगशाला है। समणी सत्यप्रज्ञा एवं समणी रोहिणीप्रज्ञा ने पूज्यवरों के संदेश का वाचन किया। साध्वी कल्पयशा ने भी अपने विचार रखे।

जालना में अणुव्रत परीक्षाएं

जालना। अणुव्रत समिति एवं महिला मंडल जालना द्वारा पिछले 33 वर्षों से निरंतर अणुव्रत परीक्षाओं का क्रम 'अणुव्रत सेवी' रतनीदेवी सेठिया के नेतृत्व में चलाया जा रहा है। इस वर्ष जालना के सात विद्यालयों में अणुव्रत परीक्षा का संचालन हो रहा है। ये परीक्षाएं राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित हैं। यह नैतिकता की परीक्षा है, जिसकी आज महती आवश्यकता है। बच्चों को चरित्रवान बनाने तथा संस्कारित करने के लिए बच्चों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता और असहिष्णुता आज की विकट समस्या है। इन समस्याओं का समाधान नैतिक और धार्मिक परीक्षाओं से ही मिल सकता है।

अणुव्रत विज्ञ, अणुव्रत विशारद में छोटे-छोटे उदाहरणों द्वारा जो अमूल्य शिक्षा दी गयी है वे बच्चों के जीवन में नैतिकता के सद्संस्कार, ईमानदारी, सदाचार, संयम जैसे गुणों का बीजारोपण होता है। 25 फरवरी 2010 को संपन्न हुई परीक्षा में दानकुंवर कन्या विद्यालय से 200 कन्याओं ने भाग लिया। जैन विद्यालय से 103 विद्यार्थियों ने सी.टी.एम. के गुजराती विद्यालय से 91 विद्यार्थी तथा एम.जी. नाथाणी विद्यालय से इस वर्ष 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस परीक्षा को सम्पन्न कराने में शिल्पा, दीपा, श्रीपत, छाया, कावले, तवले शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ ही कमला सेठिया, उर्मिला पिपाड़ा, नीरज सेठिया, विकास बोथरा, नेहा सेठिया, पवन सेठिया, सुभाष विनायकिया का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत प्रतिनिधि मंडल गुवाहाटी में

गुवाहाटी, 21 फरवरी। अणुव्रत महासमिति दिल्ली के तत्वावधान में सभा भवन गोहाटी में सायं 5 बजे अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, उपमंत्री डॉ. बी. एन. पांडेय, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा के निर्देशन में हुआ। उपस्थित प्रतिनिधियों ने क्रमशः अणुव्रत आंदोलन की पृष्ठभूमि पर महत्त्वपूर्ण विचार रखे।

इस अवसर पर गुवाहाटी में अणुव्रत कार्यों में तेजस्विता लाने के क्रम में अणुव्रत समिति के गठन का निर्णय लिया गया। उपस्थित कार्यकर्ताओं द्वारा सर्वसम्मति से निर्मल चौरड़िया को आगामी दो वर्ष हेतु अध्यक्ष चुना गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं दिल्ली से पधारे अणुव्रत महासमिति के प्रतिनिधियों ने समणी सत्यप्रज्ञा एवं रोहिणीप्रज्ञा से आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम में अभयराज डागा, सुनील कुमार सेठिया लक्ष्मीपत घोड़ावत, मूलचंद सुराणा, सुभाष बोथरा, कमल सिंह सुराणा, अशोक मालू, अशोक सुराणा, प्रकाश बरड़िया, सौरव बोथरा, विकास गुजरानी, निर्मल चोरड़िया, निर्मल सामसुखा, निर्मल कोठारी, विद्या कुंडलिया, राजू बरड़िया, सरोज सुराणा, मनोज भंसाली, मुन्नी देवी डोसी, बिमल नाहटा, राजेन्द्र कुमार आंचलिया, बजरंग लाल बैद, महेन्द्र सेठिया, बाबूलाल बुच्चा एवं राकेश जैन उपस्थित थे।

कार्यक्रम की व्यवस्था में गोहाटी सभा के अध्यक्ष अभयराज डागा, मंत्री सुनील कुमार सेठिया का सराहनीय श्रम रहा।

पहले आओ : पहले पाओ

नई दिल्ली। आदर्श साहित्य संघ दिल्ली द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक विज्ञप्ति संघ के गजट के रूप में जानी जाती है। यह केन्द्रीय गतिविधियों का साप्ताहिक मुखपत्र है। आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में संपन्न होने वाले सभी कार्यक्रमों का प्रतिदिन का विवरण, संघीय आदेश-निर्देश, सूचनाएं इत्यादि को लेकर विज्ञप्ति हर सप्ताह अपने पाठकों तक पहुँचती है। विज्ञप्ति हर परिवार में पहुँचे, इस उद्देश्य से आदर्श साहित्य संघ ने सीमित समय के लिए (2500 नये सदस्य बनाने हेतु) आजीवन सदस्यता अभियान शुरू किया है। यह अभियान मर्यादा महोत्सव से प्रारंभ हो गया है। अगर आप विज्ञप्ति के सदस्य नहीं हैं अथवा वार्षिक सदस्य हैं तो मात्र 1100 रुपये देकर आजीवन सदस्य (पंद्रह वर्ष हेतु) बन सकते हैं। आजीवन सदस्यता शुल्क आदर्श साहित्य संघ के बैंक खाता संख्या 0133000100368359 (पंजाब नेशनल बैंक) में जमा कर रसीद की फोटो कॉपी अपने नाम और पूर्ण पते (पिनकोड सहित) के साथ हमारे शिविर कार्यालय अथवा केन्द्रीय कार्यालय अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 को भिजवाएं।

विनम्रः

बच्छराज कठोतिया — मंत्री

नोरतनमल दूगड़ — अध्यक्ष

भ्रष्टाचार विरोधी रैली

श्रीडूंगरगढ़ 14 मार्च। अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती एवं अणुव्रत समितियों के कार्यकर्ताओं ने भ्रष्टाचार मुक्ति अभियान के तहत विशाल भ्रष्टाचार विरोध रैली का आयोजन किया। अणुव्रत विश्व भारती की प्रवृत्ति अणुव्रत शिक्षक संसद के एक सौ से अधिक कार्यकर्ता इस रैली में सम्मिलित हुए। अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़, छापर, बीकानेर, लाडनूँ एवं राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के एक सौ से अधिक कार्यकर्ताओं से युक्त रैली श्रीडूंगरगढ़ के विभिन्न मार्गों का परिभ्रमण करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता की सन्निधि में पहुँची जहाँ अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने रैली संभागियों को उद्‌बोधित किया।

भ्रष्टाचार विरोध रैली में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम.रांका, महामंत्री विजयराज सुराणा, संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट, संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा, उपमंत्री डॉ. बी. एन. पांडेय, कोषाध्यक्ष रतनलाल सुराणा, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, महामंत्री मनोहरलाल बापना अन्य कार्यकर्ता, अणुव्रत शिक्षक संसद के प्रभारी भीकमचंद नखत, डॉ. हीरालाल श्रीमाली, डॉ धर्मेन्द्र आचार्य, धर्मचंद जैन, मदनलाल कावड़िया, प्रो. सुमन सहित सैकड़ों व्यक्ति सहभागी बने। अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ के अध्यक्ष एवं मंत्री ने रैली का मार्ग दर्शन किया। रैली के प्रारंभ में साध्वी राजीमती ने मंगलपाठ सुनाकर रैली को आशीर्वाद दिया।

नशामुक्ति-भ्रष्टाचार मिटाओ रैली

सरदारशहर 5 मार्च। 62वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष में अणुव्रत समिति सरदारशहर के तत्वावधान में नशामुक्ति एवं भ्रष्टाचार मिटाओ रैली का आयोजन किया गया। प्रातः स्थानीय ताल मैदान से प्रारंभ हुई इस रैली में शामिल विद्यार्थी अपने हाथों में नारे लिखी तख्तियां एवं बैनर लिये हुए मुख्य बाजार से नारे लगाते हुए समवसरण पहुँचे। वहाँ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी की अध्यक्षता व साध्वी मानकुमारी के सान्निध्य में सभा का आयोजन हुआ। सभा में भ्रष्टाचार व नशीले पदार्थों के सेवन पर गहरी चिंता प्रकट की गयी। साथ ही इन बुराइयों के विरुद्ध जनजागरण चलाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

साध्वी मानकुमारी ने सभा को संबोधित करते हुए अणुव्रत आंदोलन एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन पर विचार रखे। साध्वी रामकुमारी, साध्वी कुशलप्रज्ञा, साध्वी हिमश्री, साध्वी विनयप्रभा, साध्वी रतनश्री ने प्रेरक विचार रखे। शीला संचेती, सम्पतमल सुराणा सहित चुरू जिला अणुव्रत समिति के संरक्षक डालचंद चिंडालिया ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सपना लूणिया ने किया।

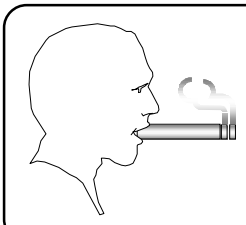

आपका मुँह
ऐश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

आसपास के परिवेश से भ्रष्टाचार उखाड़ फेंकें

लाडनूं 1 मार्च। यों तो प्रत्येक मनुष्य को अपने आचरण एवं व्यवहार में प्रामाणिक होना चाहिए। कोशिश होनी चाहिए कि उसके आसपास के लोग भी प्रामाणिक हों किन्तु यदि उसके आसपास के लोग गलत कार्य करते हैं, मिलावट करते हैं, कम तोलते हैं, घूस लेते हैं, लोगों को ठगते हैं, देश के गुप्त दस्तावेजों को बेचते हैं तो ऐसे घृणित कार्यों को सहन नहीं करना चाहिए, इनका विरोध करना चाहिए। ये विचार अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में डाबड़ी ग्राम में आयोजित भ्रष्टाचार निवारण गोष्ठी में समिति के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने व्यक्त किये। उन्होंने ग्रामवासियों से अपील की कि वे अपने आसपास के परिवेश से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकें।

समिति के संरक्षक विजयसिंह बरमेचा ने कहा हमारा देश बड़ी तेजी से तरक्की कर रहा है। इस तरक्की से पड़ोसी देश चिंतित हैं। वे हमारे देश के विकास में बाधा उत्पन्न करने की कोशिश कर रहे हैं, किन्तु हमें उनसे खतरा नहीं है, खतरा अपनों से है जो गलत कार्य कर रहे हैं, ऐसे लोगों को हमें समझाना चाहिए। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा भ्रष्टाचार विरोधी कार्यक्रम की शुरुआत गांव से इसलिए कर रहे हैं क्योंकि गांवों के विकास के लिए नरेगा कार्यक्रम चल रहा है। कार्यक्रम में भ्रष्टाचार की बात जोरों से उठ रही है जिसे रोककर इस कल्याणकारी योजना को उपयोगी बनाना है। इस अवसर पर गांव के पूर्व सरपंच संग्रामसिंह, मानसिंह एवं गोवर्धन सिंह ने भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए कार्य करने का संकल्प लिया। संगोष्ठी अत्यधिक सफल रही। धन्यवाद ज्ञापन सीताराम टेलर ने किया।

भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ

कालांवाली 7 मार्च। 62वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष में अणुव्रत समिति कालांवाली के तत्वावधान में भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ अभियान चलाया जा रहा है। इस क्रम में समिति द्वारा अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली द्वारा प्रेषित भ्रष्टाचार विरोधी साहित्य का पुनर्मुद्रण करवाकर पूरे क्षेत्र में वितरण किया जा रहा है। समिति द्वारा पोस्टर छपवाकर जनजागृति हेतु डाक द्वारा कालांवाली से जिला सिरसा के सरकारी दफ्तरों में भेजे गये। साथ ही भ्रष्टाचार के विरोध में स्थान-स्थान पर कार्यक्रम किया जा रहा है। क्षेत्र के सभी सरकारी कार्यालयों एवं ग्रामीण अंचल में 'भ्रष्टाचार मिटाओ देश बचाओ' के पोस्टर बांटे जा रहे हैं ताकि अधिक से अधिक जन जागृति हो सके।

६२ वां अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह

सुजानगढ़। अणुव्रत समिति सुजानगढ़ के तत्वावधान में 62 वां अणुव्रत स्थापना दिवस शासनश्री मुनि हीरालाल व सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि रमेशकुमार ने कहा चरित्र मानवता का आधार है। जीवन में सबसे ज्यादा मूल्य चरित्र का होता है। चरित्र निर्माण का आंदोलन है अणुव्रत। अणुव्रत के नियमों को अपनाकर व्यक्ति, समाज व देश को चरित्र व सम्पन्न बनाया जा सकता है।

मुनिश्री ने आगे कहा हिंसा, आतंक, भय, भ्रष्टाचार व जातिवाद को दूर करने के लिए अणुव्रत के माध्यम से चरित्रवान लोगों का निर्माण करना होगा। तभी हमारा देश चरित्रवान बन सकता है। चरित्रवान व्यक्तियों का निर्माण कर हम देश से भ्रष्टाचार को खत्म कर सकते हैं।

शासनश्री मुनि हीरालाल ने अणुव्रत इतिहास की चर्चा की। मुनि विकासकुमार ने गीत के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। मुनि मेरूकुमार ने अणुव्रत द्वारा समाज व्यवस्था में परिवर्तन की बात कही। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विजय सिंह बोरड़ ने अणुव्रत के भावी कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत की। सरोज बैद ने अपनी भावना व्यक्त की। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संयोजन अणुव्रती हाजी शम्सुद्दीन 'स्नेही' ने किया। विकास अधिकारी बृजगोपाल शर्मा सहित अनेक भाई-बहिन उपस्थित थे।

सरकारी विद्यालय में अणुव्रत परीक्षा के प्रयोग

सिकंदराबाद। साध्वी सत्यप्रभा की प्रेरणा से निर्मला बैद ने सरकारी हाईस्कूल नल्लाकुट्टा में अणुव्रत परीक्षा की तैयारी की प्रेरणा दी। उन्होंने विद्यार्थियों को अणुव्रत नियमों का संकल्प करवाया। ज्ञातव्य है कि प्रतिवर्ष हैदराबाद-सिकंदराबाद की विभिन्न स्कूलों में अणुव्रत की परीक्षाएं करायी जाती हैं। निर्मला बैद ने कहा स्कूली पढ़ाई विद्यार्थी को डिग्री दे सकती है, लेकिन जीवन का चहुँमुखी निर्माण व चरित्र का निर्माण नहीं कर सकती। नकल से पास होने वाला जीवन में सफल नहीं हो सकता, अतः नकल नहीं करनी चाहिए। कार्यक्रम में शिक्षक-शिक्षिकाओं ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन स्कूल के प्राचार्य ने किया। कार्यक्रम की आयोजना में हनुमान जितेन्द्र बैद का सहयोग रहा।

चंदनमल बैद का निधन

जयपुर। वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता, राज्य के पूर्व वित्तमंत्री एवं शिक्षा मंत्री तथा अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष चंदनमल बैद (88 वर्ष) का गत दिनों जयपुर में निधन हो गया। पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनकी अन्त्येष्ठी की गयी। बैदजी पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। वे एक सच्चे अणुव्रती थे। उन्हें **''समाज भूषण''** के संबोधन से अलंकृत किया गया था। बैदजी एक आदर्श नेता, स्पष्ट वक्ता, वित्त विशेषज्ञ एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने कई बार राज्य विधानसभा में विधायक के रूप में सरदारशहर (राजस्थान) का प्रतिनिधित्व किया। उसके बाद वे तारानगर विधानसभा से विधायक रहे। कुशल प्रशासक और सच्चे अर्थों में गांधीवादी नेता थे। उनके दो पुत्र और दो पुत्रियां हैं। उनके पुत्र डॉ. सी.पी. बैद कांग्रेस के विधायक रह चुके हैं। समाज के विभिन्न वर्गों ने बैदजी को अंतिम विदाई दी। अणुव्रत परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

नैतिकता के अभाव में ही भ्रष्टाचार का विकास

फतेहपुर शेखावटी, 11 मार्च। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी के तत्वावधान में हनुमान प्रसाद धानुका आदर्श विद्या मंदिर में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान, भ्रष्टाचार कारण और निवारण विषयक सेमिनार सम्पन्न हुआ। उद्घाटनकर्ता प्रो. एच.पी. शर्मा व्याख्याता चमडिया पी.जी. कॉलेज ने कहा जहाँ नैतिकता सचरित्रता, शिक्षा होगी वहाँ भ्रष्टाचार नहीं पनप सकता। राष्ट्रीयता जीवन में कूट-कूट कर भरी हो वह देश भ्रष्टाचार में नहीं आ सकता। आचार्य रामगोपाल शास्त्री ने कहा अपरिग्रह की भावना हो तो भ्रष्टाचार से बचा जा सकता है। राजीव महला जीवन विभाग निगम विकास अधिकारी ने कहा जहाँ संतोष है, नैतिकता है वहाँ भ्रष्टाचार पनप ही नहीं सकता। महेश व्यास वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबंधक सहारा इंडिया ने कहा सभी अज्ञानता की जड़ अशिक्षा है। जहाँ अशिक्षा है वहीं भ्रष्टाचार की गंगोत्री बहती है। आज भ्रष्टाचार शिष्टाचार बनता जा रहा है। ज्योति जांगिड, मधु निर्मल और रितु जोशी ने भ्रष्टाचार के कारण और निवारण पर प्रकाश डाला। अतिथियों का सम्मान साहित्य द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृष्णकांत कलवटिया ने किया। स्वागत भाषण त्रिपुरी चंदोलिया ने किया। संचालन अहिंसा प्रशिक्षक सतीश शाण्डिल्य ने किया।

भ्रष्टाचार-उन्मूलन पोस्टर वितरण

पीतमपुरा, 7 मार्च। शासन गौरव मुनि ताराचंद एवं मुनि सुमतिकुमार के सान्निध्य में खिलोनी देवी धर्मशाला पीतमपुरा में महिला मंडल दिल्ली के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि किरण माहेश्वरी अ.भा. महिला मोर्चा, बीजेपी की अध्यक्षा तथा एम.एल.ए. का सम्मान किया गया। विशेष अतिथि निगम पार्षद रेखा गुप्ता थी। इस बहुआयामी कार्यक्रम के काव्य सम्मेलन में विभिन्न कवयित्रियों ने प्रस्तुतियां दीं। मुनि ताराचंद ने कहा बहिनों को अस्मिता के साथ ऊंची उड़ान भरनी है तो आध्यात्मिक उन्नति करते हुए अपने जीवन का धरातल सशक्त करना होगा। कार्यक्रम की सफलता में महिला मंडल दिल्ली की अध्यक्ष सुमन नाहटा एवं उनकी टीम का सराहनीय श्रम रहा।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति की सदस्या डॉ. कुसुम लूणिया ने ''भ्रष्टाचार उन्मूलन'' वाले सैकड़ों पोस्टर उपस्थित जनसमूह को वितरित किये।

राष्ट्र निर्माण में अणुव्रत की भूमिका

गाजियाबाद, 16 मार्च। भारत को सुदृढ़ बनाना है तो यहाँ से भ्रष्टाचार को भगाना ही होगा। इसमें शिक्षण संस्थाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं। विद्यार्थियों को बचपन से ही अणुव्रत की आचार संहिता से परिचित करवाया जाय तथा विद्यालयों में इसे सभी स्तरों पर लागू की जाये तो भविष्य में अच्छे नागरिक तैयार हो सकते हैं। ये विचार विद्या भारती स्कूल सूर्यनगर के महामंत्री डॉ. धनपत लूनिया ने व्यक्त किये। उक्त ''भ्रष्टाचार उन्मूलन संगोष्ठी'' में मुख्य वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने कहा राजनैतिक व्यवस्था से भ्रष्टाचार हटे, मिलावट का व्यापार घटे तथा नैतिकता बढ़े तभी राष्ट्र सुदृढ़ बन सकता है। अणुव्रत महासमिति कार्यकारिणी सदस्या डॉ. कुसुम लूणिया ने कहा स्वस्थ व्यक्ति स्वस्थ परिवार व स्वस्थ समाज से ही राष्ट्र सुदृढ़ बन सकता है। गांधीजी के सपनों का भारत बनाने तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन में अणुव्रत विशेष सहयोगी है।

स्वागत भाषण करते हुए विद्यालय की प्राचार्या मंजू त्रिवेदी ने कहा अणुव्रत राष्ट्र की नींव मजबूत कर रहा है। ऐसे मूल्यपरक कार्यक्रमों का प्रसारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए।

अणुव्रत महासमिति द्वारा निर्देशित यह कार्यक्रम विद्या भारती स्कूल सूर्यनगर के प्रांगण में दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित था। भ्रष्टाचार उन्मूलन के अनेकों विशिष्ट व्यक्तित्व तथा विद्यालय के शिक्षकों के मध्य भ्रष्टाचार उनमूलन के क्षेत्र में यह कार्यक्रम प्रभावी रहा। इस अवसर पर भ्रष्टाचार उन्मूलन के पोस्टर बांटे गये।

कैंसर परीक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर

लुधियाना। स्थानीय महिला मंडल की अध्यक्ष मंजू सिंघी की अध्यक्षता में कैंसर परीक्षण एवं प्रशिक्षण शिविर गांव मल्कपुर के गारमेन्ट्स स्कूल में रखा गया। माइनी विशेषज्ञ गीता अरोड़ा ने कैंसर रोग के कारण व निवारण के बारे में प्रशिक्षण दिया। इनसे बचने के उपाय भी बताये। शरीर के किसी भी हिस्से में यदि गांठ हो तो उसका तुरंत परीक्षण करवाएं। शिविर में 80 बच्चों का सामान्य परीक्षण कर उन्हें मुफ्त दवाइयां दी गयी। इस अवसर पर 30-35 बहनों का कैंसर परीक्षण कर उन्हें भी मुफ्त दवाइयां दी गयी। शिविर में अध्यक्ष मंजू सिंघी, मंत्री विनिता नवलखा, पुखराज चोरड़िया, कमला बैद, बिमल बरड़िया, नीलम जैन, जयंती सेठिया, उषा धारीवाल, चन्द्रा बोथरा, इन्दू सेठिया, जयश्री महणोत, जया बुच्चा, संगीता जैन, रश्मि श्यामसुखा, नीनू जैन ने भाग लिया। महिला मंडल की बहनों ने डॉ. गीता का सम्मान किया।

भ्रष्टाचार का विरोध हो

भिवानी। अणुव्रत आंदोलन के 62वें स्थापना दिवस पर स्वस्थ समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए संकल्प लिया गया कि समाज में प्रचलित ''भ्रष्टाचार का विरोध होना चाहिए''। हम खिलाते हैं इसलिए वो खाते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में ''भ्रष्टाचार तभी मिट सकता है जब व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र में संयम का विकास हो। आदमी आकांक्षा को एकदम से छोड़ नहीं सकता किन्तु उसे कम कर सकता है। पदार्थों का संग्रह कम और गलत तरीकों से धन अर्जन करने की मनोवृत्ति भी समाप्त हो तो भ्रष्टाचार पर लगाम दी जा सकती है।''

हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जैन ने कहा कि अगर राष्ट्र को बचाना है तो शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार को रोकना होगा। इस अवसर पर नागोरी गेट के बाहर हजारों लोगों में भ्रष्टाचार विरोधी पोस्टरों का वितरण कर जागरूक किया गया। लाजपतराय जैन, महावीर प्रसाद जैन, के.के. गुप्ता, प्रमोद जैन, अनिल जैन, भूपेन्द्र, धनपत सिंह जैन, जयभगवान, पदम शर्मा एवं रमेश जोशी एवं कार्यक्रम के संयोजक कुन्दनलाल गोयल उपस्थित थे। कार्यक्रम की सफलता में अणुव्रत समिति हिसार, गांधी अध्ययन केन्द्र, सर्वोदय समाज हिसार, तेरापंथी सभा हिसार, महिला मंडल हिसार, युवक परिषद हिसार का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत बोर्ड का अनावरण

अमृतसर, 13 मार्च। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि उदितकुमार के सान्निध्य में स्थानीय सभा द्वारा अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड का अनावरण किया। यह बोर्ड जलियांवाला बाग के साथ लगाया गया। मुनि सुमेरमल ने कहा अणुव्रत की आचार संहिता में समस्याओं के समाधान का रास्ता मिलता है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से मानवता की बात कही। मुनि उदितकुमार ने अणुव्रत अभियान की चर्चा की। मुनि विजयकुमार ने गीत का संगान किया। बोर्ड के अनावरण में सभाध्यक्ष मोतीलाल बैंगाणी, पूर्व अध्यक्ष हेमराज सुराणा का पूर्ण सहयोग रहा।

नैतिक जागरण अभियान

नई दिल्ली, 14 मार्च। खिलौनी देवी धर्मशाला पीतमपुरा में आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति द्वारा दिल्ली में ''नैतिक जागरण अभियान'' के अंतर्गत अणुव्रत आचार संहिता के एक बोर्ड का उद्घाटन शासन गौरव मुनि ताराचंद एवं अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में कन्हैयालाल कमल बैंगानी द्वारा किया गया।

मुनि राकेशकुमार ने दिल्ली एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही छात्र-छात्राओं की आत्महत्याओं से व्यथित होते हुए कहा अणुव्रत के नियमों का पालन करने वाला ऐसी संवेदनाओं से ग्रस्त नहीं हो सकता तथा समभाव से विपत्तियों को सहन करते हुए अपना बौद्धिक विकास कर सकता है।

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली ने दिल्ली की सभी कॉलोनियों के आर.डब्ल्यू.ए. से सम्पर्क करके वहाँ अणुव्रत के संदेश को पहुँचाने की एक वृहद योजना की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत कॉलोनी के लोगों से सम्पर्क करके वहाँ स्थायी रूप से अणुव्रत नियामवली का बोर्ड लगाया जायेगा। अणुव्रत समिति दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने नैतिक मूल्यों के विकास पर जोर देते हुए कहा कि नैतिकता और प्रामाणिकता ही हमारे समाज और देश को ऊपर उठा सकता है एवं एक स्वस्थ समाज की रचना कर सकता है।

अणुव्रत एक संजीवनी है

सिलीगुड़ी 1 मार्च। अणुव्रत प्रतिनिधि मंडल के सिलीगुड़ी प्रवास के अवसर पर समणी परमप्रज्ञा के सान्निध्य में 62वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर **''संस्कारों की धुरी है अणुव्रत''** विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रतिनिधि मंडल के सदस्य डॉ. महेन्द्र कर्णावट, निर्मल एम. रांका, बाबूलाल गोलछा, डॉ. बी.एन. पांडेय, सम्पत सामसुखा के अलावा समणी परमप्रज्ञा एवं स्थानीय कार्यकर्ता मंचासीन थे।

समारोह को संबोधित करते हुए अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा आज बच्चों से बचपन छिन रहा है। इसी तरह मां-बाप भी युवकों को बोझ से लगने लगे हैं। आचार्य तुलसी ने 62 वर्ष पहले अणुव्रत क्रांति का सूत्रपात किया, जो आज भी जारी है एवं हमें इस आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाना है। लेकिन सबसे पहले स्वयं को इसे अपनाना होगा। अणुव्रत ही एक मात्र दिशा है, जो समाज को बदल सकता है। अणुव्रत न कोई धर्म है और न ही कोई सम्प्रदाय, यह तो जीवन शैली है।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने कहा हमें संख्या नहीं प्रमाणिकता चाहिए। आज की उपस्थिति बहुत ही संतोषजनक है। सभी कार्यकर्ता अणुव्रत आचार संहिता को ग्रहण करें एवं दूसरों को भी ग्रहण करायें। अणुव्रत की आत्मा अहिंसा एवं संयम है। अणुव्रत एक संजीवनी है, इसे हर व्यक्ति के हृदय में उतारना होगा।

मुख्य अतिथि डॉ. एस.एस. अग्रवाल ने कहा स्कूल के बच्चों को भी अणुव्रत की शिक्षा जरूरी है। डॉ. बी.एन. पांडेय ने कहा अणुव्रत जीवन की दशा सुधार सकती है। इस अवसर पर कवि ओमप्रकाश पांडेय, पत्रकार पल्लव दा, डॉ. के. एल. सेठिया ने अपने विचार रखे। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने सिलीगुडी के कार्यकर्ताओं के प्रयासों की सराहना की।

समणी परमप्रज्ञा ने कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के रूप में हमें अमृत प्रदान किया है। यह अमृत जितना बांटेंगे, उतना ही बढ़ेगा। अणुव्रत से जीवन में व्यापक बदलाव लाया जा सकता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्प जीवन की दिशा बदल सकते हैं। अणुव्रत के 11 नियमों में ही विश्व की तमाम समस्याओं का समाधान निहित है। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेन्द्र घोड़ावत ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रतनलाल मालू ने किया। संयोजन करन सिंह जैन ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष हनुमान मल मालू एवं मदन मालू उपस्थित थे।

अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

लाडनूं, 16 मार्च। अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में अणुव्रत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन 29 जनवरी को केसरदेवी सी.हा.से. स्कूल में किया गया था। समिति के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के अनुसार विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार से जागृति के लिए ''भ्रष्टाचार बनाम शिष्टाचार'' का विषय रखा गया था। इस प्रतियोगिता में लाड मनोहर बाल निकेतन स्कूल की छात्रा दिव्या जैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। केसर देवी उ.मा.वि. की छात्रा निकिता जांगिड़ ने द्वितीय तथा झनकूदेवी मा.वि. की छात्रा पूजा जांगिड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। लाड मनोहर बाल निकेतन की काजल शर्मा एवं केसर देवी स्कूल के सविता निवारिया को चतुर्थ एवं पंचम स्थान प्राप्त हुए।

समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी, डॉ. राकेश मणि त्रिपाठी, आलोक खटेड़ एवं वीरेन्द्र भाटी ने निबंध उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया। इन सभी सफल प्रतियोगियों को समिति द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह में ये पुरस्कार दिये जाएंगे।

वक्त है भ्रष्टाचार से लड़ने का

अहमदाबाद, 11 मार्च। गांधीनगर राजभवन में साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में सभा कांकरिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा बनवाये गये ''वक्त है शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार से लड़ने का'' बेनर का लोकार्पण गुजरात की राज्यपाल डॉ. कमला ने किया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत के माध्यम से देश में नैतिक उत्थान का सुंदर कार्य हो रहा है।

साध्वी सुमनश्री ने कहा देश के नैतिक व चारित्रिक विकास हेतु आजादी के साथ ही आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। जो आज भी समाज में मानवीय मूल्यों की पुनप्रतिष्ठापना में महनीय कार्य कर रहा है। भ्रष्टाचार वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या है। आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में ''भ्रष्टाचार तभी मिट सकता है जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र में संयम का विकास हो। आदमी आकांक्षा को एकदम से छोड़ नहीं सकता, किन्तु उसे कम कर सकता है। पदार्थ का संग्रह कम और गलत तरीकों से धन अर्जन करने की मनोवृत्ति भी समाप्त हो तो भ्रष्टाचार पर लगाम दी जा सकती है।'' स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए संकल्प करें मैं व्यवहार ओर व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा। साध्वी सुरेखा, साध्वी मधुरलता, साध्वी मनप्रभा आदि विशेष रूप से उपस्थित थी।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने कहा यह बेनर पालनपुर, डीसा, भुज, गांधीधाम भेजे जा रहे सूरत-उधना के लिए बाबूलाल बच्छावत को प्रदान किया। आयोजन में सभा एवं सहयोगी संस्थाओं का सराहनीय सहयोग रहा।

● 1 मार्च 2010 को अणुव्रत आंदोलन के 62 वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर साध्वी कंचनप्रभा ने कहा देश की आजादी के साथ ही चारित्रिक विकास की दृष्टि से आचार्य तुलसी ने नैतिक आंदोलन ''अणुव्रत आंदोलन'' का प्रवर्तन 1 मार्च 1949 सरदारशहर में किया। अणुव्रत आंदोलन ने समाज में नैतिकता की अलख जगाई। अणुव्रत आंदोलन जहाँ व्यवसायी वर्ग से शोषण, संग्रह तथा अपमिश्रण जैसी कुरूढ़ियों से मुक्त करने की बात कहता है। साथ ही अधिकारियों से रिश्वत नहीं लेना व भ्रष्टाचार नहीं फैलाने की बात करता है। आज की महती आवश्यकता है कि अणुव्रत हमारी जीवन शैली का अंग बने।

साध्वी मंजूरेखा ने कहा आज के दिन अणुव्रत आंदोलन की नींव रखकर सम्पूर्ण विश्व चेतना में संयत व अनुशासित जीवन शैली को प्रतिष्ठित कर आने वाली समस्याओं से उबरने का एक सुंदर रास्ता प्रस्तुत किया। साध्वी उदितप्रभा, साध्वी निर्भयप्रभा तथा साध्वी चेतनाश्री ने गीत एवं भाषण के द्वारा अपने विचार व्यक्त किए।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा ने कहा कि यदि आदमी संयम से रहना सीख जाये तो सारी व्यवस्थाएं अपने आप सुधर जायेंगी। कांकरिया सभा के उपाध्यक्ष नरपत लूणिया, पुखराज धोका सूरत, डालमचंद नौलखा ने अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन गुजराज राज्य अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक दूगड़ ने किया।